भाद्र मास, कृष्ण पक्ष 20 वर्ष, अंक 320 पृष्ठ 8 मूल्य 1.00

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज से प्रकाशित

www.akhandbharatsandesh.net

नगर संस्करण प्रयागराज सोमवार 15 नवम्बर 2021

विश्व निर्माण एवं मानव विकास को द्रुतगति प्रदान करने हेतु क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान आश्रम की अनुपम भेंट

क्रियायोग संदेश

क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान संस्थान प्रयागराज

क्रिया योगः साँच (सच Truth) को आँच नहीं। आँच अज्ञानता (अविद्या Ignorance) समय, दूरी व सापेक्षता की अनुभूति है जो समस्त दुःखों का कारण है। अध्यात्मिक वैज्ञानिकों ने यह सिद्ध कर दिया है कि सामान्य तरीके से जीवन जीने पर सच की अनुभूति के लिए व्याधि रहित लगभग दस लाख वर्ष की आवश्यकता होती है, लेकिन क्रियायोग अभ्यास से सच की अनुभूति एक ही जन्म में सम्भव है।

1. प्राचीन उच्च मानव सभ्यता मे वर्णित यज्ञ, वर्तमान में विश्व विख्यात 'क्रियायोग' है।
2. क्रियायोग अभ्यास वेदपाठ है, पूर्ण ज्ञान की अनुभूति है।
3. क्रियायोग अभ्यास ईश्वर अनुभूति है।
4. क्रियायोग अभ्यास अतीत, वर्तमान व भविष्य से जुड़ना है।
5. क्रियायोग अभ्यास जीवन मृत्यु पर विजय है।

क्रियायोग से सभी प्रकार की समस्याओं का समाधान सुनिश्चित।

10 मिनट का अभ्यास 20 वर्ष का विकास

उपचुनाव में एनसीपी की हार का कांग्रेस ने उड़ाया मजाक, कहा- बंद हो जाएगी दुकान

मुंबई। महाराष्ट्र में महाविकास अघाड़ी की सरकार में शामिल दल एक दूसरे पर निशाना साधने से भी बाज नहीं आ रहे हैं। अब महाराष्ट्र में कांग्रेस के प्रमुख नाना पटोले ने उपचुनाव में एनसीपी की हार का मजाक उड़ाते हुए कहा है कि विदर्भ में जल्द इसकी दुकान बंद हो जाएगी। हाल ही में पंढरपुर में हुए उपचुनाव में एनसीपी को हार का सामना करना पड़ा है। महाराष्ट्र में कांग्रेस, एनसीपी और शिवसेना की साझा सरकार है। 2019 में विधानसभा चुनाव के बाद बीजेपी और शिवसेना का टूटने पर तीनों दलों ने महाविकास अघाड़ी सरकार का गठन किया। 1999 से 2014 तक राज्य में एनसीपी और कांग्रेस की गठबंधन सरकार रही। मुंबई से करीब 740 किलोमीटर दूर वर्धा में कांग्रेस की एक बैठक में पटोले ने कहा, एनसीपी का सर्वोच्च नेतृत्व पंढरपुर विधानसभा सीट बचाने में नाकामयाब रहा।

सरकार में पारदर्शिता के लिए मोदी सरकार की नई टीम गठित, 77 मंत्रियों का 8 ग्रुप तैयार

नई दिल्ली। नरेंद्र मोदी सरकार में दक्षता और पारदर्शिता में सुधार के लिए केंद्र ने पूरी मंत्रिपरिषद के 77 सदस्यों को आठ अलग-अलग समूहों में विभाजित किया है ताकि प्रौद्योगिकी आधारित संसाधन विकसित किए जा सकें और उनकी टीमों में भर्ती के लिए पेशेवरों का एक समूह तैयार किया जा सके। सूत्रों ने कहा कि नरेंद्र मोदी के नेतृत्व वाली सरकार युवा पेशेवरों को शामिल करने, परियोजना निगरानी के लिए प्रौद्योगिकी का सर्वोत्तम उपयोग करने और सेवानिवृत्त अधिकारियों से सुझाव लेने की योजना बना रही है। मंत्रियों को आठ समूहों में विभाजित करने की प्रक्रिया पीएम मोदी की अध्यक्षता वाली पूरी परिषद के चिंतन शिविरों (विचार-मंथन सत्र) के बाद की गई है। ये बैठक करीब पांच घंटे तक चली। इस तरह की कुल पांच

बैठकें हुईं - एक व्यक्तिगत दक्षता, केंद्रित कार्यान्वयन, मंत्रालय के कामकाज और हितधारकों की सगाई, पार्टी समन्वय और प्रभावी संचार पर और आखिरी संसदीय प्रथाओं पर थी।

पिछले सत्र में लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला और राज्यसभा के सभापति एम वेंकैया नायडू ने भी भाग लिया था। सूत्रों के अनुसार, इन मंथन बैठकों में मुख्य रूप से मोदी सरकार की दक्षता और वितरण प्रणाली में सुधार पर ध्यान केंद्रित किया गया था। उन्होंने कहा कि मंत्रियों को अधिक व्यावहारिक दृष्टिकोण बनाकर शासन में समग्र सुधार पर ध्यान देने के साथ समूहों का गठन किया गया है। सूत्रों ने आगे कहा कि 77 मंत्री इन आठ समूहों में से एक का हिस्सा हैं, जिनमें से प्रत्येक में नौ से दस मंत्री शामिल हैं, जिसमें एक केंद्रीय मंत्री को समूह समन्वयक के रूप में नामित किया गया है। इन समूहों को सौंपे गए कुछ कार्य हैं - प्रत्येक मंत्री के कार्यालय में एक पोर्टल विकसित करना जो सरकार की प्रमुख योजनाओं और नीतियों के प्रदर्शन पर अपडेट देना है, संबंधित मंत्रियों द्वारा किए गए निर्णयों की निगरानी के लिए एक डैशबोर्ड और बैठकें निर्धारित करने और पत्राचार के प्रबंधन के लिए एक प्रणाली। उन्हें हितधारक सगाई कार्यक्रम विकसित करने और सभी राज्यों, जिलों और मंत्रालयों के प्रोफाइल बनाने का भी निर्देश दिया गया है।

एक समाचार के मुताबिक सूत्रों ने कहा कि समूहों में से एक को संचार, अनुसंधान और अन्य प्रमुख क्षेत्रों पर अच्छी कमान रखने वाले तीन युवा पेशेवरों की एक टीम बनाने के लिए एक तंत्र विकसित करने का काम सौंपा गया है। उन्होंने कहा कि एक अन्य समूह को सेवानिवृत्त होने वाले कर्मचारियों के अनुभवों और फीडबैक पर एक पोर्टल विकसित करने का काम सौंपा गया है। सूत्रों ने आगे कहा कि केंद्रीय मंत्रियों में जो अपने-अपने समूहों के समन्वयक हरदीप सिंह पुरी, नरेंद्र सिंह तोमर, पीयूष गोयल, धर्मेंद्र प्रधान, स्मृति ईरानी और अनुराग ठाकुर बनाए हैं। इन मंत्रियों को यह जिम्मेदारी दी गई है ताकि वे अपने संबंधित कार्यालयों की अच्छी प्रथाओं को अन्य कैबिनेट सहयोगियों के साथ साझा कर सकें। विचार-मंथन बैठकों के दौरान प्रस्तुतीकरण देने वाले अधिकांश मंत्रियों को अपने-अपने समूहों के समन्वय का काम सौंपा गया है।

चंद्रगुप्त से हार गया था सिकंदरः योगी के बयान पर बोले ओवैसी- हिंदुत्व झूठे इतिहास की फैक्ट्री

नईदिल्ली। चंद्रगुप्त के खिलाफ युद्ध में सिकंदर की हार को लेकर यूपी सरकार के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के बयान पर ऑल इंडिया मजलिस इत्तेहादुल मुस्लिमीन के प्रमुख असदुद्दीन ओवैसी ने पलटवार किया है। ओवैसी ने इसे गलत बताते हुए कहा कि हिंदुत्व झूठे इतिहास की फैक्ट्री है। ओवैसी ने ट्वीट करके योगी के दावे को झूठा बताया और कहा कि चंद्रगुप्त और सिकंदर के बीच कोई युद्ध नहीं हुआ। यह एक और उदाहरण है कि क्यों हमें अच्छे शिक्षा प्रणाली की जरूरत है। ओवैसी ने ट्वीट किया, हिंदुत्व झूठे इतिहास की फैक्ट्री है। चंद्रगुप्त और सिकंदर के बीच कभी युद्ध नहीं हुआ। यह एक और उदाहरण है कि क्यों हमें एक अच्छे सार्वजनिक शिक्षा व्यवस्था की आवश्यकता है। अच्छे स्कूलों के अभाव में बाबा लोग अपनी सुविधा के मुताबिक तथ्य बनाते हैं। बाबा शिक्षा को महत्व नहीं देते और यह दिखता है।

लखनई में सामाजिक प्रतिनिधि सम्मेलन को संबोधित करते हुए सीएम योगी आदित्यनात ने कहा, इतिहास को किस तरह विकृत किया जाता है। इतिहास ने अशोक या चंद्रगुप्त मौर्य को महान नहीं बताया, किसे महान बताया? जो चंद्रगुप्त से हारा था, सिकंदर को महान बताया। कितना धोखा देश के साथ हुआ है। लेकिन इतिहासकार इस पर मौन हैं, कारण है, अगर सच्चाई भारतीयों के सामने आ गई तो समाज एक बार फिर खड़ा हो जाएगा। जब समाज खड़ा होगा तो देश खड़ा हो जाएगा। आज पीएम मोदी राष्ट्र को खड़ा कर रहे हैं। समाजवादी पार्टी का नाम लिए बिना योगी ने कहा कि जो लोग अब बंटवारे का मुद्दा उठा रहे हैं, वे तालिबान के समर्थक हैं। उन्होंने कहा, जो लोग अब विभाजन के बारे में बोल रहे हैं वे एक तरह से तालिबान का समर्थन कर रहे हैं'। जैसे ही तालिबान दोबारा अफगानिस्तान में उभरा, कई लोग इनके समर्थन में आ गए। जब कड़ी कार्रवाई की गई तो नके सुर नरम पड़े।

दुष्कर्म केस में वादिनी का बयान दर्ज, लेकिन नहीं आया गवाह

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। दुष्कर्म केस के गवाह को साजिश करके फर्जी तरीकेसे जेल भेजने के मामले में वादिनी का बयान दर्ज कर लिया गया। हालांकि वह गवाह तीसरे दिन भी पुलिस के समक्ष नहीं पेश हुआ जिसे फर्जी तरीकेसे जेल भेजा गया था। गवाह का बयान दर्ज करने के बाद मुकदमे से संबंधित अन्य लोगों के बयान दर्ज किए जाएंगे। दुष्कर्म केस के गवाह को फर्जी तरीकेसे जेल भेजने में पूर्व हंडिया इंस्पेक्टर बृजेश सिंह, सआई बलवंत यादव समेत तीन के खिलाफ जार्जटाउन थाने में केस दर्ज किया गया है।

इस मामले में मुकदमा वादिनी का भी बयान लिया गया। सूत्रों का कहना है कि अपने बयान में उसने बताया है कि किस तरह उस पर सुलह का दबाव बनाने के लिए उसके गवाह को फर्जी तरीकेसे जेल भेजा गया। साथ ही उस पर दर्ज मामले की विवेचना में भी लापरवाही की गई। उधर उसका गवाह तीसरे दिन भी बयान दर्ज कराने नहीं पहुंचा। सूत्रों का कहना है कि फिलहाल बयान दर्ज करने की कार्रवाई की जा रही है। इसके बाद आरोपों से संबंधित साक्ष्यों को एकत्र किया जाएगा।

मामले में पुलिस अफसर कुछ बोलने को तैयार नहीं हैं। उनका सिर्फ इतना ही कहना है कि विवेचना चल रही है। उधर आरोपी असिस्टेंट प्रोफेसर ने पीएम, गृह सचिव, आईजी समेत अन्य लोगों को शिकायती पत्र देकर खुद को फर्जी फंसाने का आरोप लगाया है। आरोप यह भी है कि फजीवाड़ा कर उस पर एससीएसटी एक्ट के तहत केस दर्ज कराया गया।

6 महीने में 400 लोगों ने बनाया हवस का शिकार, पुलिसकर्मियों ने भी किया रेप

नई दिल्ली। महाराष्ट्र के बीड जिले से सनसनीखेज मामला सामने आया है। छह महीने की अवधि में एक नाबालिग से एक पुलिसकर्मी सहित 400 लोगों ने कथित तौर पर रेप किया। जिससे नाबालिग गर्भवती हो गई है। बताया जा रहा है कि नाबालिग लड़की की मां का लगभग दो साल पहले निधन हो गया था, जिसके बाद उसके पिता ने उसकी शादी एक आदमी से करा दी थी। मिली जानकारी के अनुसार, दो साल पहले नाबालिग लड़की की मां का निधन हो गया था। जिसके बाद उसके पिता मजदूरी करते हैं। इसलिए पैसों की तंगी के कारण उन्होंने एक शख्स से उसकी शादी करा दी। पीड़िता का आरोप है कि अपने परिवार में लौटने से पहले एक साल से अधिक समय तक अपने ससुराल में रही। उसका ससुर उसे परेशान करता था। जिसके कारण मजबूरन उसे अपने घर लौटना पड़ा।

2 महीने की प्रेग्नेंट है नाबालिग पीड़िता

बलुआघाट से संगम तक दमकी दीपों की आभा

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। गंगा-यमुना के तटों पर संगीतमय कीर्तन, पूजन, नृत्यमय आराधना से भक्तों ने रविवार को चार महीने से क्षीर सागर में शमन कर रहे भगवान विष्णु को लोक कल्याण के लिए जगाया। देवोत्थान एकादशी पर यमुना के बलुआ घाट से लेकर संगम तक भक्ति भाव की धारा एक जैसी बहती रही। कहीं स्नान-ध्यान तो कहीं दीपदान की होड़ मची रही। भगवान के जागने के साथ ही शुभ घड़ी की शुरूआत भी हो गई। अब मंडप सजेंगे और शुभ मुहूर्त में शहनाइयां बजनी शुरू हो जाएंगी।कार्तिक शुक्ल पक्ष की देवोत्थान (देवउठनी) एकादशी पर रविवार की सुबह 4:30 बजे भगवान श्रीहरि विष्णु जाग गए। प्रयागराज के तीर्थों, मठ- मंदिरों से लेकर गंगा-यमुना के तटों से घर-घर तक भगवान के जागने की खुशी भक्तों ने नाच-

गा कर मनाई। देवोत्थान एकादशी पर भोर में ही संगम पर श्रद्धालुओं का रेला उमड़ पड़ा। एक तरफ संगम में स्नान और दूसरी ओर दीपदान होने लगा। गंगा की लहरों पर दीपमालाओं की लड़ियां भोर में जुगनुओं की मानिंद इतराने लगीं। महिलाओं ने सुबह गन्ने से सूप पीटकर दरिद्र नारायण से मुक्ति की कामना की। संगम के अलावा यमुना के बलुआ घाट पर तो कहीं तिल रखने की भी जगह नहीं बची। खचाखच भीड़ यमुना तट पर भगवान को जगाने के लिए उमड़ती रही। वहां, स्नान के बाद सूर्यदेव को अर्घ्य देकर श्रद्धालुओं ने सर्व मंगल की कामना की।

भगवान विष्णु के जागने के साथ ही मांगलिक कार्यों की शुरूआत हो गई। सोमवार से हर तरफ शहनाई की गूंज सुनाई देने लगेगी। महीनों से इस घड़ी के आने का इंतजार करने वाले गृह प्रवेश, यज्ञोपवीत, नामकरण, अन्नप्राशन, विवाह के अलावा नए प्रतिष्ठानों के शुभारंभ में जुट जाएंगे। भगवान विष्णु आषाढ़ शुक्लपक्ष की एकादशी तिथि से शयन पर चले गए थे। इससे मांगलिक कार्य अभी तक बंद थे।

गंगा-यमुना के तटों पर दीपदान

देवोत्थान एकादशी पर घर-घर में लोगों ने दीपदान किया। तुलसी के चौरा से लेकर घरों के दरवाजों पर दीप जलाए गए। संगम के अलावा गंगा व यमुना के तटों पर भी लोगों ने दीपदान किया। दीपदान कर भगवान विष्णु के जागने की खुशी मनाई गई।

भगवान शालिग्राम से तुलसी का आज होगा विवाह

हरिप्रबोधनी एकादशी पर सोमवार को शहर के मठ-मंदिरों में भगवान विष्णु का तुलसी से विवाह रचाया जाएगा। भक्त शादी के मौके पर भगवान को तरह-तरह की मिठाई, सिंघाड़ा, गन्ने के रस का भोग अर्पित करेंगे। शंखध्वनि के साथ घंटा-घड़ियाल बजाकर खुशी मनाई जाएगी। शाम को भगवान शालिग्राम से तुलसी का विवाह होगा। लोग तुलसी के रूप में कन्यादान की रस्म भी पूरी करेंगे।

न्यूजीलैंड का सपना तोड़ ऑस्ट्रेलिया पहली बार बना टी20 वर्ल्ड चैंपियन, मिचेल मार्श ने खेली मैच विनिंग पारी

दुबई, एजेंसी)। मिचेल मार्श (नॉट आउट 77) और डेविड वॉर्नर (53) की मैच विनिंग पारी के दम पर ऑस्ट्रेलिया ने रविवार को दुबई इंटरनेशनल स्टेडियम में न्यूजीलैंड को एकतरफा मुकाबले में आठ विकेट से हराकर पहली बार आईसीसी टी-20 वर्ल्ड कप ट्रॉफी अपने नाम कर ली। ऑस्ट्रेलिया ने टॉस जीतकर पहले गेंदबाजी करते हुए न्यूजीलैंड को चार विकेट पर 172 रन पर रोक दिया और 18.5 ओवर में दो विकेट खोकर लक्ष्य हासिल कर लिया। ऑस्ट्रेलिया की टीम ने पहली बार आईसीसी टी20 विश्व कप जीती है। ऑस्ट्रेलिया के लिए मिचेल मार्श ने 50 गेंदों पर छह चौके और चार छक्के लगाए। वॉर्नर ने 38 गेंदों पर चार चौके और तीन छक्के और तीन छक्के लगाए। उनके अलावा ग्लेन मैक्सवेल ने 18 गेंदों पर चार चौके और एक छक्के की मदद से 28 रनों की नॉट आउट पारी खेली। इसके साथ ही ऑस्ट्रेलिया टी-20 वर्ल्ड कप जीतने वाला छठा देश बन गया है। ऑस्ट्रेलिया से पहले, 2016 में वेस्टइंडीज, 2014 में श्रीलंका, 2012 में वेस्टइंडीज, 2010 में इंग्लैंड, 2009 में पाकिस्तान और 2007 में भारत टी-20 वर्ल्ड कप खिताब जीत चुका है। ऑस्ट्रेलिया के चैंपियन बनते ही टी-20 वर्ल्ड कप को नया चैंपियन मिल गया है। वहीं, न्यूजीलैंड को पिछले छह साल में तीसरी बार आईसीसी टूनार्मेंट के खिताबी मुकाबले में हार का सामना

करना पड़ा है। कीवी टीम को इससे पहले 2015 के वनडे वर्ल्ड कप फाइनल में ऑस्ट्रेलिया से और 2019 वनडे वर्ल्ड कप के फाइनल में इंग्लैंड से हार का सामना करना पड़ा था। इससे पहले, कप्तान केन विलियमसन की 48 गेंद में 85 रन की पारी की मदद से न्यूजीलैंड ने चार विकेट पर 172 रन बनाया। पहले बल्लेबाजी के लिये भेजी गई न्यूजीलैंड टीम पहले दस ओवर में रन बनाने के लिये जूझती नजर आई। मार्टिन गुप्टिल ने 35 गेंद में 28 रन बनाए। इसके बाद विलियमसन ने 48 गेंद में 10 चौकों और तीन छक्कों की मदद से 85 रन बनाकर पारी का नक्शा बदल दिया। न्यूजीलैंड ने आखिरी दस ओवरों में 115 रन बनाकर फाइनल मुकाबले को रोमांचक बनाने की नींव रख दी। अक्सर अपनी टीम के संकटमोचक साबित होने वाले विलियमसन ने बेहद खूबसूरती से बल्लेबाजी करते हुए पहली 16 गेंद में 15 रन बनाए। उस समय एडम जाम्पा किफायती गेंदबाजी कर रहे थे और गुप्टिल फॉर्म में नहीं थे। एक बार लय पकड़ने के बाद विलियमसन ने खुलकर खेला और अगली 32 गेंद में 70 रन बनाए। विलियमसन टी20 विश्व कप फाइनल में सर्वोच्च स्कोर बनाने वाले कप्तान बन गए जिन्होंने श्रीलंका के कुमार संगकारा को पछाड़ा। उन्होंने 11वें ओवर में मिशेल स्टार्क को 19 रन जड़कर दबाव कम किया। इसी ओवर में जोश हेजलवुड ने उनका कैच भी छोड़ा । स्टार्क आज काफी महंगे साबित हुए जिन्होंने चार ओवर में 60 रन दिय। स्टार्क का दूसरा ओवर जहां खराब रहा तो तीसरा ओवर और भी बदतर था जिसमें न्यूजीलैंड के बल्लेबाजों ने चार चौकों और एक छक्के के साथ 24 रन ले डाले। दूसरी ओर हेजलवुड ने चार ओवर में 16 रन देकर तीन विकेट लिये जबकि जाम्पा ने चार ओवर में 24 रन देकर एक विकेट चटकाया। न्यूजीलैंड की पारी कप्तान विलियमसन के नाम रही जिन्होंने साबित कर दिया कि उन्हें आधुनिक क्रिकेट के महान बल्लेबाजों में क्यो शुमार किया जाता है।

लोग भूख से मर रहे हैं, पड़ोसी हमारी जमीन पर कब्जा कर रहा है.. महाराष्ट्र के मंत्री का केंद्रीय मंत्री को जवाब

नई दिल्ली। केंद्रीय मंत्री जी किशन रेड्डी की सलमान खुर्शीद की किताब को लेकर की गई टिप्पणी पर महाराष्ट्र के मंत्री असलम शेख ने पलटवार किया है। उन्होंने कहा कि लोग नौकरी खो रहे हैं और भूख से मर रहे हैं। पड़ोसी देश हमारी जमीन पर कब्जा कर रहा है। ये ऐसे मुद्दे हैं जिन पर चर्चा करने की जरूरत है। शनिवार को केंद्रीय मंत्री जी किशन रेड्डी ने कांग्रेस के वरिष्ठ नेता सलमान खुर्शीद की किताब के दावों पर टिप्पणी की थी। जी किशन रेड्डी ने कहा था, इकांग्रेस के किसी वरिष्ठ नेता के इस तरह के बयान तारीफ करने वाले नहीं हैं। जब तक भारत में हिंदू हैं, यहां धर्मनिरपेक्षता बनी रहेगी। जिस दिन वे अल्पसंख्यक हो जाएंगे, पाकिस्तान, बांग्लादेश की तरह कोई धर्मनिरपेक्षता नहीं होगी।

जी किशन रेड्डी के बयान पर महाराष्ट्र के मंत्री असलम शेख ने पलटवार किया है। उन्होंने कहा, देश में लोग नौकरी खो रहे हैं, भूख से मर रहे हैं। पड़ोसी देश हमारी जमीन पर कब्जा कर रहा है।

चीन की हरकतों पर सेना की पैनी नजर, एलएसी पर एम-777 तोपों से बढ़ी ताकत

नई दिल्ली। एलएसी पर भारत और चीन सीमा विवाद के बीच सेना पहाड़ी इलाकों में एम-777 हॉवित्जर तोपों की और तैनाती कर सकता है। एक माह पहले सेना ने लद्दाख और एलएसी के पास इन सुपर पॉवर वाले तोपों की तैनाती की थी। सेना के सूत्रों के मुताबिक, कुछ दिन पहले अमेरिकी रिपोर्ट सामने आई थी जिसमें बताया गया था कि चीन एलएसी के पास बस्ती बसा रहा है। इसे लेकर सीडीएस बिपिन रावत भी चिंता जता चुके हैं। उन्होंने कहा था कि देश का सबसे बड़ा दुश्मन चीन है। भारत ने नवंबर 2016 में 75 करोड़ डॉलर में अमेरिका से 145 हॉवित्जर का ऑर्डर दिया था। सूत्रों के मुताबिक, जून 2022 तक सेना को 56 और ट777 तोपें मिलेंगी। अब तक 89 हॉवित्जर भारत को अमेरिका से मिल चुके हैं।

एलएसी पर चीन की नापाक हरकत को देखते हुए सेना पूर्वी लद्दाख और उत्तराखंड के बाद अब अरुणाचल प्रदेश से लगने वाली सीमा पर मोचार्बंदी कर रहा है। चीन की ओर से तैयारियों को देखते हुए भारत ने वास्तविक नियंत्रण रेखा

(एलएसी) के नजदीक के पहाड़ों पर अत्याधुनिक एल 70 विमानभेदी तोपें तैनात कर दी हैं। बताया जा रहा है कि इन पहाड़ों पर सुपर पॉवर से लैस एम-777 हॉवित्जर तोपों की तैनाती बढ़ सकती है। 40 किलोमीटर की दूरी तक मार करने वालीं एम-777 हॉवित्जर तोपों से भारतीय सेना चीन को तगड़ा संदेश देना चाहती है। हॉवित्जर को आवश्यकता के आधार पर आसानी से एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में ले जाया जा सकता है। राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार बोर्ड के सदस्य लेफ्टिनेंट जनरल एसएल नरसिम्हन (सेवानिवृत्त) ने कहा कि शेष एम-777 के शामिल होने से सेना की ताकत निश्चित ही बढ़ेगी।

सीमा पार चीन की पीपुल्स लिबरेशन आर्मी (पीएलए) की गतिविधियों को देखते हुए एल-70 विमानभेदी तोपों की तैनाती तीन महीने पहले ही की जा चुकी है। पूर्वी क्षेत्र में बोफोर्स तोपों की तैनाती भी पूरी हो चुकी है। इससे चीन की तरफ से होने वाले किसी भी हमले का मुंहतोड़ जवाब देने में भारत अब सक्षम हो गया है। सेना की तैनाती को बढ़ाने के लिहाज से सड़कों, पुलों और सुरंगों की भी मरम्मत कर उन्हें तैयार किया जा रहा है।

खबर संक्षेप

उरुवा ब्लाक परिसर में ग्राम प्रधानों का एक दिवसीय प्रदर्शन आज

मेजा रोड। उरुवा ब्लाक परिसर में ग्राम प्रधानों का एक दिवसीय प्रदर्शन आज ब्लॉक परिसर में प्रधान संघ अध्यक्ष राजेश द्विवेदी के नेतृत्व में आयोजित किया जाएगा। उक्त आशय की जानकारी देते हुए अध्यक्ष राजेश द्विवेदी ने बताया कि प्रधानो के हक के लिए जारी संघर्ष की कड़ी में सोमवार को प्रधान अध्यक्ष की अगुवाई में शांति पूर्वक धरना प्रदर्शन करतें हुए मुख्यमंत्री के नाम ज्ञापन सौंपेंगे। उन्होंने कहा कि जब तक पंचायती राज में निहित प्रधानों के हक नहीं मिल जाते तब तक आंदोलन जारी रहेगा।

अरैल घाट पर चला सफाई अभियान

नैनी। अरैल घाट पर रविवार को सरस्वती सामाजिक सेवा संस्थान की ओर से सफाई अभियान चलाया गया। इस दौरान मौजूद लोगों ने पक्के घाट से लेकर गंगा यमुना तट पर सफाई कार्य को किया। इस मौके पर संतोष तिवारी, कुंवर जी तिवारी, महेश प्रसाद केसरवानी, संदीप सिंह, सुनीता द्विवेदी, ऋषि दीक्षित, धीरज यादव, सहदेव चौरसिया व समीर समेत कई लोग मौजूद रहे।

गंगा स्नान करने गया वृद्ध गहरे पानी में डूबा, मौत

स्थानीय पुलिस व गोताखोरों की कड़ी मशक्कत के बावजूद नहीं मिली वृद्ध की लाश

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। पूरामुफ्ती थाना क्षेत्र के फतेहपुर घाट गंगा स्नान करने गए एक सत्तर वर्षीय वृद्ध की गंगा में डूब गया है स्थानीय पुलिस की जानकारी के पश्चात गंगा घाट पर पहुंची पुलिस व गोता खोरों की टीम वृद्ध की लाश ढूंढने में लगी हुई है। गोताखोरों की कड़ी मशक्कत के बावजूद वृद्ध की लाश नही मिली वृद्ध के डूबने की खबर जैसे ही उनके परिजनों के बीच पहुंची उनके होश उड़ गए और दहाड़े मारकर विलाप करते हुए गंगा घाट पर पहुंच गए और वृद्ध की लाश पानी से बाहर निकाले जाने का इंतजार कर रहे हैं। जानकारी के मुताबिक चरवा थाना क्षेत्र के चौराडीह गांव निवासी मन्नू मिश्रा उम्र 70 वर्ष पुत्र दया शंकर मिश्र रविवार सुबह आठ बजे घर से गंगा स्नान करने फतेहपुर घाट आए थे, स्नान करते समय उनका पैर फिसल गया और वह गहरे पानी में चले गए खबर लिखे जाने तक वृद्ध की लाश गोताखोरों की टीम खोजने में असफल रही और कोशिश अभी भी जारी है।

रास्ते में भैंस बांधने से मना करने पर युवक को बुरी तरह से की पिटाई, हालत गंभीर

एस आर एन अस्पताल मे जिंदगी मौत के बीच जूझ रहा है घायल

करछना। थाना अंतर्गत गांव गधिंयाव में रविवार को रवि शंकर पटेल अपने घर के सामने खड़ंजा मार्ग पर भैंस बांध रखा था जिससे लोगों को आवागमन में कठिनाई हो रही थी , उसी बीच रविवार चार बजे के करीब गांव का अतुल कुमार यादव पुत्र अमरनाथ जा रहा था रास्ते पर भैंस बंधी देख उसने मना किया तो इतने उसे गाली देते हुए गांव का रवि शंकर पटेल हरिशंकर पटेल रमाशंकर पटेल ने मिलकर अतुल कुमार को लाठी-डंडे और धारदार हथियार से वार कर मरणासन्न कर दिया, गंभीर हालत में घायल को करछना पुलिस सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र भर्ती कराया था जहां पर डॉक्टरों ने गंभीर हालत देख जिला अस्पताल रिफर कर दिया डॉक्टरों के मुताबिक घायल व्यक्ति के हाथ पैर दोनों टूट गए हैं तथा सर में गंभीर चोट लगने से उसकी स्थिति नाजुक बनी हुई है मामले में घायल के भाई राज राजकुमार ने नामजद तीन आरोपियों के खिलाफ करछना थाने में तहरीर दी है वहीं परिजनों के अनुसार एस आर एन अस्पताल में घायल अतुल कुमार की हालत नाजुक बनी हुई है जिसको लेकर गांव में तनाव की स्थिति बनी हुई है अभी तक पुलिस किसी भी आरोपी को गिरफ्तार नहीं कर सकी है जिससे लोगों में गहरा आक्रश बना हुआ है ।

कपटी रावण की लंका में हनुमान नें लगाई आग, लंका में मचा हाहाकार

करछना। आदर्श नवयुवक रामलीला कमेटी ककरम के कलाकारों की ओर से खेली जा रही दस दिवसीय रामलीला के मंचन को देखने के लिए लोगों की रात्रिकालीन में भीड़ जुट रही है। दर्शक लोग रामलीला के कलाकारों का मंचन देख मंत्रमुग्ध हो रहे हैं । शनिवार की रात्रि में लंका दहन नामक मंचन देख लोग जय श्रीराम के उद्घोष करने लगे । राम भक्त हनुमान की ओर से लंका में आग लगा दी गई। जिससे लंका नगरी धू -धू जलने लगी। रामलीला कमेटी के अध्यक्ष विनोद कुमार मिश्र व व्यवस्थापक तथा संबंधित ग्राम प्रधान प्रतिनिधि अमित कुमार मिश्र ने बताया कि सोमवार को भव्य एवं आकर्षक दशहरा मेला भी आयोजित किया जाएगा। उन्होंने कलाकारों समेत सभी दर्शक जनों के प्रति आभार जताया।

बीज भंडार की दुकान में लगी आग लाखों का सामान जलकर राख

अखंड भारत संदेश

मेजा रोड। मेजा थाना क्षेत्र में एक बार फिर आगजनी से लाखों का सामान जलकर राख हो गया। देखा जाए तो एक सप्ताह में आगजनी की यह तीसरी घटना है जिससे लोगों में हड़कंप की स्थिति बनी हुई है।

इलाकाई थाना क्षेत्र के मिश्रपुर बाजार में अज्ञात कारणों से बीज भंडार की दुकान में आग लगने से दुकान में रखा नकदी समेत लाखों का बीज जलकर राख हो गया। बता दे कि मिश्रपुर गांव निवासी सुशील कुमार मिश्र पुत्र सुधीर कुमार मिश्र मिश्रपुर बाजार में अपनी मार्केट बना रखी है मार्केट में उन्होंने सुशील मिश्रा बीज भंडार के नाम से दुकान खोल रखी है। शनिवार शाम को भुक्तभोगी दुकान बंद करके घर चला गया। जहां देर रात्रि अज्ञात कारणों से आग लग गई। रविवार सुबह दुकान से निकल रहे धुंए को देख राहगीरों ने दुकान मालिक को मामले से अवगत कराया।

मेजा थाना क्षेत्र के मिश्रपुर के बाजार में बीज भण्डार की दुकान में लगी आग का दृश्य

आनन-फानन में पीड़ित घटना स्थल की ओर दौड़ पड़ा, जब तक ग्रामीण आग पर काबू पाते तब तक दुकान में रखा गेहूं,धान, कीटनाशक दवाएं तथा समस्त प्रकार के सब्जियों के बीज जिसकी कीमत लगभग दस लाख सहित 20 हजार नकदी पूरी तरह जलकर खाक हो गया। आग इतनी भयावह रही की दुकान में लगा पंखा जलकर राख हो गया। पीड़ित ने मामले की जानकारी डायल 112 पुलिस कर्मियों को दिया जहा घटनास्थल पर पहुंच पुलिसकर्मी मामले की जांच में जुट गए। वह क्षेत्र में लगातार आए दिन हो रही आगजनी के चलते ग्रामीणों मे खासा आक्रोश बना हुआ है।

मनाया गया पंडित जवाहरलाल नेहरु का जन्म दिन

जवाहरलाल नेहरू जैसे महापुरुष हमारे देश में पैदा होतें हैं

करछना। आधुनिक भारत के निमार्ता पं जवाहरलाल नेहरू का जन्म दिवस बाल दिवस के रूप में श्री मती इन्दिरा गांधी बिद्यालय जगौती करछना प्रयागराज में हर्षोउल्लास के साथ मनाया गया। उनके चित्र पर माल्यार्पण बिद्यालय के पबन्धक डा दिनेश कुमार सोनी ने किया बिद्यालय के बच्चों ने अनेक सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया। अध्यापकों ने पंडित नेहरू से जुड़े अनेक घटना व उदाहरण पेश किया। प्रबंधक डाक्टर दिनेश कुमार सोनी ने कहा कि जवाहर लाल नेहरू जैसे महापुरुष केवल भारत जैसे देश में ही पैदा होतें है इतना त्याग करने वाला महापुरुष कोई नहीं हुआ। अपना वक्तव्य देगें वाले लोग राम मणि दिवेदी ,अरुण कुमार मिश्र , आनन्द कुमार पटवा, रंजना विश्व कर्मा, शिखा पाण्डे आदि लोग शामिल रहे।

लापता वृद्ध का नही लग रहा सुराग, गुमशुदगी की रिपोर्ट दर्ज

जसरा। बारा थाना क्षेत्र के असरवई गांव निवासी एक वृद्ध 15 दिन से लापता है। जिसकी गुमशुदगी की रिपोर्ट बारा थाने में दर्ज है लेकिन आज तक उसका कोई पता नहीं चल सका।अमर नाथ बिंद 57 वर्ष पुत्र मैकू बिन्द निवासी असरवई 23 अक्टूबर 2021 से लापता है। जिसका आज तक कोई सुराग नहीं लग पा रहा है। परिजन परेशान है, परिजनों ने उक्त वृद्ध के गुमशुदगी की रिपोर्ट बारा थाने में दर्ज कराई है। बृद्ध के गायब होने से परिजनों का रो रोकर बुरा हाल हो गया है । वहीं बृद्ध के परिजनों ने बृद्ध का पता बताने वाले को दस हजार नकद धनराशि देने को कहा है।

समाज सेवी के निधन पर वयक्त की शोक संवेदना

करछना। करछना के रोकडी गांव निवासी समाजसेवी पं बलराम तिवारी उम्र 70 वर्ष के गत दिवस आसमायिक मृत्यु हो जाने पर परिजन शोकाकुल हैं। शनिवार को विश्व हिंदू परिषद के जिला संयोजक विपिन गुप्ता समेत बृजेश त्रिपाठी सुनील कुमार आदि परिषद के पदाधिकारी लोग मृतक परिजन के घर पहुंचकर शोक संवेदना व्यक्त की । इस मौके पर जयराम तिवारी घनश्याम तिवारी प्रमोद कुमार परशुराम बलवंत राम शर्वत्र राम निशांत तिवारी आदि लोग मौजूद रहे।

सीमा पर जवान गांव में किसान के जान पर आफत बनी मोदी सरकार : रेवती

डीएपी खाद की आपूर्ति नहीं सुधरी तो आंदोलन

अखंड भारत संदेस

करछना। सांसद कुंवर रेवती रमण सिंह ने असम राईफल्स के कमांडिंग अफसर विप्लव त्रिपाठी उनकी पत्नी व बच्चे के साथ 4जवानों की आतंकी हमला में शहीद होने पर वीर सपूत को श्रद्धांजलि देते हुए कहा कि मोदी सरकार में सबसे ज्यादा फजीहत सीमा पर जवान की और गांव में किसान की हो रही हैं उन्होंने कहा कि किसान का बेटा सीमा पर अपनी जान हथेली पर रख कर देश की रक्षा करता हैं पर मोदी सरकार को किसानों से पता नहीं क्या दुश्मनी हैं कि सेना के जवानों की सुविधाओं में कटौती कर रहे हैं और गांव में किसान के खाद की बोरी से 5किलो खाद गायब कर दिऐ 50किलो की बोरी 45किलो की हो गई और उसपर भी किसान को खाद के लिए लाठी खानीं पर रही हैं पुरा पैसा देने के बाद भी ऐसी किसान विरोधी सरकार मैंने अपने 50 साल के राजनीतिक जीवन में कभी नहीं देखा ।सांसद ने कहा कि बुवाई का सीजन हैं किसानों को डीएपी खाद की आवश्यकता है लेकिन सरकार पूंजीपतियों के दबाव में सरकारी कोपरेटिव सोसायटी में खाद की क्रत्रिम आभाव बना कर अपने सहयोगी उधोगपतियों को लाभ पहुंचाने के लिए प्रयासरत हैं। सांसद ने सरकार को चेतावनी देते हुए कहा कि डीएपी खाद की आपूर्ति जल्द से जल्द समान्य ना हुई और किसानों पर लाठी या भगदड़ मची तो बहुत बड़ा जनांदोलन होगा जो किसानों के लिए गूंगी बहरी सरकार की कुर्सी को हिलाने का काम करेगा।

पूर्व प्रदेश प्रवक्ता सपा विनय कुशवाहा ने कहा कि योगी-मोदी सरकार एक तरफ अन्नपूर्णा यात्रा निकाल रही हैं दूसरी तरफ जिंदा अन्नदाता को कुचलने का कार्य हो रहा है भाजपा की सरकार रोजगार मंहगाई की बात ना कर गंगा यात्रा राममंदिर आदि के द्वारा लोगों को धार्मिक उमांद में उलझा कर अपनी राजनीतिक रोटी सेक रही हैं इंसानों की जान की उसे कोई परवाह नहीं है।

न्यूज झरोखा

बसपा प्रमुख मायावती की माँ के निधन पर हुई शोक सभा, बसपाइयों द्वारा दी गयी श्रद्धांजलि

प्रयागराज। मम्फोर्डगंज स्थित बसपा मण्डल कार्यालय परिसर में सामाजिक परिवर्तन की महानायिका आयरन लेडी बसपा प्रमुख मायावती की 92 वर्षीय माँ रामरती जी का हृदयगत रुक जाने के कारण शनिवार को मृत्यु हो गयी तथा वे निर्वाण को प्राप्त की है। उनके मृत्यु की सूचना मिलते ही बसपा समर्थकों में शोक की लहर व्याप्त है। रविवार को बसपा मण्डल कार्यालय परिसर में शोक सभा कर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की गई। श्रद्धांजलि अर्पित करने वालो में मुख्य रूप से प्रयागराज, मिजार्पुर के मण्डल के मुख्य सेक्टर प्रभारी अशोक गौतम, मुख्य सेक्टर प्रभारी बाबूलाल भंवरा, पूर्व विधायक राजबली जैसल, गुलाब चमार, अभिषेक गौतम, अतुल कुमार टीटू , एडवोकेट रविन्द्र गांधी, संदीप कुशवाहा, शारदा प्रसाद, संतोष हेला, भूपेंद्र तिवारी, आरएन पंधारी, दशरथ पाल, रविंद्र पप्पू, घनश्याम पटेल, हरिश्चंद्र कुरील, एड. रामबृज गौतम, एड. आरसी वर्मा, एड. महेश प्रसाद, एड. सुशील कुमार मौर्य, योगेश्वर कांत, रंजीत दास, राजकुमार गौतम, अनुज गौतम , तिलकराज बौद्ध , राजेश तिवारी, शीलू शुक्ला, मूलचंद गौड़, अनिल पटेल,प्रमोद पासी, महेंद्र दीवान, अखिलेश गौतम, सुनील बौद्ध, सुशील गौतम, रमेश गौतम, राजेश पासी मुख्य सेक्टर प्रभारी, शशि कान्त पासी, कृष्णा पासी आदि प्रमुख रहे।

के के मिश्रा बने कोरांव तहसील इकाई के अध्यक्ष

लेडियारी। पत्रकार एसोसिएशन प्रयागराज संघ के कोरांव इकाई की एक बैठक के के मिश्रा की अध्यक्षता में रविवार को सम्पन्न हुई जिसमें कोरांव तहसील इकाई का विस्तार किया गया साथ ही के के मिश्रा को पुनः कोरांव तहसील इकाई का अध्यक्ष चयनित किया गया। ज्ञात हो कि कोरांव तहसील इकाई का कार्यकाल एक वर्ष पूर्ण होने पर तहसील इकाई को भंग कर पुनः तहसील इकाई का विस्तार किया गया, जिसमे तहसील संरक्षक कृष्ण शंकर पांडेय तहसील अध्यक्ष के के मिश्रा, महामंत्री बिमलेश पांडेय,तहसील उपाध्यक्ष जनेश्वर तिवारी एवं संजय द्विवेदी संगठन मंत्री भगवान दास केशरी, एवं प्रकाश मिश्रा, मिडिया प्रभारी बृजेश भुर्तिया,को कोरांव तहसील इकाई का पद पर सर्व सम्मति से चयनित किया गया, चयनित पदाधिकारियों को संघ की प्रान्तीय व जिला इकाई के पदाधिकारियों ने बधाई दी है। बैठक में मुख्यरूप से संघ के प्रान्तीय इकाई के संरक्षक कमलाकर सिंह, अध्यक्ष पी सी पाण्डेय, महामंत्री सुरेश चन्द्र पाण्डेय, उपाध्यक्ष आनन्द जायसवाल, संगठन मंत्री ज्ञानेन्द्र पाठक, प्रयागराज जिलाध्यक्ष सुभाष शुक्ला, रावेन्द्र तिवारी चामू बृजलाल चौधरी अजय सिंह कमलेश कुशवाहा अरुण कुमार सिंह कमलेश कुमार कुशवाहा बलराम सिंह मु फिरोज मोहम्मद सद्दाम हुसैन सहित पचासों के संख्या में पत्रकार मौजूद रहे।

अध्यक्ष बने सुरेश चंद्र, मुख्य महासचिव बने अखिलेश त्रिपाठी

घूरपुर। रविवार के दिन भारतीय राष्ट्रीय पत्रकार महासंघ की घूरपुर स्थित मंडल कार्यालय पर पत्रकारों की बैठक मंडल अध्यक्ष आलोक त्रिपाठी की अध्यक्षता में आहूत की गई। बैठक में सर्व सम्मति से महासंघ की बारा तहसील इकाई की गठन की गई। जिसमे बारा तहसील इकाई के संरक्षक मोहम्मद आरिफ, अध्यक्ष सुरेश चंद्र उर्फ लल्ला, वरिष्ठ उपाध्यक्ष प्रवीण मिश्रा, उपाध्यक्ष पुष्पराज सिंह, उपाध्यक्ष राजेश निषाद, मुख्य महासचिव अखिलेश त्रिपाठी, महासचिव अजय द्विवेदी, सचिव परवेज आलम, संयुक्त सचिव एस पी सिंह, संगठन मंत्री मोहम्मद कमर, राम बाबू पटेल, मीडिया प्रभारी अतुल यादव, कोषाध्यक्ष राशिद हयात, आय व्यय निरीक्षक राज करन पटेल, को नियुक्त किया गया। मंडल उपाध्यक्ष आर के शर्मा ने सभी नव नियुक्त पदाधिकारी पत्रकार साथियों को बधाई और शुभकामनाएं देते हुए कहा कि पत्रकार साथियों की सुरक्षा और सम्मान महासंघ का मुख्य उद्देश्य है। जिनके लिए महासंघ सदैव तत्पर रहती है। मंडल अध्यक्ष आलोक त्रिपाठी ने समस्त नव नियुक्त पदाधिकारी पत्रकारो को माला पहना स्वागत किया। शिव कैलाश भारतीय, गौरी शंकर बिंद, राज कुमार सरोज, सुशील कुमार यादव, निशांत तिवारी आदि दर्जनों महासंघ के सदस्य पत्रकार साथी उपस्थित रहे।

बंशी लाल को मंडल उपाध्यक्ष व प्रमोद बाबू को मंडल सचिव बनाए जाने पर दी गई बधाई

बारा। ग्रामीण पत्रकार एसोसिएशन उत्तर प्रदेश इकाई प्रयागराज की एक बैठक जिलाध्यक्ष अयोध्या प्रसाद केसरवानी के नेतृत्व में रविवार को हुई। बैठक में सर्वसम्मति से पत्रकार बंशी लाल पटेल को मंडल उपाध्यक्ष व प्रमोद बाबू झा को मंडल सचिव बनाया गया। जिसमें ग्रामीण पत्रकार एसोसिएशन की तहसील इकाई बारा ने चयन पर खुशी जाहिर करते हुए बधाई दिया। बैठक में जिला उपाध्यक्ष डा. लालचन्द्र पटेल, तहसील अध्यक्ष राजेंद्र सिंह पिंटू, रामबाबू पटेल, रमेश पटेल,सुबेदार सिह, बलबीर सिंह, उमाशंकर गुप्ता ,शंकर लाल साहू ,अमर सिंह, आलोक गुप्ता, गिरजा शंकर सिंह, राजेश सोनकर, मोहम्मद अली भैयन राजेश केशरवानी,रविंदर सिंह ,सुनील यादव, केसी साहू, राकेश पटेल,अखिलेश यादव,राजू सिंह, सहित पत्रकार उपस्थित रहे।

कांग्रेस कार्यालय बाबूगंज मे पंडित नेहरू की जयंती मनाते कांग्रेसी।

भरद्वाज गुरुकुलम में कबड्डी प्रतियोगिता में प्रतिभाग करती छात्राएं।

रुक्मिणी विवाह में किया कन्यादान सुदामा चरित्र में छलके आंसू

श्रीमद भागवत कथा के अंतिम दिन का दृश्य

अखंड भारत संदेश

जंघई। श्रीमद् भागवत कथा के अंतिम दिन कथावाचक रामानुजाचार्य हरिप्रप्पनाचार्य महाराज ने रुक्मणी विवाह का वर्णन सुनाते हुए कहा की बेटे एक कुल को तारते हैं पर बेटियां तीन कुलों को तारती है। रुक्मणी विदाई का प्रसंग सुनाते के बाद कृष्ण सुदामा का प्रसंग सुनाया। सुदामा चरित्र की कथा का वृतांत सुनाते हुए कहा कि, सुदामा से परमात्मा ने मित्रता का धर्म निभाया। राजा के मित्र राजा होते हैं रंक नहीं, पर परमात्मा ने कहा कि मेरे भक्त जिसके पास प्रेम धन है। वह निर्धन नहीं हो सकता। कृष्ण और सुदामा दो मित्र का मिलन ही नहीं जीव व ईश्वर तथा भक्त और भगवान का मिलन था। जिसे देखने वाले अचंभित रह गए थे। आज मनुष्य को ऐसा ही आदर्श प्रस्तुत करना चाहिए। सेवा के द्वारा ही व्यक्ति महान बनता है। आगे कथा सुनाते हुए उन्होंने कहा यशोदानंदन श्रीकृष्ण के बाल सखा सुदामा थे तथा दोनों ही साथ में ही संदीपनी आश्रम में शिक्षा ली। शिक्षा ग्रहण करने के उपरांत यशोदानंदन मथुरा आ गए और सुदामा अपने प्रदेश लौट गए। सुदामा भगवान के स्वरूप को पहचान गए थे। लेकिन पत्नी सुशीला की हट के आगे उन्हें द्वारिका जाने पर मजबूर कर दिया। सुदामा इतने गरीब थे कि उनके घर में खाने तक के लाले पड़े हुए थे। पत्नी पड़ोस में जाकर चावल लेकर आई, जिसकी पोटली बनाकर दी फिर सुदामा द्वारिका के लिए निकल पड़े। लेकिन द्वारिका में पहुंचते ही कृष्ण के दरबारियों ने उन्हें रोक दिया। जब यह सूचना भगवान तक पहुंची तो वह दौड़े चले आए और अपने सखा को गले लगाकर तीनों लोक दे दिए। कथा के अंतिम दिन यज्ञ आहुति एवं प्रसादी का वितरण किया गया।मुख्य यजमान रामराज मिश्रा, प्रेमलता मिश्रा, इंजीनियर घनश्याम पांडेय, नागेंद्र सिंह, बच्चन मिश्रा, डिंपी पांडेय, सुनील मिश्रा, विकास यादव बीडीसी, मानस भास्कर अनुज महाराज, आचार्य अंबुज द्विवेदी, मदन गोपाल, संघर्षण, विवेक शुक्ल, मनीष पांडेय, अभिषेक शुक्ला, मनोज कुमार मिश्रा, अभिषेक मिश्रा, मयंक मिश्रा, शिवम मिश्रा, दीपक मिश्रा,योगेश मिश्रा, छोटेलाल सोनी सहित तमाम लोग मौजूद रहे।

संगीतमय भागवत कथा 20 नवम्बर से लखरावा में

करछना। तहसील क्षेत्र के ग्राम पंचायत लखरावा में काली माता मंदिर प्रांगण में 20 नवंबर से नौ दिवसीय 29 नवंबर तक श्री मदद् भागवत की संगीतमय कथा का रसास्वादन करेंगे आचार्य विश्व नाथ जी महाराज व हर्ष वर्धन महाराज जी वृंदावन मथुरा से पधारे आचार्य जी के मुखमंडल से ।कार्यक्रम के संयोजक महेन्द्र कुमार यादव अध्यक्ष रोजगार सेवक संघ करछना ने बताया कि क्षेत्र के सभी महानुभावों भक्त जनों से अपील है कि वे भगवान की कथा, श्री मदभागवत की संगीतमय कथा का समय पर पहुच कर रसास्वादन करें।

बाल दिवस पर पंडित नेहरू की जयंती मनाई गई

अखंड भारत संदेश

सहसों। कांग्रेस कार्यालय बाबूगंज में कांग्रेस के कार्यकताओं एवं नेताओं ने बाल दिवस पर देश के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू का 132वीं जयंती मनाई गई। इस अवसर पर कांग्रेस के पूर्व जिला उपाध्यक्ष अशफाक अहमद की अध्यक्षता में एक गोष्ठी का भी आयोजन किया गया। जिसमें भारत वर्ष के नव निर्माण एवं विश्व शांति में पंडित नेहरू के विशेष योगदान पर चर्चा हुई। इस अवसर पर उपस्थित सभी लोगों ने पंडित नेहरू के चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित करते हुए उनको याद किए एवं उनके बताए हुए आदर्शों एवं पद चिन्हों पर चलने का संकल्प लिया। इस अवसर पर उपस्थित वरिष्ठ नेता एवं अधिवक्ता देवराज उपाध्याय ने कहा विश्व नेता पंडित जवाहरलाल नेहरू ने देश की आजादी एवं उसके बाद देश के नवनिर्माण में जो अतुलनीय योगदान दिया है वह देश के वासी एवं देश उनका सदैव कृतज्ञ रहेगा। पंडित नेहरू को एक ऐसा भारत प्राप्त हुआ था जो गरीबी, अशिक्षा, प्रकृति आधारित कृषि, उद्योग था। उन्होंने देश के ढांचागत विकास की नींव रखी तथा भारत एक प्रगतिशील वैज्ञानिक शोध का लोकतांत्रिक देश के नव निर्माण में अपना बहुमूल्य योगदान दिया। इस अवसर पर वरिष्ठ नेता हलीम अंसारी, पंडित कमला प्रसाद मिश्रा, अखंड प्रताप सिंह, रामनिरंजन, राम अवध पाल, गुलाम सरवर अंसारी, कृपा शंकर पांडे, सईद अंसारी, विनय कुमार, संजीव कुमार, केवला प्रसाद शुक्ला, रामसूरत भारतीय, तहजीब उल हसन, मोहम्मद हैदर, बबलू प्रधान, मोहम्मद यूसुफ, शमशेर बहादुर पटेल, पिंटू माली, राजेश पटेल, आलम हाशमी आदि ने नेहरू जी को याद करते हुए अपने विचार व्यक्त किए।

बाल दिवस पर किया गया कबड्डी प्रतियोगिता

सहसों। क्षेत्र के भारद्वाज गुरुकुलम संस्थान रुदापुर देवनहरी मे भारत के प्रथम प्रधानमंत्री स्वर्गीय पंडित जवाहरलाल नेहरू की जयंती की पूर्व संध्या पर भारत रत्न पंडित नेहरू के चित्र पर माल्यार्पण और पुष्पांजलि की गई। उनके चरित्र और कृतित्व पर प्रकाश डाला गया। देश में उनके द्वारा किए गए योगदान को याद किया गया। इस अवसर पर में विद्यालय प्रांगण में छात्राओं की कबड्डी खेल प्रतियोगिता आयोजित की गई। जिसमें कुमारी शिवानी यादव को प्रथम, प्रिया प्रकाश को दूसरा और कुमारी खुशी कुशवाहा को तृतीय पुरस्कार एवं कुमारी साक्षी बिन्द को स्पेशल पुरस्कार दिया गया। पुरस्कार का वितरण विद्यालय के प्रबंधक विनय उपाध्याय ने किया। इस अवसर पर गौरव श्रीवास्तव, देवेश कुमार सिंह, अमित राम वर्मा, कुमारी अंजली यादव, हमीदा बानो, कुमारी काजनीन सहित आदि अध्यापक गण उपस्थित रहे।

हंडिया कांग्रेस कार्यालय पर कांग्रेसजनों द्वारा मनाई गयी नेहरू जी की जयंती

पंड़ित जवाहरलाल नेहरू का 132वी जंयती मनाया गया

हंडिया। हंडिया स्थित तहसील/विधानसभा कांग्रेस कार्यालय पर कांग्रेस जनों द्वारा देश के प्रथम प्रधानमंत्री भारत रत्न पंडित जवाहरलाल नेहरु जी की 132 वी जयंती के अवसर पर भारतवर्ष के नव निर्माण एवं विश्व शांति में उनके योगदान विषयक संगोष्ठी का आयोजन किया गया जिसकी अध्यक्षता कांग्रेस के वरिष्ठ नेता एवं सदस्य उत्तर प्रदेश कांग्रेस कमेटी श्री ओम प्रकाश तिवारी तथा संचालन पूर्व ब्लाक अध्यक्ष श्री दयाराम मिश्र ने की। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि जिला कांग्रेस के महासचिव श्री अशोक कुमार मिश्र जी रहे। उपस्थित लोगों ने पंडित नेहरू के चित्र पर माल्यार्पण कर उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की। उक्त अवसर पर संगोष्ठी को संबोधित करते हुए श्री ओम प्रकाश तिवारी ने कहा कि विश्व नेता पंडित जवाहरलाल नेहरू ने देश की आजादी एवं आजादी के बाद देश के नवनिर्माण में जो अतुलनीय योगदान किया है, देश उनका सदैव कृतज्ञ रहेगा। उन्होंने कहा कि पंडित नेहरू को एक ऐसा भारत प्राप्त हुआ था जो गरीबी, अशिक्षा, प्रकृति आधारित कृषि व उद्योग विहीन था, उन्होंने देश के ढांचागत विकास की नींव रखी तथा उन्होंने भारत को एक प्रगतिशील वैज्ञानिक शोध वाला, लोकतांत्रिक मूल्यों पर आधारित, देश के नव निर्माण में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। संगोष्ठी को जिन अन्य प्रमुख लोगों ने संबोधित किया उनमें सर्व श्री महेंद्र प्रताप सिंह जिला सचिव, शिव चंद् बिंद, महेश शुक्ल, तीर्थराज तिवारी, लव कुश मिश्र, सईद अंसारी, संतोष बिंद, अक्षत यादव, मयंक मिश्रा, राजेश दुबे, सहसराम यादव, विकास मिश्रा एडवोकेट, सुरेंद्र कुमार पांडे, रामकृपाल गुप्त प्रधान, फौजदार पूर्व प्रधान, कृपा शंकर पांडे, संजय कुमार आदि रहे।

खबर संक्षेप

देव दीपावली का आयोजन मनुपुर, मियांपुर में आज

प्रतापपुर। विगत वर्षों की भांति इस वर्ष भी हनुमान टेकरी मन्दिर जीर्णोद्धार सेवा समिति एवं व्यापार मण्डल मनुपुर द्वारा श्री हनुमान टेकरी मन्दिर मनुपुर मियां का पूरा बाजार में देवोत्थान एकादशी के शुभ अवसर पर आज देव दीपावली मनाई जायेगी।एवं सरस्वती शिशु मन्दिर मनुपुर के विद्यार्थियों द्वारा रंगोली प्रतियोगिता आयोजित है। सोमेश केशरी ने यह जानकारी देते हुए कहा है कि सभी सपरिवार आमन्त्रित है।यह आयोजन सायं 5 बजे से रात्रि 10 बजे तक आयोजित किया गया है।

चूड़ी विक्रेता ने लगाई फांसी, मौत

प्रयागराज। अकबरपुर में एक चूड़ी विक्रेता ने फांसी लगाकर जान दे दी। रविवार सुबह उसका शव कमरे में फांसी पर लटका मिला। इस घटना से परिवार में कोहराम मच गया। सूचना मिलने पर करेली पुलिस मौके पर पहुंची और छानबीन की। पुलिस को कोई सुसाइड नोट नहीं मिला। आत्महत्या की वजह पारिवारिक कलह बताई जा रही है। करेली पुलिस ने बताया कि अकबरपुर करेली निवासी मेहबूद बीड़ी बनाते हैं।

बंजारा गिरोह के चार सदस्य गिरफ्तार, पांच हत्याकांडों का हुआ खुलासा

रेकी कर घटना को देते थे अंजाम

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। बंजारा गिरोह के चार सदस्यों को गिरफ्तार करते हुए पुलिस ने रविवार को बड़ा खुलासा किया। दावा किया कि जिले में पूर्व में हुए पांच सनसनीखेज हत्याकांडों को इसी गिरोह ने अंजाम दिया। इनमें सोरांव के एक ही परिवार के पांच लोगों की हत्या के साथ ही मांडा, नवाबगंज दोहरा हत्याकांड भी शामिल है। लूट की नीयत से घर में घुसकर इन वारदातों को अंजाम दिया गया। गिरोह केसदस्यों के कब्जे से हसिया, रम्भा, चापड़, पेचकस, प्लास समेत अन्य सामान बरामद हुआ है ' पुलिस ने एक दिन पहले मुठभेड़ के दौरान मांडा में प्रदीप कुमार जोशी व अनीस खरवार और थरवई में बलिराम उर्फ बल्ली को गिरफ्तार किया। इनसे पूछताछ के बाद देर रात सोरांव के बनकट गांव में स्थित डेरे से अमराज, संडोल और सुमित खरवार को पकड़ा गया। साथ ही उनकी निशानदेही पर कोतवाली के बादशाही मंडी निवासी सोनार विक्रम उर्फ बबलू गुप्ता को गिरफ्तार किया। पुलिस का दावा है कि पूछताछ में आरोपियों ने सनसनीखेज खुलासा किया। बताया कि उन्होंने अपने गिरोह के सदस्यों के साथ मिलकर जिले में कई सनसनीखेज हत्याकांडों को अंजाम दिया। बताया कि लूट की नीयत से उनके गिरोह के लोग जगह-जगह घूमकर रेकी करते हैं और फिर वारदात को अंजाम देते हैं। इस दौरान वह पहचाने न जाएं, इसके लिए घर में मौजूद सभी लोगों की हत्या कर देते हैं। उनके गिरोह के सदस्य डेरे बनाकर अलग-अलग क्षेत्रों में रहते हैं। वारदात के बाद वह अपना डेरा हटाकर कहीं और बना लेते हैं। डीआईजी सर्वश्रेष्ठ त्रिपाठी का कहना है कि गिरफ्तार बदमाशों ने चित्रकूट व प्रतापगढ़ में भी कई वारदातों में संलिप्तिता की बात बताई है।

बंजारा गिरोह के चार सदस्यों को गिरफ्तार कर वारदातों का खुलासा करती पुलिस टीम।

घटना में प्रयुक्त होने वाले उपकरण व औजार हुए बरामद

पांच वारदातों का हुआ खुलासा

जनवरी 2020 सोरांव यूसुफपुर में एक ही परिवार केपांच लोगों की हत्या, मई 2020- मांडा के आंधी गांव में पति-पत्नी व उनकी 16 वर्षीय बेटी की हत्या, 11 जुलाई 2020- सोरांव के चांदपुर मनी का पूरा में पति-पत्नी की हत्या, सितंबर 2021- नवाबगंज के जगदीशपुर माली गांव में मां-बेटी की हत्या तथा 2019- थरवई के सरायचंडी में दंपति की हत्या में संलिप्त थे।

डायबिटीज दिवस पर डॉक्टरों ने निकाली साइकिल रैली

प्रयागराज। वर्ल्ड डायबिटीज डे के अवसर पर इलाहाबाद मेडिकल एसोसिएशन के सदस्यों ने महाराणा प्रताप चौराहे से एयरपोर्ट तक साइकिल रैली निकाली। डॉक्टरों के हाथों में जागरूकता के पोस्टर और बैनर भी थे। कार्यक्रम का मूल उद्देश्य लोगों को संदेश देना था कि अधिक से अधिक मेहनत करके डायबटीज से मुक्त रहा जा सकता है। सुबह 5:30 बजे महाराणा प्रताप चौराहे पर लगभग 50 डॉक्टर जमा हुए। टू व्हील थ्रील में पुरुष डॉक्टरों की टोली थी तो प्रयागराज पेसर्स में महिला डॉक्टरों की टीम थी। 5:45 बजे साइकिल रैली निकली तो सुभाष चौराहा, हाईकोर्ट, पानी की टंकी, धूमनगंज, मुंडेरा मंडी के रास्ते एयरपोर्ट तक गई। बाद में रैली इन्हीं रास्तों से वापस एएमए पर समाप्त हुई। रैली में डॉ. ऋतु जैन, डॉ. आशुतोष गुप्ता, डॉ. अनिल शुक्ला, डॉ. अतुल दूबे, डॉ. फराह, डॉ. कंचन, डॉ. सुभाष वर्मा, डॉ. पंकज कामरा प्रमुख रूप से मौजूद थे। मधुमेह मुक्त भारत का टैग देकर तमाम पोस्टर लगाए गए थे। जिसमें ह्यस्वस्थ्य होगा भारत तो जीतेगा भारत, ह्यदौड़ेगा भारत तो जीतेगा भारत जैसे संदेश लिखे हुए थे। रैली के समापन के बाद एएमए सभागार में मधुमेह से बचाव पर एक संगोष्ठी हुई। इसमें डॉ.अनुभा श्रीवास्तव ने डायबटीज से बचाव के तरीके बताए। डॉ. सुबोध जैन ने संगोष्ठी की अध्यक्षता की। एएमए के खेल सचिव डॉ.अतुल दूबे ने बताया कि कार्यक्रम का मूल उद्देश्य आम लोगों में जागरूकता फैलाना था।

भारी मात्रा में अवैध शराब बरामद चालक और खलासी गिरफ्तार

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। बीतीरात थाना क्षेत्र के नेशनल हाईवे नो एंट्री नवाबगंज के पास राजस्थान से बिहार जा रहे ट्रक को पुलिस ने पकड़ लिया। तलाशी के दौरान पुलिस ने भारी मात्रा में अवैध देसी शराब बरामद किया है। पुलिस को देख कर ट्रक चालक वाहन को लेकर भागने का प्रयास किया, लेकिन पुलिस की संयुक्त टीम घेराबंदी कर धर दबोचा।

ट्रक चालक चंदन भारतीय पुत्र आनंद भारतीय निवासी मिठरा खुद थाना भुआई माना जनपद बाड़मेर राजस्थान, खलासी शंकरनाथ गोस्वामी निवासी राम मोरिया निवासी बशमेर रुरर जनपद बाड़मेर राजस्थान बताए गए हैं। ट्रक पर लदे 265 पेटी अवैध शराब रॉयल ब्रांड180 एमएल 12720 पाउच को बरामद किया गया। चालक राजस्थान से बिहार के लिए रवाना हुआ था। मुखबिर की सूचना पर एससीएफटी प्रभारी वेदप्रकाश प्रकाश पांडे चौकी मंसूराबाद एसआई रमेश चंद्र यादव ने नेशनल हाईवे मोहिउद्दीनपुर गांव के पास से पीछा किया तो ट्रक चालक पुलिस के वाहन को देखकर भागने लगा। पुलिस ने घेराबंद कर ट्रक को पकड़ लिया। एसटीएफटी प्रभारी वेद प्रकाश पांडेय की तहरीर पर मुकदमा दर्ज कर ट्रक चालक व खलासी को गिरफ्तार कर लिया।

नेशनल हाइवे नवाबगंज के पास राजस्थान से बिहार जा रहे ट्रक से बरामद हुआ भारी मात्रा में शराब का दुश्य।

भाजपा राज मे किसान बेहाल, कालाबाजारी करने वाले माला माल : नरेन्द्र सिंह

मेजा। समाजवादी पार्टी के वरिष्ठ नेता पूर्व प्रदेश सचिव श्री नरेंद्र सिंह ने रबी की बुवाई के समय डी ए पी, यूरिया जैसी आवश्यक रासायनिक खादों के बाजार में कृत्रिम अभाव के चलते किसानों की परेशानी पर सरकार को घेरते हुए कहा है की भाजपा राज में किसान बेहाल है और काला बाजारी करने वाले माला माल हैं। सपा नेता ने जारी बयान में कहा है कि मेजा क्षेत्र सहित जनपद की सभी सहकारी समितियों, किसान सेवा केंद्रों एवं इफ्को के बिक्री केंद्रों पर खाद गायब है जबकि तमाम जगहों पर काला बाजारी करके बिचौलियों द्वारा अधिक दाम लेकर खाद बेचीं जा रही है। उन्होंने आरोप लगाया है कि कृषि विभाग सहित विपणन से जुड़े अधिकारियों, सहकारी समिति के सचिवों की भूमिका की भी जाँच होनी चाहिए। नरेन्द्र सिंह ने भाजपा पर कटाक्ष करते हुए कहा कि किसानों की आय दोगुनी करने के नाम पर वोट बटोरने वाली भाजपा सरकार में किसान बुरी तरह से परेशान है।

पानी जहाज पर लगा इफको का ब्वायलर

पानी के जहाज से आ रहा इफको का ब्वायलर

विदेश से मंगाया गया है इसको का ब्वायलर

अखंड भारत संदेश

फूलपुर। फूलपुर में खाद बनाने वाली इकाई इफको के लिए नया अमोनिया का ब्वायलर रविवार को पानी के जहाज से मिजार्पुर आ रहा है। ब्वायलर लेकर जहाज चुनार से मिजार्पुर के लिए रवाना हुआ। विदेश से मंगाया गया ब्वायलर मिजार्पुर में उतारकर बड़े ट्रेलर से इफको लाया जाएगा। जहाज से ब्वायलर 120 पहिया वाले ट्रेलर के लिए मिजार्पुर में जेटी बनाई जा रही है। प्रयागराज में गंगा-यमुना किनारे से इफको तक ब्वायलर ले जाने के लिए मार्ग नहीं होने के कारण इसे मिजार्पुर में उतारा जाएगा। बड़ा ब्वायलर उतारने के लिए प्रयागराज में खुली जगह पर जेटी भी नहीं है।

जिला स्तरीय खेल कूद प्रतियोगिता में प्रतिभाग करते

विजेता टीम को पुरस्कृत करते प्रमुख इंद्रनाथ मिश्र

सनराइज जिला स्तरीय प्रतियोगिता कौधियारा में संपन्न

अखंड भारत संदेस

करछना। करछना क्षेत्र के पंडित गिरीश कुमार तिवारी इंटरमीडिएट कॉलेज की ओर से सनराइज जिला स्तरीय सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता एवं खेलकूद प्रतियोगिता का आयोजन जीपी डिग्री कॉलेज ठढ़विलार में रविवार को किया गया। जिसमें श्रीमती इंदिरा गांधी इंटर कालेज की छात्रा वैष्णवी ने बाजी मारते हुए एथलेटिक्स की तीन प्रतियोगिताओं में प्रथम स्थान हासिल करते हुए मोबाइल और विजेता ट्राफी जीती। द्वितीय स्थान कोमल गुप्ता व कामिनी गुप्ता ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। सीनियर बालक वर्ग में पीयूष केशरवानी, असलम सिद्धकी एवं हिमांशु प्रजापति को मुख्य अतिथि ब्लांक प्रमुख कौधियारा इंद्रनाथ मिश्रा ने पुरस्कृत किया। उन्होंने कहा कि ग्रामीण प्रतिभाओं के लिए सामान्य ज्ञान और खेलकूद का यह आयोजन बच्चों के भविष्य में मील का पत्थर साबित होगा। सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता में 600 बच्चों ने प्रतिभाग किया। इस प्रतियोगिता में 23 कालेजों के बच्चों ने भाग लिया। प्रमुख रुप से पं0 गिरीश कुमार तिवारी स्मारक इंटर कालेज जेठूपुर, इंदिरा गांधी इंटर कालेज पटेल नगर अकोढ़ा, मदन मोहन मालवीय इंटर कॉलेज करछना, लालबहादुर शास्त्री इंटर कॉलेज धरवारा, इंदिरा गांधी इंटर कॉलेज कुलमई रामरती पटेल इंटर कॉलेज सहलोलवा, हीरालाल पटेल उच्चतर माध्यमिक विद्यालय हिनौता ने बड़ी संख्या में प्रतिभाग किये । प्रतियोगिता के संयोजक व व्यवस्थापक रहे पं गिरीश कुमार तिवारी इंटरमीडिएट कॉलेज के प्रबंधक अम्बरीष तिवारी व लाल बहादुर शास्त्री इंटर कॉलेज धरवारा के सहायक अध्यापक क्षितीश तिवारी ने सामान्य ज्ञान व खेलकूद प्रतियोगिता में प्रतिभाग किए सभी प्रतिभागियों के सहित मुख्य अतिथि समेत सभी गणमान्य लोगों के प्रति आभार जताया। उक्त द्वय ने बताया कि सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता का परिणाम सोमवार को घोषित किया जाएगा। संचालन ब्रह्मेश तिवारी ने किया। इस मौके पर गंगा प्रसाद तिवारी राजेन्द्र प्रसाद पाण्डेय, कृष्णा नंद शुक्ल, , संजीव पाण्डेय, बाबूराम पटेल, अनुज प्रजापति, संजय तिवारी, सुदीप तिवारी शशांक तिवारी सागर मिश्रा सुरेश सिंह अनिल मिश्रा मो० अमन मोहित कोटार्य हेरंब शुक्ला आदि लोग मौजूद रहे।

वॉलीबाल में शंकरगढ़ और कबड्डी में जोरवट अव्वल

प्रद्युम्न और तनु सिंह ने जीती फरार्टा रेस, 400 मीटर दौड़ में शिवम और संजना ने सभी को पछाड़ा

शंकरगढ़। युवा कल्याण विभाग की तरफ से आयोजित ग्रामीण खेलकूद प्रतियोगिता में विकास खंड शंकरगढ़ की तनु सिंह (बालिका वर्ग) और प्रद्युम्न सिंह (बालक वर्ग) ने फरार्टा रेस जीतकर लोहा मनवाया है। राजा कमलाकर इंटर कालेज के खेल मैदान पर हुई प्रतियोगिता के 400 मीटर दौड़ में शिवम त्रिपाठी और संजना त्रिपाठी ने प्रथम स्थान हासिल किया।

खेल प्रतियोगिता में पुरस्कृत होते प्रतिभागी

इस प्रतियोगिता में विकास खंड शंकरगढ़ के ग्रामीण परिवेष से आए 350 खिलाडि?ों ने विभिन्न खेलों में प्रतिभाग किया। वॉलीबाल में शंकरगढ़ की टीम ने प्रथम और जोरवट की टीम ने दूसरा स्थान प्राप्त किया। इसी तरह कबड्डी में कबड्डी में जोरवट की टीम विजेता और शंकरगढ़ की टीम उप विजेात रही। कबड्डी बालिका वर्ग में शिवराजपुर की बालिकाओं ने बेहतरीन खेल का प्रदर्शन किया। जबकि शंकरगढ़ की बालिकाओं को दूसरे स्थान से संतोष करना पड़ा। ग्रामीण खेलकूद प्रतियोगिता के इस इवेंट में 100 मीटर दौड़, 400, 1500 3000 मीटर दौड़ के अलावा लंबी कूद, ऊंची कूद, गोला, भाला फेंक, वॉलीबाल, कबड्डी, भारोत्तोलन जैसी कई प्रतियोगिताएं हुईं। इसमें विभिन्न ग्राम पंचायतों से आए युवाओं ने खेल प्रतिभाग का प्रदर्शन किया। युवा कल्याण विभाग के तत्वाहवधान में आयोजित ग्रामीण खेलकूद प्रतियोगिता का शुभारंभ प्रधानाचार्य ए.पी. सिंह ने किया। खिलाडि?ों से मुखाबित प्रधानाचार्य एपी सिंह ने कहा कि खेल से न सिर्फ शरीर मजबूत होता है, बल्कि अनुशासन और एकाग्रता का विकास होता है। इससे बच्चों की दिनचर्या संयमित होती है। सहयोग की भावना पनपती है। विशिष्ट अतिथि ब्लाक प्रमुख निर्मला देवी ने इस तरह के आयोजनों पर बल देते हुए खिलाडि?ों का हौसला बढ़ाया। कहा कि ग्रामीण पृष्ठभूमि में भी प्रतिभाओं की कोई कमी नहीं है। अंत में विजेता खिलाडि?ों को ब्लाक प्रमुख निर्मला देवी और एडीओ (पंचायत) रवींद्रनाथ कुशवाहा ने पुरस्कृत किया। आयोजन में अरविंद गौतम, सीपी सिंह, लक्ष्मीकांत पटेल, अजय सिंह आदि का सराहनीय योगदान रहा। आभार प्रदर्शन और संचालन युवा कल्याण अधिकारी दिनेश कुमार ने किया।

84 केंद्र पर संपन्न हुई सीडीएस की परीक्षा, गणित के प्रश्न में उलझे रहे छात्र

प्रयागराज। नेशनल डिफेंस एकेडमी (एनडीए) और कम्बाइंड डिफेंस सर्विसेज (सीडीएस) की रविवार को हुई परीक्षा में सभी विषयों के प्रश्न पत्र इस बार पिछले वर्षों के मुकाबले ज्यादा संतुलित और स्तरीय रहे। सीडीएस में जहां अंक गणित के सवालों ने उलझाया, वहीं एनडीए की परीक्षा में गणित के सवाल तुलनात्मक रूप से सरल थे। विशेषज्ञों के अनुसार अगर अभ्यर्थी लिखित परीक्षा और इसके बाद एसएसबी में 50-50 फीसदी अंक प्राप्त कर लेते हैं तो उनके अंतिम चयन के अवसर बढ़ जाएंगे।संघ लोक सेवा आयोग की ओर से आयोजित एनडीए और सीडीएस की परीक्षा के लिए प्रयागराज में कुल 102 केंद्र बनाए गए थे। एनडीए की परीक्षा 84 केंद्रों और सीडीएस की परीक्षा 18 केंद्रों में हुई। इन केंद्रों में परीक्षा के लिए 41876 अभ्यर्थी पंजीकृत थे, जिनमें से 62.74 फीसदी अभ्यर्थियों ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। एनडीए की परीक्षा दो पालियों में सुबह 10 से दोपहर 12.30 एवं अपराह्न 2 से 4.30 बजे तक और सीडीएस की परीक्षा तीन पालियों में सुबह 9 से 11, दोपहर 12 से 2 और अपराह्न 3 से शाम 5 बजे तक आयोजित की गई।एनडीए की परीक्षा में गणित एवं सामान्य ज्ञान और सीडीएस की परीक्षा में सामान्य ज्ञान, अंग्रेजी एवं गणित के प्रश्न पत्र थे। मेजर कल्शी क्लासेज के निदेशक सौरभ सिंह के अनुसार एनडीए की परीक्षा में गणित के 80 सवाल आसान थे और 40 सवाल काफी कठिन थे। पेपर संतुलित और मध्यम स्तर का था। वहीं, सामान्य ज्ञान के सवाल स्तरीय थे। सीडीएस में अंक गणित के सवालों ने अभ्यर्थियों को उलझाया, सामान्य ज्ञान और अंग्रेजी के प्रश्न पत्र संतुलित थे। सोल्जर एकेडकमी के विशेषज्ञ बीएम भारद्वाज के अनुसार पिछले तीन वर्षों की तुलना में इस बार एनडीए और सीडीएस की परीक्षा का पेपर थोड़ा आसान था। सीडीएस की परीक्षा में औसत स्तर के सवाल पूछे गए।

महंगाई के खिलाफ कांग्रेसियों ने निकाली पदयात्रा

महंगाई के खिलाफ जिले भर में निकली कांग्रेसियों ने निकाली प्रतिज्ञा पदयात्रा

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। महंगाई के खिलाफ कांग्रेसियों की प्रतिज्ञा पदयात्रा रविवार को जिले भर में निकाली गई। इसकी शुरूआत आनंद भवन से की गई। इसके बाद शहर में मंसूर अली पार्क सहित जिले की सभी विधानसभाओं में निकाली गई। इस दौरान कांग्रेसियों ने केंद्र सरकार के खिलाफ जमकर नारेबाजी की। कई स्थानों पर सभाएं भी आयोजित की गईं।

आनंद भवन से निकली यात्रा शहर उत्तरी विधानसभा क्षेत्र के नेतराम चौराहे पर नुक्कड सभा में तब्दील हो गई। इस मौके पर पूर्व विधायक अनुग्रह नारायण सिंह ने कहा कि भीषण महंगाई के कारण आम आदमी का जीना दूभर है। बेरोजगारी बढ़ने से युवाओं में नाराजगी है। कहा कि लोगों के बुनियादी मुद्दों से ध्यान हटाने वाली जनविरोधी सरकार का जाना तय है। राष्ट्रीय सचिव बाजी राव खाडे ने कहा कि सूबे में चौपट कानून व्यवस्था, किसानों और महिलाओं के उत्पीड़न, बंद होते उद्योग तथा करोड़ों नौकरियां खत्म होने से लोग भुखमरी के कगार पर हैं। शहर अध्यक्ष प्रदीप मिश्रा अंशुमन ने बताया कि नेहरू जयंती पर 14 नवंबर से प्रारंभ पदयात्रा तीनों विधानसभा क्षेत्र में आयोजित की गई है। यह यात्रा आगे भी दस दिनों तक जारी रहेगी। इस मौके पर उज्जवल शुक्ला, सुभाष पांडेय, विवेकानंद पाठक, किशोर वार्ष्णेय, संजय सिंह, भारत भूषण, प्रेमजी अग्रवाल, भोले सिंह, मो. असलम, कुशल पंडित, रजिया सुल्तान, शादाब अहमद, रविन्द्र गिरी, अजेद गौढ़, हर्षिता अरोड़ा, अजय श्रीवास्तव आदि मौजूद रहे। प्रतिज्ञा पदयात्रा मंसूर अली पार्क से भी निकाली गई। यात्रा नखास कोहना पहुंचकर नुक्कड़ सभा में तब्दील हो गई। उधर, प्रतापपुर विधानसभा में संजय तिवारी के नेतृत्व में यात्रा निकली। इस दौरान कांग्रेसियों ने सभा भी की। सुनील यादव, कमलेश पांडे, मुन्ना पांडे, मधुसूदन पांडे, एहतेशाम, आदर्श प्रजापति, राजेश प्रजापति, सोनू दुबे आदि मौजूद रहे।

महंगाई, भ्रष्टाचार चरम पर बाहरी विधायकों ने प्रतापपुर से क्षल कपट किया : संजय तिवारी

जंघई। अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की महासचिव प्रियंका गांधी के आवाहन पर प्रतिज्ञा पदयात्रा प्रतापपुर विधानसभा स्थित गोलवां गोठवां सेवना ग्राम से शुरू किया गया सर्वप्रथम भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू के चित्र पर माला फूल चढ़ाकर गांव वालों ने और कांग्रेस के पदाधिकारियों ने श्रद्धांजलि दिया।श्रद्धांजलि के उपरांत कांग्रेस के सैकड़ों कार्यकर्ता हाथों में झंडा बैनर लेकर कांग्रेस पार्टी जिंदाबाद प्रियंका गांधी जिंदाबाद श्याम सूरत उपाध्याय जिंदाबाद नारे लगाते हुए उत्तर प्रदेश कांग्रेस कमेटी के सचिव संजय तिवारी के नेतृत्व में हाथों में कांग्रेस एवं प्रियंका गांधी का प्रतिज्ञा पत्र लेकर एक-एक घर पर जाकर लोगों को दिया। तथा वरिष्ठ पुराने नेताओं में जिसमें ब्रह्मादास पांडेय पूर्व ब्लाक प्रमुख चीनी पांडेय सुपुत्र स्वर्गीय पूर्व विधायक श्री राजित राम पांडेय को उनके घर जाकर माला पहनाकर स्वागत किया और उन्हें भी कांग्रेस की प्रतिज्ञाओं के बारे में जानकारी दिया। प्रतिज्ञा यात्रा 10 गांव में संपन्न हुई जिसमें उपरोक्त गांव के अलावा गोलवां गोठवा, चकिया, ढोढर, सिरसा, प्रमुख गांव में नुक्कड़ सभा को संबोधित करते हुए संजय तिवारी ने लोगों का आह्वान किया कि वह उत्तर प्रदेश सरकार को उखाड़ फेंकने के लिए प्रियंका गांधी द्वारा घोषित नारा भाजपा भगाओ महंगाई हटाओ का नारा सार्थक करें। कार्यक्रम में प्रमुख रूप से प्रभारी सुनील यादव, ब्लॉक अध्यक्ष कमलेश पांडेय, मुन्ना पांडेय, मधुसूदन पांडेय, एहतेशाम, आदर्श प्रजापति, राजेश प्रजापति, सोनू दुबे, सुधांशु तिवारी प्रमुख रूप से उपस्थित थे।

अभूतपूर्व व्यक्तित्व के इंसान थे पंडित जवाहर लाल नेहरु : लालजी त्रिपाठी

अखंड भारत संदेश

कांग्रेसियों ने समारोहपूर्वक मनाया पं0 नेहरु का जन्मदिन

पं0 नेहरु को श्रद्धांजलि देते डा0 लालजी त्रिपाठी

प्रतापगढ़। भारत रत्न, युगदृष्टा, भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पं0 जवाहर लाल नेहरू का जन्मदिन अध्यक्ष जिला कांग्रेस कमेटी की अध्यक्षता में समारोह पूर्वक मनाया गया। समारोह में उ0प्र0कांग्रेस कमेटी के महासचिव व प्रतापगढ़ प्रभारी मुकुंद तिवारी बतौर मुख्य अतिथि मौजूद रहे। संचालन शहर अध्यक्ष इरफान अली ने किया।

इस अवसर पर अध्यक्ष पद से बोलते हुए जिलाध्यक्ष डॉ0 लालजी त्रिपाठी ने कहा कि नेहरू जी विराट प्रतिभा के साथ ही अभूतपूर्व व्यक्तित्व के इंसान थे। उन्होंने स्वतंत्रता संग्राम के आंदोलन में महत्वपूर्ण योगदान दिया और 10 वर्षों से अधिक समय तक लगातार जेल में बिताये। मुख्य अतिथि पद से बोलते हुए प्रदेश महासचिव मुकुंद तिवारी ने अपनी श्रद्धासुमन अर्पित करते हुए नेहरू जी की उपलब्धियों को साझा किया। इस अवसर पर डा0वी0के0सिंह, वेदान्त तिवारी, इरफान अली, मकरंद शुक्ल, शुवम मिश्र, फतेह बहादुर सिंह, अजीत सिंह, मो0दिलशाद, हुश्नआरा, मो0 इश्तियाक सहित अनेक कांग्रेस जन मौजूद रहे।

रेलवे स्टेशन के वीआईपी लाउंज में आग की अफवाह से हड़कंप

प्रतापगढ़। प्रतापगढ़ रेलवे स्टेशन के प्लेटफार्म एक पर अथितियों के बैठने के लिए बने वीआईपी लाउंज में रविवार को आग लगने की अफवाह से हड़कंप मच गया। अफरातफरी के बीच स्टेशन पहुंचे अधीक्षक ने ताला खोला। उनका चैंबर और लाउंज हाल धुंए से भर गया था। बिजली कर्मचारियों ने बिजली के बोर्ड से प्लक निकाला। तब जाकर कर्मचारियों को राहत मिली। दोपहर में प्रतापगढ़ स्टेशन पर कर्मचारियों ने वीआईपी लाउंज से धुआं निकलते देखा। रविवार का दिन होने से स्टेशन अधीक्षक का दफ्तर बंद था। हल्का हल्का धुआं दफ्तर से भी निकल रहा था। लोगों ने समझा आग लग गई है। उन्हें आनन फानन में इस घटना की सूचना इंचार्ज एसएस शमीम को दी। खबर पाकर वे प्लेटफार्म पर पहुंचे। ताला खोल कर देखा गया तो पता चला कि वीआईपी लाउंज में लगी एसी का पावर प्लक जलकर खाक हो गया था। इसी का धुआं हाल में भर गया था। बिजली कर्मचारियों ने तार को काटकर अलग कर दिया।

जिले में पहुंची अन्नपूर्णा रथ के साथ जिलाध्यक्ष हरिओम मिश्र व अन्य पदाधिकारी

जिले में पहुंची अन्नपूर्णा यात्रा, भाजपाईयों ने किया स्वागत

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। जिले की सीमा पर जैसे ही अन्नपूर्णा यात्रा पहुंची, भाजपाइयों व पुलिस प्रशासनिक अफसरों का जमावड़ा लग गया। अन्नपूर्णा देवी के रथ पर पुष्पवर्षा की गई और आरती हुई। इस दौरान पुरोहितों ने शंख ध्वनि से स्वागत किया। अन्नपूर्णा देवी के रथ के पीछे संस्कृतिक कार्यक्रम भी चल रहा था।

बता दें कि माता अन्नपूर्णा देवी पुनर्स्थापना यात्रा प्रतापगढ़ में रविवार को पहुंची। इस दौरान प्रतापगढ़- अमेठी बार्डर के हरिहरा बाबा मंदिर के पास भव्य स्वागत किया गया। इस दौरान अन्नपूर्णा यात्रा कोहंडौर बाजार पहुंची। उसके बाद गोड़े में पुष्प वर्षा हुई। वहां से निकलकर चिलबिला बाजार श्री लक्ष्मी नारायण मंदिर पहुंची। उसके बाद सदर बाजार मोड़ पर पूर्व विधायक हरिप्रताप सिंह ने रथ का स्वागत किया।

चौक घंटाघर, भाजपा जिला कार्यालय पर पुष्प वर्षा हुई। उसके बाद अन्नपूर्णा यात्रा तुलसी सदन हादीहाल में पहुंची। यहां पर एसडीएम सदर, नगर पालिका के ईओ मुदित सिंह सहित बड़ संख्या में अधिकारियों व नेताओं ने रथ का स्वागत किया। इस दौरान जनसभा का आयोजन किया गया। इस दौरान मुख्य अतिथि के रुप में राज्य मंत्री डा0 नीलकंठ तिवारी ने अपने विचार रखे। उन्होंने कहा कि 100 वर्ष बाद अपने धाम मां अन्नपूर्णा लौट रही हैं।

इस मौके पर भाजपा जिलाध्यक्ष हरिओम मिश्र, भाजपा नेता संतोष मिश्रा, भाजपा के मीडिया प्रभारी राघवेन्द्र शुक्ल समेत कई पदाधिकारी व कार्यकर्ता मौजूद रहे। यहां से निकलकर अन्नपूर्णा यात्रा का सीताराम धाम मंदिर जोगापुर, भुपियामऊ चौराहा, पृथ्वीगंज बाजार, राजापुर बाजार, बभनमई, रानीगंज पावर हाउस, चिरकुटी मोड, रामापुर बाजार, फतनपुर बाजार में पुष्पवर्षा से स्वागत किया। इस दौरान जगह-जगह भाजपा के पदाधिकारियों व कायकताओं द्वारा स्वागत किया गया और मां अन्नपूर्णा देवी के दर्शन लाभ प्राप्त किया गया।

बाल दिवस पर बच्चा बैंक ने बच्चों को बांटे उपहार

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। 14 नवंबर बाल दिवस धूमधाम से मनाया गया। भंगवा गांव में बच्चा बैंक फ्रेंड्स ग्रुप, बीबीएफजी की ओर से आयोजित कार्यक्रम में उपहार पाकर जरूरतमंद बच्चों के चेहरे खिल उठे। 14 नवंबर यानि बाल दिवस। यह दिन बच्चों के लिए खुशियां लेकर आता है।

बीबीएफजी व बच्चा बैंक ने की पहल

बीबीएफजी द्वारा बांटे गये बच्चों को उपहार

आज के दिन स्कूलों में मेले का आयोजन होता है। जिसमें बच्चे अपनी पसंद की दुकानें लगाते हैं। टीचर्स भी सहयोग करते हैं।

मेले में खूब खरीददारी होती है। 14 नवंबर इस बार रविवार को पड़ गया। स्कूल बंद होने से बच्चे मायूस थे। ऐसे में बीबीएफजी जरूरतमंद बच्चों के लिये खुशियां लेकर आया। ग्रुप के द्वारा भंगवा गांव में कार्यक्रम आयोजित कर उन्हें अनेकों उपहार दिये गये। सर्वेश, अंजू, विष्णु, पायल, राज, शुभम, निखिल, नितिन, नैंसी, साहिल, साहिबा उपहार पाकर बड़े खुश नजर आये। ग्रुप के सहयोगी शनि सरोज ने बताया कि बच्चों को उपहार देकर उनकी खुशियों को बढ़ाने का काम किया गया। ग्रुप का उद्देश्य जरूरतमंद बच्चों की मदद कर उनके शिक्षा को स्तर को ऊंचा उठाना है।

आजादी के प्रखर नायक थे पण्डित नेहरू : प्रमोद तिवारी

मनाई गई पं. जवाहर लाल नेहरू की जयंती, दी गई पुष्पांजलि

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। आधुनिक भारत के निमार्ता पं. जवाहर लाल नेहरू की जयंती नगर स्थित क्षेत्रीय विधायक आराधना मिश्रा मोना के कार्यालय पर समारोहपूर्वक मनाई गयी। कार्यक्रम का शुभारंभ कांग्रेसियों ने पं. नेहरू के चित्र पर माल्यार्पण कर किया।

कार्यक्रम को वर्चुअल संबोधित करते हुए सीडब्ल्यूसी मेंबर प्रमोद तिवारी ने कहा कि पं. नेहरू आजादी के आंदोलन के दौर मे देश के एक प्रखर नायक के रूप में सदैव याद रखे जायेगें। वहीं उन्होनें पं. जवाहर लाल नेहरू के भारत के आत्मनिर्भर वैदेशिक चिंतन के तहत गुटनिरपेक्ष आंदोलन तथा पंचशील सिद्धांत को भी भारतीय लोकतंत्र की मजबूती का स्वर्णिम आधार ठहराया। श्री तिवारी ने कहा कि पं. नेहरू ने देश के प्रथम प्रधानमंत्री के रूप मे भारतीय अर्थव्यवस्था को भी ढांचागत योजनाद्ध मजबूती प्रदान की। कार्यक्रम की अध्यक्षता चेयरपर्सन प्रतिनिधि संतोष द्विवेदी व संयोजन विधायक मोना के प्रतिनिधि आशीष उपाध्याय ने किया। संचालन मीडिया प्रभारी ज्ञानप्रकाश शुक्ल ने किया। इस मौके पर वरिष्ठ अधिवक्ता विकास मिश्र, हृदय नारायण मिश्र, रामू मिश्र, राजू पाण्डेय, सिंटू मिश्र, शैलेन्द्र मिश्र, मुरलीधर तिवारी, शास्त्री सौरभ, सोनू मिश्र, विनय पाण्डेय, दयाराम वर्मा, छोटेलाल सरोज, पप्पू तिवारी, महमूद आलम आदि रहे।

सैन्य काफिले पर उग्रवादी हमला आन्तरिक सुरक्षा नीति की असफलता

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। केन्द्रीय कांग्रेस वर्किंग कमेटी के सदस्य एवं आउटरीच एण्ड कोआर्डिनेशन कमेटी के प्रदेश प्रभारी प्रमोद तिवारी ने मणिपुर मे असम राइफल्स के काफिले पर उग्रवादियों द्वारा हमले मे कर्नल विप्लव त्रिपाठी समेत पांच जवानों की शहादत पर गहरी संवेदना प्रकट की है। वहीं श्री तिवारी ने सैन्य काफिले पर इस खौफनाक हमले को केंद्र सरकार की आंतरिक सुरक्षा नीति की असफलता करार दिया है। रविवार को यहां जारी बयान मे प्रमोद तिवारी ने कहा कि आतंकियों द्वारा जिस तरह से सेना के कर्नल और पांच जवानों तथा कर्नल के परिवार के निर्दोष सदस्यों की जघन्य हत्या की गई यह सीधे तौर पर आतंकवादियों की केंद्र सरकार को सीधी चुनौती है। सीडब्ल्यूसी मेंबर प्रमोद तिवारी ने शहीद जवानों को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए केन्द्रीय गृह मंत्री अमित शाह से इस घटना की नैतिक जिम्मेदारी लेते हुए देशवासियों से माफी मांगने को भी कहा है।

रेलवे क्रासिंग पर अण्डरपास निर्माण के लिये ग्रामीणों ने दिया धरना

प्रतापगढ़। नरहरपुर रोड पर स्थित रेलवे क्रासिंग पर अंडरपास निर्माण हेतु चल रहे निरंतर प्रयासों की कड़ी में क्षेत्र के वरिष्ठ नागरिकों द्वारा अनवरत धरना प्रदर्शन का आयोजन किया गया। बड़ी संख्या में क्षेत्रवासियों ने इस कार्यक्रम में अपना योगदान दिया। कांग्रेस प्रत्याशी डा० नीरज त्रिपाठी ने सबसे पहले धरना स्थल पर पहुंच कर इस मुद्दे पर अपनी गंभीरता का परिचय दिया। उन्होंने यह आश्वासन भी दिया कि इस समस्या के समाधान के लिए उन्हें जो कुछ भी करना पड़ेगा वो करेंगे। रेलवे अंडरपास संघर्ष सभा के सक्रिय कार्यकताओं ने आने वाले समय में इस जन आन्दोलन को और मजबूत करने का संकल्प लिया है। उन्होंने कहा कि प्रयागराज-अयोध्या राजमार्ग से विकासखंड मंगरौरा के नरहरपुर ग्रामसभा के मध्य स्थित क्रासिंग पर अण्डर पास न होने की दशा में लगभग 30 गांव प्रभावित है।

फीता काटकर कैबिनेट मंत्री ने किया ऐतिहासिक मेले का शुभारंभ

अखंड भारत संदेश

पट्टी का तीन दिवसीय दशहरा मेला शुरू

दशहरा मेले का फीता काटकर उद्घाटन करते मंत्री मोती सिंह

पट्टी, प्रतापगढ़। रविवार को प्रदेश के ग्रामीण अभियंत्रण एवं समग्र ग्राम विकास मंत्री राजेंद्र प्रताप सिंह मोती सिंह ने पट्टी के ऐतिहासिक मेले का फीता काटकर शुभारंभ किया। इस अवसर पर प्रदेश के काबीना मंत्री मोती सिंह ने कहा है कि पट्टी के ऐतिहासिक दशहरा मेले को सकुशल रूप से सम्पन्न कराने में समिति के पदाधिकारियों के अलावा कस्बे के हिंदू, मुस्लिम, अधिवक्ता राजनैतिक दल सभी का सहयोग रहता है। यह अनूठी मिसाल है।

उन्होंने कहा कि पिछले कुछ वर्षों में इस मेले के सौहार्द्र को बिगाडने की कोशिश कुछ शरारती लोगों द्वारा हुई, लेकिन समरसता, सौहार्द्र, विश्वास के मजबूत बंधन के आगे उनकी कोशिश बेकार हो गई। मेले में आपसी रिश्तों की मजबूत डोर कायम रही। आज उसी संकल्प के बूते पट्टी के इस मेले को इस बार और अधिक खूबसूरती दी गई। सूबे के कैबिनेट मंत्री मोती सिंह ने मेले का उद्घाटन करते हुए कहा कि पट्टी के सौहार्द्र को बिगाडने वालों के खिलाफ कठोर कार्रवाई होगी। अपील करते हुए कहा कि हम सभी का दायित्व बनता है। कि पट्टी का नाम बदनाम न हो, यह हम सबकी नैतिक जिम्मेदारी है।

पट्टी नगर में निकाली गई शोभा यात्रा

पट्टी, प्रतापगढ़। जहां एक तरफ पट्टी नगर में 110 साल पुराने ऐतिहासिक मेले का रविवार को प्रदेश के कबीना मंत्री द्वारा फीता काटकर शुभारंभ किया गया वहीं पर श्री राम लीला समिति कमेटी की तरफ से शोभायात्रा निकालकर संपूर्ण नगर में भ्रमण किया गया। चमन चौक से लेकर पट्टी चौक और पट्टी मेले में शोभा यात्रा निकाली गई गाजे-बाजे के साथ डीजे की धुन पर नाचते गाते हुए लोग दिखाई दिए श्री रामलीला समिति की तरफ से हर वर्ष यह शोभायात्रा निकाली जाती है, जिसमें बड़े उत्साह के साथ पट्टी नगर के व्यापारी दुकानदार और आम जनमानस बड़े उत्साह के साथ इस में भाग लेते हैं।

स्पेशल का टैग हटा, पुराने नंबर से चलेंगी ट्रेनें

प्रतापगढ़। कोरोना काल के समय नंबर बदलकर चलाई गई रेलवे की ट्रेनों से स्पेशल का टैग हटा दिया गया है। अब वे पहले की तरह पुराने नम्बर से चलेगी। ट्रेनों को पहले की तरह रेगुलर कर दिया गया है। प्रतापगढ़ से होकर गुजरने वाली और यहां से चलने वाली ट्रेनों के नम्बर के आगे शून्य यानि जीरो लगाया चलाया जाता रहा। इनको स्पेशल का नाम दिया गया। एक्सप्रेस ट्रेनों के नंबर जीरो से शुरू होते थे। अब जीरो के स्थान पर पहले की तरह एक लगाया जायेगा। जबकि सुपरफास्ट में दो लगेगा। जनता एक्सप्रेस, पंजाब मेल, प्रयाग बस्ती, इंटर सिटी इत्यादि अब पुराने नंबरों से चलेगी। सूत्रों की मानें तो इनका किराया भी पहले वाला ही लगेगा। जनरल टिकट बंद होने वाले हैं। धीरे धीरे व्यवस्था में बदलाव शुरू हो जायेगा। 13 नवम्बर को जारी आदेश में उत्तरीय रेलवे की 154 ट्रेनों के नंबर पहले की तरह कर दिये गये हैं। इसमें प्रतापगढ़ की दो दर्जन से अधिक ट्रेनों के नाम शामिल हैं। जिसमें जनता एक्सप्रेस, मनवर एक्सप्रेस, समेत कई ट्रेनें है। सीनियर डीएसएम लखनऊ मण्डल के अनुसार रेलवे बोर्ड की तरफ से आर्डर निर्गत हो गया है। व्यवस्था में जो भी बदलाव होना है। उस पर काम शुरू कर दिया गया है।

बाइक चोरी की रिपोर्ट दर्ज

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। कोतवाली पुलिस ने नगर के महाविद्यालय प्रांगण से बाइक चोरी को लेकर अज्ञात के खिलाफ केस दर्ज किया है। कोतवाली के पूरे टीकाराम निवासी उत्कर्ष त्रिपाठी ने दी गई तहरीर मे कहा है कि शनिवार को वह सरस्वती विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी महाविद्यालय गया हुआ था। अज्ञात चोर उसकी बाइक उडा ले गये। पीडित की तहरीर पर पुलिस ने शनिवार की रात अज्ञात के खिलाफ चोरी का केस दर्ज किया है।

मासूम का शव मिलने से हडकम्प, हत्या की रिपोर्ट दर्ज

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। सांगीपुर थाना के पिचूरा गांव मे मासूम का शव मिलने से हडकंप मच गया। घटना को लेकर मृतका के पिता की तहरीर पर अज्ञात के खिलाफ पुलिस ने हत्या का केस दर्ज किया है। पिचूरा गांव के पवन कुमार पाण्डेय की दो माह की पुत्री शुक्रवार को अचानक गायब हो गयी। परिजन मासूम की तलाश मे जुट गये। शनिवार की सुबह मासूम का शव घर के सामने कुंए मे उतराया पाया गया। शव मिलने परिजनों मे कोहराम मच गया। सूचना मिलने पर पुलिस मौके पर पहुंची और शव का पंचनामा कर पीएम के लिए जिला मुख्यालय भेजवाया।

श्रीमद भागवत कथा में सुखदेव जी की उत्पत्ति की हुई कथा

किसुनदासपुर में श्रीमद भागवत कथा आज से

अखंड भारत संदेश

किशुनदासपुर में निकली कलश यात्रा में शामिल श्रद्धालु

परियावां, प्रतापगढ़। परियावां पाइकगंज बाजार में चल रहे श्रीमद भागवत कथा में कथा वाचक वृन्दावन के आचार्य श्री पंकज कृष्ण जी महाराज ने अपने मुखार बिंदु से सुखदेव जी की उत्पत्ति, ब्यास नारद संवाद, राजा परिक्षित श्राप व बराह अवतार के बारे मे विस्तार पूवर्क श्रद्धालुओ को कथा सुनाई। सुखदेव श्रीमद भागवत कथा के मूल वाचक थे जिन्होंने सात दिन तक राजा परिक्षित को भागवत कथा सुनाई थी।

राजा परिक्षित को सिरँगी ऋषि द्वारा तच्छक नाग द्वारा मृत्यु होने का श्राप मिला था। कथा वाचक पंकज कृष्ण जी महाराज के मुख से श्रीमद भागवत कथा सुनकर लोग गदगद हो रहे थे कार्यक्रम शाम 6 बजे से रात 10 बजे तक चलता रहा आरती के साथ कथा समाप्त होने पर भक्तों को प्रसाद का वितरण यजमान राम सनेही जायसवाल के कर कमलों द्वारा उनके परिजन प्रसाद वितरण करते रहे, जिसमें सहयोगी के रूप में डॉ सुरेश जायसवल, ब्रजेशचंद जायसवल, सुशील जायसवाल, दिलीप जायसवाल, अजय जायसवाल रमेश जायसवाल आदि लोग रहे। उधर नवाबगंज थाना क्षेत्र के किसुनदासपुर गांव में 15 नवंबर से भक्तराज राजकुमार मिश्र के यहां परम पूज्य आनंद महाराज के मुखार बिंद से श्री मद्भागवत का रसास्वादन होगा जिस उपलक्ष्य में रविवार को भव्य एव विशाल कलश यात्रा पैदल निकाली गई जिसमें समस्त वैष्णव लोग सम्मलित हुए एवम माँ गंगा जी से सनातन धर्म के उत्तरोत्तर वृद्धि एवम सभी के सुख एवम सम्पन्नता की कामना की। महिलाओं ने कालाकांकर घाट पर कलश में जल भरकर पैदल कथा स्थल पहुची। इस मौके पर राकेश मिश्र, राजेन्द्र मिश्र, सुनील मिश्र, संजय शुक्ल, ब्रजेश शुक्ल सहित क्षेत्रवासी व ग्रामवासी मौजूद रहे।

भारतीय राष्ट्रीय पत्रकार महासंघ मे विनोद सिंह अध्यक्ष निर्वाचित

नवनिर्वाचित पदाधिकारियों का तहसील सभागार मे हुआ सम्मान

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। भारतीय राष्ट्रीय पत्रकार महासंघ की तहसील इकाई की कार्यकारिणी का रविवार को गहमागहमी के बीच चुनाव सम्पन्न हुआ। आम सभा मे वरिष्ठ पत्रकार विनोद सिंह को अध्यक्ष तथा साकेत मिश्र को महामंत्री निर्विरोध निर्वाचित किया गया।

इसके अलावा राजकुमार मिश्र रामू वरिष्ठ उपाध्यक्ष, राजीव तिवारी उपाध्यक्ष, अनूप त्रिपाठी कोषाध्यक्ष, राकेश कुमार त्रिपाठी आय व्यय निरीक्षक, मुकेश तिवारी मीडिया प्रभारी, आनंद प्रकाश त्रिपाठी संगठन मंत्री, लवलेश शुक्ल संयुक्त मंत्री एवं इंद्रपाल मिश्र मण्डलीय प्रतिनिधि व संजयमणि शुक्ल तथा राघवेंद्र मिश्र रामू एवं संदीप मिश्र जिला कार्यकारिणी पद पर निर्वाचित हुये। सदस्य कार्यकारिणी प्रेम मिश्र व सुमित त्रिपाठी चुनें गये। सर्वसम्मत से वरिष्ठ पत्रकार उमेश तिवारी को महासंघ की तहसील इकाई का संरक्षक चुना गया। चुनाव परिणामों की घोषणा चुनाव समिति के निर्वाचन अधिकारी बाबा नरेन्द्र ओझा व डा. आशीष सिंह ने किया। चुनाव प्रक्रिया की देखरेख प्रदेश उपाध्यक्ष एवं चुनाव समिति के अध्यक्ष ज्ञानप्रकाश शुक्ल तथा सुरेंद्र तिवारी सागर करते दिखे। इसके बाद निर्वाचित पदाधिकारियों को प्रमाण पत्र वितरण के कार्यक्रम मे माल्यार्पण कर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता निवर्तमान तहसील अध्यक्ष सुरेश मिश्र मदन व संचालन वरिष्ठ पत्रकार विकास मिश्र ने किया। विशिष्ट वक्ता कार्यकारी जिलाध्यक्ष चंद्रशेखर तिवारी ने पत्रकारिता के सामाजिक सरोकार पर प्रकाश डाला। पूर्व अध्यक्ष शैलेन्द्र मिश्र ने स्वागत एवं पूर्व अध्यक्ष देवानंद मिश्र ने आभार जताया। समारोह को वरिष्ठ पत्रकार मनोज सिंह, अखिलेश मिश्र, संतोष तिवारी, सुनील सिंह, जाकिर अली, मनोज त्रिपाठी, राजेन्द्र मिश्र, शत्रुध्न पाण्डेय, आशुतोष मिश्र, डा. जगत वर्मा ने भी संबोधित करते हुए पत्रकारों की एकजुटता पर जोर दिया। इस मौके पर सरवर आलम, अशोकधर द्विवेदी, सुशील सिंह, धर्मेन्द्र मिश्र, शिवकरन चतुवेर्दी, संजीव त्रिपाठी, राहुल मिश्र, अनिल त्रिपाठी महेश आदि रहे।

खबर संक्षेप

199 स्कूलों का राष्ट्रीय उपलब्धी सर्वे 2021 सम्पन्न

भरवारी कौशाम्बी। भारत सरकार की शिक्षा मंत्रालय की तरफ से जिले के 199 स्कूलों का आयोजित राष्ट्रीय उपलब्धी सर्वे 2021 सफलता पूर्वक सम्पन्न हुई।जिला नोडल कॉर्डिनेटर एवं भवन्स मेहता विद्याश्रम के प्राचार्य संजय कुमार श्रीवास्तव तथा केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के प्रतिनिधि तथा जिला नोडल अधिकारी स्वराज भूषण त्रिपाठी की देखरेख में सर्वे का कार्य सम्पन्न कराया गया।नमूने पर आधारित सर्वेक्षण में प्रत्येक चिन्हित केंद्रों से 3,5,8 औ? 10 की कक्षाओं के अधिकतम 30 छात्र सम्मिलित हुए,कुछ विद्यालयों में छात्रों की संख्या 30 से कम रही।परीक्षा के सकुशल सम्पन्न होने पर जिले के नोडल अधिकारी एवं विद्याश्रम के प्राचार्य ने पर्यवेक्षकों एवं फील्ड इन्वेस्टिगेटरों और जिले के शिक्षाधिकारियों के सहयोग के प्रति आभार व्यक्त किया।

केंद्र प्रदेश सरकार पर जमकर बरसे इंद्रजीत सरोज

समाजवादी की सरकार बनने पर बिजली बिल माफ करने की घोषणा कर गए इंद्रजीत सरोज

अखंड भारत संदेश

करारी कौशांबी। करारी कस्बे में एक चुनावी सभा को संबोधित करते हुए उत्तर प्रदेश सरकार के पूर्व काबीना मंत्री सपा नेता इंद्रजीत सरोज ने उत्तर प्रदेश की योगी सरकार और केंद्र की मोदी सरकार पर जमकर भड़ास निकाली है उन्होंने मोदी योगी को झूठ बोलने वाला बताते हुए दोनों सरकारों द्वारा संचालित विभिन्न योजनाओं सहित महंगाई पर विस्तार से चर्चा करते हुए योजनाओं को फ्लॉप बताया है सभा के माध्यम से इंद्रजीत सरोज ने कहा कि समाजवादी की सरकार बनने पर बिजली का बिल माफ कर देंगे जनता के मतदान को लेकर अभी से लाली पाप देना सपा नेता इंद्रजीत सरोज ने शुरू कर दिया गया है कार्यक्रम में सपा के जिलाध्यक्ष दयाशंकर यादव विजमा यादव आसिफ जाफरी कैलाश केसरवानी परवेज अख्तर अंसारी राकेश पटेल विक्की साहू अनुज यादव कड़ा ब्लॉक प्रमुख विवाह यादव शिवा यादव मोहम्मद हमजा इमरान नेता सभासद करारी सहित तमाम लोग मौजूद रहे।

सपा नेता इंद्रजीत सरोज का स्वागत करते उनके समर्थक

दो खंड में बटी दिखाई पड़ रही समाज वादी

कौशांबी इंद्रजीत सरोज के बहुजन समाज पार्टी छोड़कर समाजवादी में शामिल हो जाने के बाद से समाजवादी पार्टी दो खण्ड में बंटी दिखाई पड़ रही है समाजवादी पार्टी के करारी कस्बे में आयोजित कार्यक्रम में स्थानीय दिग्गज नेता भी कार्यक्रम में नहीं दिखाई पड़े हैं इसके पहले के कार्यक्रम में भी समाजवादी पार्टी के तमाम दिग्गज नेता कार्यक्रम में शामिल नहीं हुए लगातार समाजवादी पार्टी के बड़े नेताओं द्वारा कार्यक्रम का बहिष्कार किया जा रहा है इंद्रजीत सरोज के कार्यक्रमों में बहुजन समाज पार्टी से आने वाले नेता आगे आगे दिखाई पड़ रहे हैं यदि समाजवादी पार्टी में इसी तरह चलता रहा तो आने वाले विधानसभा चुनाव में समाजवादी पार्टी का बंटाधार तय माना जा रहा हैं।

न्यूज झरोखा

देश की तरक्की को हमेशा सोचते थे चाचा नेहरू : तलत अजीम

कौशाम्बी। पूर्व प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरु की 132वीं जयंती के अवसर पर बाल दिवस का कार्यक्रम आयोजित कर कसेंदा स्थित एसपी कन्वेंट स्कूल में बहुत धूम-धाम से उनका जन्मदिन मनाया गया।इस मौके पर पूर्व जिलाध्यक्ष कांग्रेस तलत अजीम द्वारा सर्वप्रथम फूलमाला के साथ पूर्व प्रधानमंत्री नेहरू के चित्र पर श्रद्धा-सुमन अर्पित कर उन्हें नमन करते हुए उनके पद चिन्हों पर चलने का संकल्प लिया। पूर्व जिलाध्यक्ष कांग्रेस व पूर्व प्रत्याशी चायल विधानसभा तलत अजीम ने कहा कि श्रद्धेय जवाहर लाल नेहरु राष्ट्र की प्रगति के लिए इतने मुखर थे कि उन्होंने हमेशा देश के बच्चों और युवाओं की प्रगति के लिए परिकल्पना की उन्होंने देश के बच्चों के भविष्य के लिए आजादी के वक्त ही सोंच लिया था और उन्होंने आई आई टी एम्स, इसरो, एचएएल, बी०एच०ई०एल० और ना जाने कितनी संस्थाओं का गठन किया जिसका परिणाम है कि भारत आज चाँद पर पहुँच गया और भारत के युवा पूरे विश्व में देश का नाम ऊँचा कर रहे हैं। पूर्व जिलाध्यक्ष के साथ मौजूद ग्राम प्रधान कसेन्दा सुखलाल यादव ने कहा कि पूर्व प्रधानमंत्री नेहरू आजादी के आंदोलन में जहां 9 साल जेल में रहे व आजादी के पश्चात भारत को दुनिया भर में एक नई पहचान दी व लोकतंत्र स्थापित किया।उन्हें बच्चों से बेहद प्यार था इसलिए आज के दिन को हम लोग बाल दिवस के रूप में भी मनाते है।कार्यक्रम के आयोजन के दौरान बच्चों को पेन पेंसिल रबर कटर चॉकलेट चिप्स आदि का वितरण किया गया।इस मौके पर मजहर लाईक अर्शी मजहर सैफ अजीम श्रवण यादव मैहर लाल कनौजिया विवेक उमेश कुमार राजन व स्कूल की अध्यापिका जैनब समेत स्कूल के अन्य अध्यापक व छात्र छात्राएं सहित बड़ी संख्या में लोग उपस्थित थे।

यूपी कोन्वेंट व पब्लिक इं.का. में धूमधाम से मनाया गया बाल दिवस

कल्यानपर कौशांबी। सिराथ तहसील क्षेत्र के कल्यानपर स्थित यूपी कान्वेंट

एवं पब्लिक इंटर कॉलेज विद्यालय में चाचा नेहरू का जन्मदिन बाल दिवस के रूप में मनाया गया है विद्यालय में बाल मेला खेल प्रतियोगिता और सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन विद्यालय के छोटे-छोटे बच्चों द्वारा किया गया कार्यक्रम की शुरूआत में यूपी कान्वेंट एवं पब्लिक इंटर कॉलेज विद्यालय के प्रबंधक सचिन केसरवानी ने पूर्व प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू चाचा नेहरू के चित्र पर माल्यार्पण कर उन्हें नमन करते हुए उनके आदर्शों पर चलने का संकल्प लिया है इस मौके पर प्रधानाचार्य ज्ञानचंद शुक्ला एच एन गुप्ता रामकुमार पितांबर लाल शिवानी देवी शिफाली देवी योगेंद्र साहनी सहित तमाम लोगों ने चाचा नेहरू के जन्मदिवस पर विस्तार से चर्चा की है।

महिला जागरूकता अभियान के कार्यक्रम में जाहिल शिक्षक के कारनामे से रो पड़ी छात्राएं

अखंड भारत संदेश

कौशांबी। महिला उत्थान एवं जागृति संस्थान के सौजन्य से मिशन शक्ति के तहत कौशांबी विकासखंड क्षेत्र के पहाड़िया उरई अशरफपुर गांव में विशाल महिला बालिका जन जागरूकता अभियान का कार्यक्रम आयोजित किया गया इस कार्यक्रम में स्कूल की छात्र छात्राएं गांव की महिलाएं सहित तमाम लोग शामिल हुए। कार्यक्रम में गांव के सरकारी स्कूल की छात्र छात्राएं पहुँची और सरकारी स्कूल के जाहिल शिक्षक की करतूत बताते हुए तमाम छात्राएं एक साथ रोने लगी कार्यक्रम में पहुंची स्कूली छात्राओं ने कहा कि स्कूल के शिक्षक उनसे अभद्रता और अश्लीलता भरे शब्दों से बात करते हैं महिला सशक्तिकरण के इस कार्यक्रम में सरकारी स्कूल के शिक्षक के सामने छात्राओं का आरोप था कि स्कूल के समय में स्कूल के शिक्षक छात्राओं को अश्लील पिक्चर दिखाते हैं छात्रों का कहना है कि जाहिल गवारो की तरह इस विद्यालय के शिक्षक बात कर

महिला जागरूकता कार्यक्रम में उपस्थित महिलाएं और शिकायत करते ग्रामीण

बार बार जलील करते हैं छात्राओं का कहना है कि सरकारी स्कूल के शिक्षकों के करतूत के चलते उन्हें गांव के सरकारी स्कूल में पढ़ने में शर्मिंदगी महसूस हो रही है छात्रों ने बताया कि विद्यालय में दोपहर भोजन के खाने में खिचड़ी दी जाती है मानक के अनुसार दूध दाल आदि भोजन नहीं दिया जाता है। कौशांबी जनपद का अति पिछड़ा गांव पहाड़िया उरई अशरफपुर में गांव की तमाम महिलाओं ने कोटेदार की शिकायत करते हुए बताया कि गांव में सरकार की योजना का खाद्यान्न नहीं मिल पाता है महिलाओं ने बताया कि सरकारी योजनाएं इस गांव तक नहीं पहुंच पातीं हैं जिससे गांव की महिलाओं का उत्थान नहीं हो सका है इस मौके पर महिला उत्थान एवं जागृति संस्थान की अध्यक्ष अंजना मिश्रा ने कहा कि महिलाओं बच्चियों के अधिकार उत्थान के लिए संघर्ष किया जाएगा और उन्हें सरकार से उनका अधिकार दिलाया

महिला उत्थान एवं जागृति संस्थान ने पहाड़िया उरई अशरफपुर में चौपाल लगाकर महिलाओं बालिकाओं की समस्याओं को सुना

जाएगा उन्होंने कहा कि महिलाओं बच्चियों के उत्थान के लिए सरकार भी प्रयासरत है और विभिन्न योजनाएं संचालित कर महिलाओं और बच्चियों के उत्थान की सरकार ने योजना बनाई है शिक्षक की शिकायत मिलने पर उन्होंने छात्राओं को आश्वासन दिया है कि शिक्षक की शिकायत अधिकारियों से कर उसकी करतूत का खुलासा किया जाएगा कार्यक्रम में महिला उत्थान एवं जागृति संस्थान की अध्यक्ष अंजना मिश्रा अधिवक्ता उच्च न्यायालय निशा त्रिपाठी अधिवक्ता उच्च न्यायालय रघुनंदन सिंह बाल कल्याण समिति की मजिस्ट्रेट (सदस्य) निधि त्रिपाठी लीना अवस्थी अनीशुन नीशा सपा नेत्री रेनू यादव सपा नेत्री नीलम यादव अलका त्रिपाठी ग्राम प्रधान वीरेंद्र चौरसिया सहित इलाके के तमाम गणमान्य व्यक्ति मौजूद रहे।

बेटे ने अपने ही पिता के घर में लगाई आग

अखंड भारत संदेश

कौशाम्बी। चरवा थाना क्षेत्र के बरोलहा गांव में एक बेटे ने अपने ही पिता के घर में आग लगा दी है जिससे पिता के घर की संपत्ति जलकर राख हो गई है मामले की सूचना स्थानीय पुलिस चौकी और थाने में पीड़ित परिवार ने दी है। जानकारी के मुताबिक चरवा थाना क्षेत्र के बरोलहा गांव निवासी रामबालक यादव पुत्र मथुरा प्रसाद यादव का बड़ा बेटा अनिल कुमार उर्फ गब्बर पिता से रंजिश रखता है और इसी रंजिश के तहत अनिल ने 13 नवंबर की शाम को घर में आग लगाने को ललकारा था लेकिन बेटे की बात पर परिजनों ने उसे मजाक समझा आधी रात को बड़े बेटे अनिल ने साथियों के साथ मिलकर पिता के हिस्से की संपत्ति में पेट्रोल डालकर आग लगा दिया जिससे तेज लपटों के साथ उनके घर की संपत्ति जलकर राख हो गई है आग लग जाने के बाद तेज लपटों से उठ रही रोशनी में अनिल कुमार उर्फ गब्बर और उसके साथी को मौके से भागते हुए लोगो ने देखा घटना से बैठक में रखा गृहस्थी का सामान चारपाई तख्त बिस्तर सिंचाई का पाइप उपली छप्पर आदि समान जलकर पूरी तरह से खाक हो गया है और वहां पर खड़ी कार का ऊपरी हिस्सा जल गया है इस अग्निकांड की घटना में 25 हजार रुपए से अधिक का सामान जलकर खाक होने का अनुमान लगाया जाता है आग की तेज लपटें देखकर ग्रामीणों की मदद से परिजनों द्वारा आग बुझाई गयी है लेकिन तब तक बैठक के कमरे में रखा सारा सामान जलकर खाक हो गया है मामले की सूचना स्थानीय पुलिस चौकी और थाना को परिजनों ने रात में दे दी है।

शिक्षकों छात्रों ने निकाली प्रभातफेरी रैली

प्रभात फेरी को हरी झंडी दिखाकर रवाना करते जनपद न्यायाधीश

अखंड भारत संदेश

कौशाम्बी। विधिक साक्षरता जागरूकता कार्यक्रम के अंतर्गत जनपद मुख्यालय में स्कूली छात्रों और शिक्षकों द्वारा प्रभात फेरी रैली निकालकर विधिक साक्षरता के प्रति लोगो को जागरूक करने का प्रयास किया गया है आजादी का अमृत महोत्सव के अंतर्गत 2 अक्टूबर से 14 नवंबर तक जिले के विभिन्न ग्रामीण क्षेत्रों में विधिक साक्षरता शिविर का आयोजन कर लोगों को विधिक साक्षरता से जागरूक किया गया है जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के तत्वाधान में आजादी के अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में डॉ रिजवी कालेज आफ लॉ के समस्त छात्र व शिक्षकगणो के द्वारा जनपद न्यायालय परिसर से मंझनपुर ब्लाक तक प्रभातफेरी रैली निकाली गयी, कार्यक्रम में जनपद न्यायाधीश अध्यक्ष, जिला विधिक सेवा प्राधिकरण ब्रजेश कुमार मिश्र द्वारा प्रभात फेरी को हरी झण्डी दिखाकर रवाना किया गया। प्रभात फेरी रैली का आयोजन जनपद मुख्यालय के न्यायालय परिसर से शुरू हुआ रैली में शामिल छात्र शिक्षकों द्वारा विधिक साक्षरता के प्रति लोगों को जागरूक किया जा रहा था यह रैली मंझनपुर मुख्यालय के ब्लॉक परिसर तक पहुंची कार्यक्रम में डॉ रिजवी कालेज ऑफ लॉ स्व जनार्दन प्रसाद इंटर कालेज श्री दुर्गा देवी इंटर कालेज के छात्र छात्राओं एंव शिक्षकगणों द्वारा हिस्सा लेकर कार्यक्रम को सफल बनाया गया इस मौके पर सुनील मौर्या संजय मिश्रा अजय पाल रावेंद्र कुमार अनूप कुमार मोहित कुमार राहुल कुमार बृजेश कुमार सूरज पांडेय सहित तमाम लोग उपस्थित रहे।

थाना समाधान दिवस में थानेदार ने सुनी समस्याएं

कोखराज कौशांबी। शासन के निर्देश पर थाना समाधान दिवस का आयोजन कोखराज थाने में किया गया जहां थाने में आए पीड़ितों की समस्याओं को थानेदार ने सुना और उसके निस्तारण का निर्देश अधीनस्थ पुलिसकर्मियों और राजस्व निरीक्षकों को दिया है इस मौके पर थानेदार ने कहा कि फरियादियों की समस्याओं का निस्तारण करना शासन की प्राथमिकता में शामिल है इसलिए फरियादियों की समस्याओं के निस्तारण में हीला हवाली लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी उन्होंने कहा कि गुणवत्ता पूर्ण तरीके से फरियादियों की समस्याओं का निस्तारण कर फरियादियों को संतुष्ट किया जाए इस मौके पर महेश चंद्र प्रभारी कोखराज चौकी इंचार्ज गौरव द्विवेदी जमील अहमद चायल कानूनगो ब्रजेन्द्र सिंह सिराथू कानूनगो रियाज अहमद लेखपाल दिलीप, अनुराधा अमृत सिंह अमन श्रवन कुमार धर्मराज उमेश बसंत लाल गुप्ता सहित इलाके के गणमान्य लोग मौजूद रहे थाना समाधान दिवस के अवसर पर पांच फरियादियों ने अपनी फरियाद सुनाई हैं जिसमे तीन शिकायतों का मौके पर निस्तारण किया गया।

विधायक के जन सुनवाई कार्यक्रम में पहुंचे 127 फरियादी

अखंड भारत संदेश

12 शिकायतों का विधायक चायल संजय गुप्ता ने मौके पर किया निस्तारण

जन शिकायतों को निस्तारित व देखते विधायक चायल संजय कुमार गुप्ता

कौशाम्बी। विधायक चायल संजय कुमार गुप्ता ने अपने केंद्रीय कार्यालय भरवारी में रविवार को जन सुनवाई कार्यक्रम किया जन सुनवाई के दौरान 127 शिकायतें प्राप्त हुई ज्यादातर शिकायतें प्रधानमंत्री आवास लड़ाई झगड़े और जमीन विवाद से संबंधित रहे। 12 शिकायतों का विधायक ने मौके पर ही निस्तारण किया शेष बची शिकायतों को निस्तारण हेतु संबंधित विभाग को पत्र के माध्यम से शीघ्र जांच कर निस्तारण हेतु निर्देशित किया । शिकायतकर्ता मे मुख्य रूप से बिट्टन देवी सवार्काजी से, गांधीनगर भरवारी से नानकी देवी,नेता नगर भरवारी से विमला देवी,सकुन पुरानी बाजार भरवारी से,सरोजनी देवी छोटी मौली से प्रधानमंत्री आवास हेतु प्रार्थना पत्र दिया, नेता नगर भरवारी से द्वारिका प्रसाद गौतम ने मोहल्ले के ही राजेश कुमार पर मारपीट का आरोप लगाया, अशोक कुमार काजीपुर से चकबंदी अधिकारियों पर आरोप लगाया कि सही से चकबंदी नहीं किया गया, पुरानी बाजार भरवारी से नर्मदा प्रसाद ने अपने पट्टी दार भैयालाल पर जबरन जमीन कब्जा करने का आरोप लगाया,विधायक ने सभी शिकायतों को गंभीरता से लेते हुए संबंधित विभाग को पत्र के माध्यम से समस्त शिकायतों का निस्तारण हेतु निर्देशित किया।

सराय अकिल पुलिस ने बृद्ध महिला को दिया अनाज व अंगवस्त्र

कौशाम्बी। मिशन शक्ति के तहत महिलाओं की मदद करने का निर्देश शासन ने दिया है इसी क्रम में सराय अकिल पुलिस ने एक वृद्ध महिला को अंग वस्त्र और अनाज देकर सहयोग किया है पुलिस अधीक्षक कौशाम्बी के निर्देशन में सराय अकिल पुलिस ने लाचार व असहाय बृद्ध महिला को खाद्यान व अंगवस्त्र दिया है नगर पंचायत के मौलवीगंज निवासिनी गुजराती देवी उम्र लगभग 80 वर्ष गरीब व असहाय महिला है गुजराती देवी की एक पुत्री है जो कि गूंगी है और उसकी उम्र लगभग 40 वर्ष है पुलिस द्वारा मदद पाकर बृद्ध महिला का चेहरा खिल उठा और पुलिस को आप बीती बताकर रोने लगी बृद्ध महिला की बात सुनकर पुलिस भी भावुक हो गई बृद्ध महिला ने सभी पुलिस कर्मियों के सरपर हाथ रखकर आशीर्वाद दिया इस कार्य मे हेड कांस्टेबल अखिलेश सिंह,आरक्षी आकांक्षा, आरक्षी राजन राम आदि शामिल थे।

शिक्षा के क्षेत्र में पहले पायदान पर स्थापित है भवन्स मेहता

अखंड भारत संदेश

46वा स्थापना दिवस मना रहा है भवन्स मेहता विद्याश्रम

परीक्षा देते छात्र

भरवारी कौशाम्बी। शिक्षा के क्षेत्र में भवंस मेहता विद्याश्रम और महाविद्यालय पहले पायदान पर स्थापित है रविवार को भवंस मेहता विद्याश्रम द्वारा स्थापना दिवस के अवसर पर उपस्थित लोगों को संबोधित करते हुए प्रधानाचार्य ने उक्त बातें कही। भवन्स मेहता विद्याश्रम भरवारी की स्थापना 14 नवंबर 1976 को हुई थी। इन बीते हुए 45 सालों में भवन्स मेहता विद्याश्रम ने पूरे जिले में अपने आप को शिक्षा के क्षेत्र में पहले पायदान पर स्थापित किया है और आगे और भी बेहतर करने की कोशिश करता रहेगा भवन्स मेहता विद्याश्रम रविवार को 46वा स्थापना दिवस मना रहा है प्रधानाचार्य ने निदेशक संदीप सक्सेना सभी शिक्षकों मैनेजमेंट कमेटी के सभी सदस्यों और कर्मचारियों की तरफ से सभी अभिभावकों और बच्चों को विद्याश्रम के स्थापना दिवस व बाल दिवस पर हार्दिक बधाई दिया है विद्यालय की स्थापना दिवस के अवसर पर प्रधानाचार्य ने कहा कि मैं शिक्षकों कमेटी के सदस्यों कर्मचारियों अभिभावकों और बच्चों से आशा करता हूँ कि आप सबका ऐसे ही सहयोग और योगदान मिलता रहेगा और भवंस मेहता विद्याश्रम शिक्षा के क्षेत्र में बेहतर ख्याति प्राप्त करता रहेगा।

पुलिस को देखते ही भागने लगे जुआरी मौके से छह गिरफ्तार

कौशाम्बी। चरवा थाना क्षेत्र के अमनी लोकीपुर गांव में लंबे समय से जुआ की फड़ संचालित हो रही थी मामले की सूचना थाना पुलिस को मिली मौके पर थाना पुलिस पहुंची तो भगदड़ मच गई जुआरी मौके से भागने लगे कई जुगाड़ी भाग जाने में सफल रहे लेकिन जुआ खेल रहे 6 जुआरियों को चरवा पुलिस ने गिरफ्तार किया है यह जुआरी जुआ की फड़ में बैठकर हार जीत का दाव लगा रहे थे मुखबिर की सूचना पर मौके पर पहुंची पुलिस ने जुआरियों को ताश की गड्डी नगद नोटों के साथ गिरफ्तार किया है। चरवा थाना क्षेत्र के अमनी लोकीपुर गांव में काफी समय से जुआ की फड़ का संचालन एक स्थानीय व्यक्ति के निर्देशन में हो रहा था जिसकी सही जानकारी मिलने पर शनिवार को चरवा पुलिस दलबल के साथ जुआ की फड़ पर पहुंची है पुलिस के पहुंचने की सूचना जुआरियों को लग गई जिस पर जुआरी भागने लगे लेकिन पुलिस ने जुआ खेल रहे 6 जुआरियों को नगद रुपए और ताश की गड्डी के साथ धर दबोचा जिसकी जमा तलाशी में कितनी रकम बरामद हुई है थाना पुलिस द्वारा अभी कुछ स्पष्ट नहीं किया गया बताया जाता है कि एक जुआरी को पुलिस ने थाने से छोड़ दिया है।

खून का प्यासा है यमुना नदी के बालू का अवैध खनन

बालू के अवैध खनन को लेकर यमुना नदी के उमरवल घाट पर दो पक्षों में जमकर चले लाठी डंडे

बालू घाट में विवाद करते दो समुदाय के लोग

कौशांबी। यमुना नदी से बालू का अवैध खनन खून का प्यासा है बीते तीन दशक के बीच अवैध खनन के वर्चस्व में दर्जनों वारदात हो चुकी हैं तमाम लोगों की हत्या हो चुकी है कई बार प्राणघातक हमले हो चुके हैं लेकिन यमुना नदी के बालू का अवैध खनन नहीं बंद हो सका है बालू के खनन में माफियाओं का वर्चस्व है जो सत्ता के नेताओं के संरक्षण में पलते हैं पुलिस और अधिकारी भी बालू माफियाओं से अपना हिस्सा वसूल रहे हैं जिससे बालू के अवैध खनन में लगे माफियाओं पर ठोस कार्रवाई नहीं हो पाती है कहने को तो बालू माफियाओं के ऊपर अवैध खनन का मुकदमा सीबीआई द्वारा दर्ज कराया गया है लेकिन मुकदमा दर्ज कराने के बाद बालू माफियाओं की गिरफ्तारी सीबीआई भी भूल गई है जिले में बालू का अवैध खनन खून का प्यासा है पिपरी थाना क्षेत्र के उमरवल घाट पर बालू के अवैध खनन को लेकर षनिवार दोपहर दो गुटों में जमकर लाठी-डंडे चले हैं बालू लोडिंग करने गए ड्राइवरों द्वारा बताया गया है कि मौके पर अवैध तमंचे से फायरिंग की गई है जिसकी आवाज बखूबी वीडियो में सुनाई दे रही है,यमुना घाटों पर अवैध खनन पर इस तरह की वारदात कोई नई बात नहीं है पुलिस और जिम्मेदारों की मिलीभगत के चलते खनन माफिया बेखौफ तरीके से अवैध खनन करते रहते हैं सराय अकिल पिपरी महेवाघाट पश्चिम शरीरा कौशाम्बी थाना क्षेत्र से अवैध बालू लेकर रोजाना दिन रात दोनों समय ट्रक गुजरती है पुलिस कार्यवाही के नाम पर आंखें बंद कर अवैध वसूली में मस्त रहती है यही वजह है कि खनन माफिया बेखौफ तरीके से राजस्व को हानि पहुंचा कर मालामाल हो रहे हैं और ओवरलोड बालू लदे वाहन सड़कों पर फरार्टे भरते रहते है।

सम्पादकीय

भ्रष्टाचार के गढ़

नोएडा के सुपरटेक मामले में भ्रष्टाचार की जांच के लिए बनाए गए विशेष जांच दल (एसआइटी) ने काम शुरू कर दिया है। यह जांच दल अब नोएडा विकास प्राधिकरण के उन अधिकारियों से पूछताछ करेगा जो सुपरटेक मामले से जुड़े रहे थे। साथ ही सालों पुरानी संबंधित फाइलें भी खंगाली जाएंगी, ताकि पता चल सके कि किस-किस स्तर पर प्राधिकरण के अधिकारी भवन निमार्ता पर मेहरबान रहे और उन्हें बेजा फायदा पहुंचाते रहे। इस कवायद का कोई फायदा तभी होगा जब जांच दल तत्परता और निष्पक्षता के साथ मामले की तह तक जाएगा और तथ्यों का पता लगा कर दोषियों को कठघरे में लाने के प्रयास करेगा। और तभी भविष्य में भवन निमाताओं की मनमानी पर लगाम लग सकेगी। गौरतलब है कि पिछले हफ्ते सर्वोच्च अदालत ने नोएडा में बनी सुपरटेक की चालीस-चालीस मंजिला दो इमारतों को गिराने का निर्देश दिया था। ये दोनों इमारतें जिस तरह से खड़ी कर दी गई थीं, वह अपनी तरह का कम गंभीर मामला नहीं है। सुपरटेक का मामला बता रहा है कि जमीनों के आंवटन से लेकर भवन निर्माण तक में प्राधिकरण के अधिकारियों और भवन निमाताओं की सांठगांठ कितनी जबर्दस्त है। इससे यह भी पता चलता है कि अरबों रुपए के भवन निर्माण कारोबार में भवन निमार्ता किस तरह से प्राधिकरण के अधिकारियों को पैसे के बल पर अपने कब्जे में करके उनसे अपने मनमुताबिक फैसले करवाते चले जाते हैं। इससे प्राधिकरण को भारी राजस्व हानि तो होती ही है।

निसंदेह यह अदालत के फैसले से बने दबाव का ही नतीजा है कि जांच को लेकर प्रदेश सरकार को सक्रिय होना पड़ा। सर्वोच्च अदालत ने सुपरटेक की दोनों इमारतों को गिराने के साथ ही प्राधिकरण के उन अधिकारियों के खिलाफ कार्रवाई करने के आदेश भी दिए हैं जिनके कार्यकाल में सब होता चला गया। इसलिए अब प्रदेश सरकार 2004 से 2017 के बीच नोएडा प्राधिकरण में तैनात उन अधिकारियों की सूची बनवा रही है जो सुपरटेक मामले से जुड़े रहे थे। सुपरटेक का मामला सिर्फ प्राधिकरण की ही नहीं, बल्कि राज्य सरकार की कार्य संस्कृति पर भी सवाल खड़े करता है। इससे तो लगता है कि सरकार में ऊपर से नीचे तक कोई यह देखने वाला नहीं है कि कहां क्या गलत हो रहा है। सवाल यह है कि क्या प्राधिकरणों में कहीं कोई निगरानी का तंत्र नहीं हैं और अगर हैं तो फिर वर्षों तक इस महकमे का निगरानी तंत्र करता क्या रहा शीर्ष अधिकारियों को क्या जरा भी भनक नहीं लग पाई कि उनके मातहत किस तरह से नियमों की धज्जियां उड़ाते हुए भवन निमाताओं के हितों को पूरा कर रहे हैं ऐसी इमारतें कोई एक दिन में तो खड़ी हो नहीं जातीं। जाहिर है, प्राधिकरण के अधिकारी मेहरबान बने रहे और भवन निमार्ता अपना काम करते गए। मामला सिर्फ सुरपरटेक तक ही सीमित नहीं है। नोएडा में कई नामी बिल्डरों ने घर खरीदने वालों के साथ जिस तरह का धोखा किया है, वह भवन निमाताओं और प्राधिकरण के अधिकारियों की सांठगांठ का ही नतीजा है। आज भी नोएडा में डेढ़ लाख और ग्रेटर नोएडा में दो लाख लोगों को फ्लैटों का कब्जा नहीं मिला है। पिछले डेढ़ दशक के दौरान राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र में भवन निर्माण कारोबार तेजी से पनपा है। भवन निमाताओं को जमीनों के आवंटन में भारी भ्रष्टाचार की खबरें सामान्य बात हो चली हैं। ज्यादा हैरानी की बात तो यह है कि पिछले डेढ़ दशक में कई सरकारें आईं, लेकिन प्राधिकरणों में फैले भ्रष्टाचार पर लगाम लगाने का साहस किसी ने नहीं दिखाया। इसी का नतीजा है कि आज प्राधिकरण भ्रष्टाचार के गढ़ में तब्दील हो गए हैं।

आरोप-प्रत्यारोप की बजाय पड़ोसी राज्य मिलकर प्रयास करें तो यमुना साफ हो जायेगी

ललित गर्ग

यमुना की प्रदूषण-मुक्ति के लिये सरकार के साथ-साथ जन-जन को जागना होगा। यमुना प्रदूषण से निपटने के लिए राष्ट्रीय हरित पंचाट, केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड जैसे निकाय औद्योगिक इकाइयों के लिए समय-समय पर सख्त नियम बनाते रहे हैं। यमुना की दिन-ब-दिन बिगड़ती हालत एवं बढ़ते प्रदूषण पर पिछले चार दशकों से लगभग हर सरकार कोरी राजनीति कर रही है, प्रदूषणमुक्त यमुना का कोई ईमानदार प्रयास होता हुआ दिखाई नहीं दिया है। क्या दिल्ली में कोई ऐसी जगह है जहाँ आपको यमुना का साफ पवित्र निर्मल जल दिखाई दे क्योंकि जहाँ भी आप जाएंगे, हर जगह यमुना का पानी काला एवं झागभरा ही नजर आएगा। यमुना की साफ-सफाई के नाम पर कई हजार करोड़ रुपए बहा दिए गए हैं, लेकिन लगता है सब भ्रष्टाचार की भेंट चढ़ गये। यही कारण है कि इस नदी में प्रदूषण की स्थिति में कोई सुधार नहीं हुआ है बल्कि साल-दर-साल पानी और गंदा व यमुना की स्थिति खराब ही हुई है। राजधानी दिल्ली की जनता केवल वायु प्रदूषण के कहर से ही नहीं जूझ ही रही है, बल्कि अब यमुना के जहरीले पानी ने भी मुश्किलें खड़ी कर दी हैं। लम्बे समय से यमुना के पानी में अमोनिया की बढ़ी मात्रा ने चिंताएं बढ़ा दी हैं। दिल्ली में यमुना में पानी में बर्फ के पिंडों की तरह झाग तैर रहे हैं। पानी अत्यधिक जहरीला हो चुका है। इस कारण कई इलाकों में पीने के पानी की आपूर्ति भी नहीं हो पा रही है। लोगों को जल संकट का सामना करना पड़ रहा है। हालांकि यमुना में अमोनिया का स्तर बढ़ने और पानी के जहरीले होने की समस्या कोई आज की नहीं है। ऐसा पिछले कई सालों से देखा जा रहा है। दिल्ली का जीवन भी कभी यमुना से जुड़ा था, कभी यह दिल्ली यमुना के कारण ही बसी थी। यह एक इतिहास सम्मत तथ्य है कि राजधानी के रूप में दिल्ली के स्थान को यमुना के आकर्षक स्वरूप और पेयजल के लिए मीठे पानी की उपलब्धता के कारण चुना गया था। इतना ही नहीं, यमुना ने एक शहर के रूप में राजधानी के विकास में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। लगभग सभी ऐतिहासिक विवरणों में दिल्ली के एक प्रमुख संसाधन के रूप में यमुना की सुंदरता, धार्मिक आस्था एवं शुद्ध पेयजल का उल्लेख है। लेकिन इस जीवनदायिनी यमुना को हमने अपने लोभ, स्वार्थ, लापरवाही के कारण जहरीला बना दिया है। कारखानों से निकलने वाले तेल, कैमिकल, धुंआ, गैस, एसिड, कीचड़, कचरा, रंग ने सबसे अधिक इसे प्रदूषित किया है। अगर यह इसी प्रकार चलता रहा तो एक दिन ऐसा आएगा जब दिल्ली की जनता को शुद्ध पानी नहीं मिलेगा। ज्यादा चिन्ताजनक है कि बीमारियों को पनपाने में यमुना का प्रदूषण मुख्य कारण होगा।

इस गंभीर होते यमुना के प्रदूषण एवं जहरीले होने के बावजूद कोई सार्थक एवं प्रभावी उपचार होता हुआ दिखाई नहीं दे रहा है। लंबे समय से यह समस्या बनी रहने के बावजूद इसके समाधान का रास्ता निकालने को कोई तैयार नहीं है। बल्कि यमुना के नाम पर राजनीतिक दल जमकर राजनीति करते हैं, एक दूसरे दलों एवं पड़ोसी राज्य एक-दूसरे पर आरोप-प्रत्यारोप लगाकर अपनी जिम्मेदारी से पला झाड़ लेते हैं। यमुना के प्रदूषण के लिए दिल्ली सरकार पड़ोसी राज्यों- हरियाणा और उत्तर प्रदेश को इसका जिम्मेदार ठहरा रही है, तो दूसरी ओर ये राज्य इसके लिये दिल्ली सरकार की गलत नीतियों एवं उदासीनता को दोषी मानते हैं। कुल मिलाकर यमुना का यह संकट राजनीति के दुश्चक्र में उलझ कर रह गया है। ऐसे में बड़ा सवाल यह है कि यमुना प्रदूषण मुक्त कैसे हो लगातार बढ़ता दिल्ली का जल संकट इन स्थितियों में कैसे समाधान पाये जब आपके द्वार की सीढ़ियां मैली हैं तो अपने पड़ोसी की छत पर गन्दगी का उलाहना मत दीजिए। हमें कुछ ऐसा करना होगा ताकि मरने के बाद स्वर्ग में रहने की बजाय मरने से पहले स्वर्ग रहे। विडम्बनापूर्ण त्रासदी है कि दिल्ली, हरियाणा और उत्तर प्रदेश जैसे राज्यों की औद्योगिक इकाइयों से जो अपशिष्ट और जहरीले रसायन निकलते हैं, उन्हें यमुना में छोड़ दिया जाता है। वैसे यह समस्या देश की तमाम छोटी-बड़ी नदियों के साथ है। नदियों के प्रति हमारा यह उपेक्षापूर्ण रवैया हमारी जीवनरक्षक नदियों को जहरीला बनाता रहा है। ये नदियां जिन शहरी इलाकों खासतौर से औद्योगिक शहरों से गुजरती हैं, वहां का अपशिष्ट इनमें बहा दिया जाता है। इसलिए आज ज्यादातर नदियां खतरनाक स्तर तक प्रदूषित हो चुकी हैं। दिल्ली की समस्या इसलिए ज्यादा गंभीर एवं घातक होती जा रही है कि एक यमुना ही तो है जो दिल्ली के लिये शुद्ध जल आपूर्ति का साधन है। दिल्ली में साफ पानी के स्रोत काफी कम हैं, ऐसे में यमुना नदी पर निर्भरता जरूरत से ज्यादा रहती है। राजधानी दिल्ली में साफ पानी की बड़ी समस्या है। सिर्फ जगह बदलती है, लेकिन गंदे पानी की शिकायत सब जगह समान रूप से देखने-सुनने को मिल जाती है। इसकी एक बड़ी वजह यमुना नदी का वो गंदा पानी भी है जो समय के साथ ना सिर्फ और ज्यादा विषैला होता जा रहा है, बल्कि कई बीमारियों का कारण भी बन रहा है। यमुना में प्रदूषण का स्तर खतरनाक है और दिल्ली से आगे जा कर ये नदी मर जाती है। विशेषज्ञों का मानना है कि इसकी वजह है औद्योगिक प्रदूषण, बिना उपचार के कारखानों से निकले दूषित पानी को सीधे नदी में गिरा दिया जाना, यमुना किनारे बसी आबादी मल-मूत्र और गंदगी को सीधे नदी में बहा देती है। साथ ही धार्मिक वजहों के चलते तमाम मूर्तियों व अन्य अवशिष्ट पूजा सामग्री का नदी में विसर्जन करने की परम्परा। औद्योगिक प्रदूषण, मल-मूत्र और धार्मिक सामग्री का नदी में विसर्जन प्रदूषण की मुख्य वजह हैं, लेकिन इनमें सबसे खतरनाक है रासायनिक कचरा। ठंड के मौसम में यह समस्या विकराल रूप धारण कर लेती है। ऐसे में यमुना को प्रदूषित होने से कैसे बचाया जा सकता है यमुना की प्रदूषण-मुक्ति के लिये सरकार के साथ-साथ जन-जन को जागना होगा। सरकार की सख्ती एवं जागरूकता ज्यादा जरूरी है। यमुना प्रदूषण से निपटने के लिए राष्ट्रीय हरित पंचाट, केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड जैसे निकाय औद्योगिक इकाइयों के लिए समय-समय पर सख्त नियम बनाते रहे हैं। पर लगता है कि इनके दिशानिदेर्शों पर अमल करवाने वाला तंत्र कमजोर साबित हो रहा है। वरना क्या कारण है कि सख्ती के बाद भी औद्योगिक कचरा और जहरीले रसायन यमुना में बहाए जा रहे हैं औद्योगिक इकाइयों को सख्त हिदायत है कि वे तरल कचरा नदियों में प्रवाहित न करें। पर जिस सरकार, उसके महकमे और कानून प्रवर्तन एजेंसी पर इसे सुनिश्चित करवाने की जिम्मेदारी है, लगता है वह काम ही नहीं कर रही। यह एक तरह का भ्रष्टाचार है, गैर-जिम्मेदारी है। यमुना के प्रदूषण से निपटने के लिए दिल्ली, हरियाणा और उत्तर प्रदेश को मिलकर काम करने की जरूरत है, न कि राजनीति करने की। जब तक तीनों राज्य साथ बैठ कर चर्चा नहीं करेंगे, कार्ययोजनाओं पर कदम नहीं बढ़ाएंगे और एक दूसरे पर आरोप मढ़ते रहेंगे तो कोई नतीजा नहीं निकलने वाला, बल्कि दिनोंदिन यह संकट गहराता जाएगा। कुछ समस्याएं राजनीतिक नफा-नुकसान से ऊपर होती हैं। उन्हें राजनीतिक नजरिये से नहीं, मानवीय नजरिये से देखना होता है। अन्यथा जीवन मुश्किल ही नहीं, असंभव हो जायेगा। मनुष्य के भविष्य के लिए यह चिन्ता का बड़ा कारण है। दिल्ली की यमुना इसी प्रकार अगर प्रभावित एवं प्रदूषित होती रही तो अगली शताब्दी में दिल्ली की बहुत कुछ विशेषताएं समाप्त हो जाएंगी। क्या आप ऐसी सुबह चाहेंगे जब दिल्ली का जीवन घोर अंधेरों से घिरा हो विडम्बना यह है कि इस ओर हमारे दायित्व के प्रति हम सबने आंखें मूंद रखी हैं। हिंदुस्तान का जिस तरह का मौसम चक्र है उसमें हर नदी चाहे वो कितनी भी प्रदूषित क्यों न हो, साल में एक बार वर्षा के वक्त खुद को फिर से साफ करके देती है, पर इसके बाद हम फिर से इसे गंदा क्यों कर देते हैं अगर दिल्ली की यमुना को अप्रदूषित करना है तो एक-एक व्यक्ति को उसके लिए सजग होना होगा। प्रकृति ने जो हमें जीवनदायिनी नदियां दी है जो रोज नया जीवन देती हैं, उसे हम प्रदूषित नहीं करें।

त्रिपुरा में तृणमूल कांग्रेस की कमजोर कड़ी है संगठन

सागरनील सिन्हा

कांग्रेस के पास अभी भी वोट बेस है, जो 2018 के राज्य विधानसभा चुनाव में भाजपा की ओर स्थानांतरित हो गया था, लेकिन 2019 के लोकसभा चुनावों में पार्टी में एक वर्ग वापस आ गया। हालांकि टीएमसी कई जगहों पर कांग्रेस के मतदाताओं को आकर्षित करने में सफल रही है, लेकिन तथ्य यह है कि अनुकूल मीडिया घरानों के एक वर्ग से शीर्ष कवरेज प्राप्त करने के बावजूद पार्टी अपने मौजूदा परिदृश्य में आगामी 2023 के राज्य विधानसभा चुनावों के लिए अभी भी एक कमजोर खिलाड़ी है। अभी तक, राज्य में लड़ाई भाजपा और माकपा के नेतृत्व वाले वाम मोर्चे के बीच है। तृणमूल कांग्रेस त्रिपुरा में पैर जमाने के लिए फिर से प्रयास कर रही है, जहां पार्टी के राष्ट्रीय महासचिव अभिषेक बनर्जी ने 31 अक्टूबर को अपनी पहली रैली की। इसने पूर्वोत्तर राज्य में पार्टी का विस्तार करने के लिए अतीत में कई प्रयास किए थे। पश्चिम बंगाल में तीसरी बार मुख्यमंत्री के रूप में पार्टी सुप्रीमो ममता बनर्जी की वापसी के बाद, टीएमसी को पता है कि बंगाल के बाहर पार्टी को एक बार फिर फैलाने का यह सबसे अच्छा समय है। हालांकि टीएमसी एक मान्यता प्राप्त राष्ट्रीय पार्टी है, लेकिन इसकी राष्ट्रीय पार्टी का दर्जा खतरे में है और 2024 में चुनाव आयोग द्वारा इसकी समीक्षा किए जाने पर यह स्थिति खोने की उम्मीद है। ममता की राष्ट्रीय महत्वाकांक्षाओं के लिए राष्ट्रीय पार्टी का दर्जा बनाए रखना महत्वपूर्ण है। अपनी पहली रैली में, अभिषेक ने घोषणा की कि 2023 के राज्य विधानसभा चुनावों में, टीएमसी सत्तारूढ़ भाजपा और मुख्य विपक्षी माकपा को हराकर राज्य में सरकार बनाएगी। जैसा कि अपेक्षित था, अभिषेक की रैली ने मीडिया का ध्यान आकर्षित किया। हालांकि रैली इतनी सफल नहीं थी, पार्टी को त्रिपुरा उच्च न्यायालय को धन्यवाद देना चाहिए, जिसने आदेश दिया था कि रैली केवल 500 लोगों तक सीमित हो। इसी आदेश ने टीएमसी का चेहरा बचा लिया।

पार्टी की रणनीति मीडिया की सुर्खियां बटोरने की ज्यादा लगती है और अब तक वह ऐसा करने में सफल रही है। अगरतला में अभिषेक की मौजूदगी में पश्चिम बंगाल के पूर्व राज्य मंत्री राजीव बनर्जी का पार्टी में वापस आना इस बात का संकेत है। बंगाल विधानसभा चुनावों से पहले, राजीव टीएमसी छोड़ कर भाजपा में शामिल हो गए और अपनी डोमजूर सीट से चुनाव लड़ा, जहां वह बड़े अंतर से हार गए। हालांकि उन्हें हाल ही में भगवा पार्टी की राष्ट्रीय कार्यकारी समिति का सदस्य बनाया गया था, लेकिन उन्होंने राज्य चुनावों में भाजपा की हार के बाद टीएमसी में लौटने के अपने इरादे के पर्याप्त संकेत दिए थे। दूसरी ओर, टीएमसी राजीव को स्वीकार करने के लिए अनिच्छुक थी, जिसे चुनाव प्रचार के दौरान पार्टी नेताओं द्वारा देशद्रोही कहा गया था। यह सच है कि राजीव ने अतीत में त्रिपुरा में पार्टी के आधार को फैलाने में पार्टी के वरिष्ठ नेता मुकुल रॉय की सहायता की थी। लेकिन यह कड़वी सच्चाई को छिपा नहीं सकता है कि टीएमसी द्वारा राजीव को त्रिपुरा में पार्टी में फिर से शामिल होने के लिए कहने के पीछे एक मुख्य कारण पश्चिम बंगाल में पार्टी के कई नेताओं, कार्यकताओं और समर्थकों के आरक्षण को ध्यान में रखना है। यह बात तब खुलकर सामने आई जब पार्टी के वरिष्ठ नेता और लोकसभा सांसद कल्याण बनर्जी ने रजीब को दोबारा शामिल किए जाने पर खुलकर नाखुशी जाहिर की। अगरतला में रजीब के पार्टी में शामिल होने का एक अन्य कारण राज्य में भाजपा नेताओं के असंतुष्ट वर्ग को एक संदेश भेजना था। यह संदेश अगरतला निर्वाचन क्षेत्र के सुदीप बर्मन के नेतृत्व वाले बागी भाजपा विधायकों के लिए था। अन्य असंतुष्ट विधायक आशीष कुमार साहा, बरबामोहन त्रिपुरा और दीबा चंद्र हरंगखाल हैं। यह नहीं भूलना चाहिए कि सुदीप और उनके सहयोगी पहले 2016 में कांग्रेस छोड़कर टीएमसी में शामिल हुए थे और बाद में एक साल के भीतर टीएमसी छोड़कर बीजेपी में शामिल हो गए थे। रैली में सुदीप के एक सहयोगी, सूरमा निर्वाचन क्षेत्र के विधायक आशीष दास टीएमसी में शामिल हो गए। आशीष अपने विधायक को खोने जा रहे हैं क्योंकि राज्य विधानसभा के अध्यक्ष रतन चक्रवर्ती ने पहले ही दलबदल विरोधी कानून के तहत कार्रवाई शुरू कर दी है। सूरमा निर्वाचन क्षेत्र में, अधिकांश भाजपा समर्थक आशीष के साथ नहीं हैं और विपक्षी दलों के बीच, यह केवल सीपीआई (एम) है, जिसके पास कम से कम जमीन पर एक दृश्यमान संगठन है। यदि वर्तमान स्थिति जारी रहती है, तो सूरमा निर्वाचन क्षेत्र में उपचुनाव के मामले में, मुकाबला भाजपा और सीपीआई (एम) के बीच होने की संभावना है, जिसमें टीएमसी तीसरा खिलाड़ी है। चल रहे निकाय चुनावों में, टीएमसी सभी 334 सीटों के लिए उम्मीदवार उतारने में विफल रही है और केवल 124 सीटों पर चुनाव लड़ रही है। अगरतला क्षेत्र में अपना प्रभाव रखने वाले विद्रोही सुदीप खेमे से मिले गुप्त समर्थन के कारण अगरतला नगर निगम में वह सभी 51 सीटों पर उम्मीदवार उतारने में सफल रही है। एएमसी के अलावा, पार्टी मुख्य रूप से केवल 3-4 नगर निकायों में चुनाव लड़ रही है और बाकी निकायों में, वह केवल चयनित सीटों से चुनाव लड़ रही है। अतीत के कड़वे अनुभव को देखते हुए, सुदीप खेमा और टीएमसी नेतृत्व दोनों इस बार एक नए समझौते में प्रवेश करने के लिए सतर्क हैं। सुदीप खेमा पहले से ही भाजपा नेतृत्व द्वारा हाशिए पर है और यदि यही स्थिति बनी रहती है, तो खेमे के पास भगवा पार्टी से बाहर निकलने के अलावा कोई रास्ता नहीं है। यदि टीएमसी एएमसी में बेहतर प्रदर्शन करती है, तो सुदीप खेमे के शक्तिशाली होने की संभावना है और वह स्थिति में होगा बीजेपी और टीएमसी दोनों के साथ डील करें। तथ्य यह है कि टीएमसी को अभी राज्य भर में संगठन बनाना बाकी है। इसके अलावा राज्य में अभी भी एक विश्वसनीय चेहरे का अभाव है। पहले से ही पार्टी की राज्य संचालन समिति के अध्यक्ष सुबल भौमिक और पार्टी के पूर्व प्रदेश अध्यक्ष आशीष लाल सिंह के बीच अनबन की अफवाहें हैं। इसके अलावा, सुबल के सुदीप के साथ अच्छे संबंध नहीं हैं, जिसे टीएमसी ने लुभाया है। पूर्व में सुबल ने तत्कालीन प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष सुदीप से नाखुश होकर कांग्रेस छोड़ दी थी और अपनी पार्टी बनाई थी- त्रिपुरा ग्रामीण कांग्रेस, जो राज्य की राजनीति में जगह बनाने में विफल रही। यह भी एक तथ्य है कि सुदीप खेमे की राज्य भर में मजबूत उपस्थिति नहीं है और अतीत में भी, सुदीप के नेतृत्व में 6 कांग्रेस विधायकों के शामिल होने के बावजूद, टीएमसी को राज्य भर में बड़े पैमाने पर समर्थन की उम्मीद नहीं थी। राज्यसभा सांसद सुष्मिता देव असम से नेता हैं और क्या राज्य की जनता उन्हें पूरे दिल से चुनाव में चेहरे के रूप में स्वीकार करेगी यह भी एक बड़ा सवाल है।

थोड़ा माओ से सबक लें मोदी

पुष्परंजन

चीनी इतिहासकार वू चियुआंग बताते हैं कि द ग्रेट लीप के दुष्परिणामों की वजह से 5 करोड़ 60 लाख लोग मारे गये। हालांकि चीनी लीडरशिप इस सवाल पर चुप्पी साधे हुए है कि 1962 में जब देश अकाल और भयानक आर्थिक संकट से गुजर रहा था, तब भारत-चीन युद्ध छेड़ने की जरूरत क्या थी शांघाई से शाओशान के लिए 11सौ किलोमीटर का सफर। केवल यह महसूस करने के वास्ते कि माओ का बचपन किस माहौल में गुजरा था। बस ठान लिया था कि सबसे पहले माओ की जन्मस्थली जाना है, फिर पेइचिंग का थ्येनआनमन स्कवायर, जहां वो दफन हैं। सेंट्रल चाइना स्थित शाओशान। वहां पहुंचा तो, फूस और खपरैल का दो मंजिला दिव्य मकान, यहीं 26 दिसंबर 1893 को जन्मे थे माओत्से तुंग। सामने खेत, नहर और पार्श्व में पहाड़। हुनान प्रांत की छोटी सी काउंटी शाओशान। बमुश्किल एक लाख लोगों की आबादी होगी, मगर माओ की जन्मस्थली के कारण उनके शैदाइयों के लिए तीर्थस्थल जैसा है।

विदेशी के नाम पर मेरे जैसा भारतवासी (इंतु-रन) और इक्के-दुक्के उत्तर कोरियाई दिख रहे थे। वहां पहुंचे पर्यटकों में देशवासियों की संख्या सर्वाधिक। माओ त्सेतुंग के पिता, माओ यीछांग जमींदार थे। चार भाइयों में सबसे छोटे माओ त्सेतुंग, जिन्होंने पास के प्राइमरी स्कूल में वूचिंग (कन्फ्यूशियन क्लासिक्स) की पढ़ाई की थी। वहीं पता चला, बालक माओ त्सेतुंग के आदर्श कोई चीनी आइकॉन नहीं, बल्कि जार्ज वाशिंगटन और नेपोलियन थे। बाद में माओ ने प्रांतीय राजधानी छांगसा में सेकेंड्री स्कूल की कक्षा में दाखिला लिया और सुन यात-सेन के राष्ट्रवादी विचारों से प्रभावित होते रहे। सुन यात-सेन चीनी गणतंत्र के संस्थापक और राष्ट्रपिता थे। जब चीन चेयरमैन माओ के नेतृत्व में 1 अक्टूबर 1949 को जनवादी गणतंत्र बना, माओ ने राष्ट्रपिता का ओहदा हटाकर सुन यात-सेन को लोकतांत्रिक क्रांति का अग्रदूत घोषित कर दिया। एक नेता जब महान होने की ओर अग्रसर होता है, अपने पूर्ववर्ती की लकीर छोटी करता है, इसे आप एशियाई राजनीति की रवायत समझ लीजिए, जिसकी शुरूआत आधुनिक चीन से होती दिखती है। राष्ट्रपति शी चिनफिंग आज की तारीख में चेयरमैन माओ से भी महाकाय नेता के रूप में निरूपित हो चुके हैं। गुरूवार को कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ चाइना (सीपीसी) की केंद्रीय समिति का छठा समग्र सत्र (प्लैनरी सेशन) संपन्न हुआ। इसमें पूरे सौ साल का लेखा-जोखा प्रस्तुत करते हुए जो प्रस्ताव पारित हुआ, उससे यही निष्कर्ष निकलता है कि शी जैसा कोई नहीं। चीन को विश्व पटल पर लाने में, उसकी आर्थिक-सामाजिक विसंगतियों को दूर करने में किसी ने योजनाबद्ध तरीके से काम किया, तो वो सिर्फ. शी चिनफिंग हैं।

पेइचिंग में 8 से 11 नवंबर के बीच 19वीं सीपीसी सेंट्रल कमेटी की बैठक हुई। शी इस सर्वोच्च कमेटी के महासचिव हैं। शी सर्वोच्च नेता बने रहेंगे, और बिना किसी वैधानिक बाधा के शासन करेंगे, यह छठे प्लैनरी सेशन में तय हो चुका। चार दिवसीय सत्र में माओ त्सेतुंग और उनके बाद के चार शासकों के कालखंड का लेखा-जोखा प्रस्तुत हुआ। तंग श्याओफिंग, चियांग जेमिन, हू चिन्थाओ और शी चिनफिंग, इन चार शासकों में सबसे महान कौन था, माओ का कितना बड़ा योगदान था, उसपर जो भी प्रस्ताव रखे गये, उपस्थित सदस्यों ने हाथ उठाकर समर्थन किया।

19वीं सीपीसी सेंट्रल कमेटी के छठे प्लैनरी सेशन में जो प्रस्ताव रखे गये, उसका सारांश यह है कि चेयरमैन माओ के समय नव लोकतांत्रिक क्रांति का आविर्भाव हुआ। माओ के रहते समाजवादी क्रांति और उसका निर्माण (सोशलिस्ट रेवोल्यूशन एंड कंस्ट्रक्शन) हुआ। उसके बाद एक ऐसा कालखंड आया जिसमें सुधार या दोषनिवृत्ति की शुरूआत हुई। यह सोशलिस्ट मॉर्डनाइजेशन का दौर था, जिसमें तीन नेताओं तंग श्याओफिंग, चियांग जेमिन और हू चिन्थाओ की अहम भूमिका थी। और उसके बाद सोशलिजम का नया दौर आता है, जो चाइनीज कैरेक्टरिस्टिक (चीनी विलक्षणता) लिये प्रस्तुत होती है, उसके प्रणेता हैं शी चिनफिंग। सीपीसी द्वारा प्रस्ताव की गहराई से व्याख्या की जाए तो माओ के समय में जितनी गलतियां हुईं, उसे बाद के शासन प्रमुखों ने सुधारा है। समय का चक्र देखिये, जिस चीनी संसद में यह प्रस्ताव रखा जा रहा था, उसके पांच सौ मीटर की दूरी पर बनी दिव्य समाधि में चेयरमैन माओ दफन हैं।

8 से 11 नवंबर 2021 के प्लैनरी सेशन (समग्र सत्र) में सीपीसी के 197 सदस्य और 151 वैकल्पिक सदस्य (अल्टरनेट मेंबर) उपस्थित थे। इस सत्र के वास्ते प्रस्ताव, उसकी रूपरेखा तैयार करने वाले एक्सपर्ट, शिक्षाविद नॉन वोटिंग मेंबर के रूप में अपनी मौजूदगी दज करते रहे। इसका आयोजन सेंट्रल कमेटी के पॉलिटिकल ब्यूरो ने किया था। 1921 में सीपीसी की स्थापना से आगे के कई दशकों तक पोलिट ब्यूरो सर्वोच्च बॉडी मानी जाती रही। शी पांचवे सत्र से ही बदलाव कर पॉलिटिकल ब्यूरो को शक्तिशाली बनाने की कवायद में लगे हुए हैं।

माओ की मृत्यु 9 सितंबर 1976 को हुई थी। माओ के जो विचार थे, वही तो माओइजम था। कोटेशंस फ्रॉम माओ त्सेतुंग वाली लाल किताब, जिसमें माओ के कहे शब्द उद्धृत थे, माओवादियों के लिए गीता, बाइबल से कम नहीं था। 1966 के बाद उसका पुनर्मुद्रण नहीं हो पाया था। हिंदी समेत 20 भाषाओं में अनुदित माओ की लाल किताब दुनिया के 117 देशों में भेजी गई, जिसके जरिये माओवाद की जड़ें और मजबूत की गई थीं। आज की तारीख में चीनी लीडरशिप कहती है, माओवाद था ही नहीं। फिर नेपाली माओवादियों का क्या होगा पेरू में शाइनिंग पाथ उसी माओवादी धारा को समाहित किये था, जिसे हम मार्क्स-लेनिनवादी और गोंजालो विचारधाराओं का काकटेल कह सकते हैं। नेपाली माओवादी शाइनिंग पाथ को सिर-आंखों पर रखते थे।

और सिर्फ नेपाल नहीं, कम्युनिस्ट माओइस्ट पार्टी ऑफ अफगानिस्तान, सिलोन कम्युनिस्ट पार्टी (माओइस्ट), कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ बोलिविया (मार्क्ससिस्ट-लेनिनिस्ट, माओइस्ट), कोलंबियन कम्युनिस्ट पार्टी (माओइस्ट), माओवादी विचार पर आधारित पूर्बो बांग्लार कम्युनिस्ट पार्टी, माओवाद को आत्मसात करने वाली वर्कर्स पीजेंट्स पार्टी ऑफ तुर्की, इन सबका क्या होगा बाहर वालों को छोड़िये, अपने घर की बात करते हैं। पश्चिम बंगाल, बिहार, झारखंड, छत्तीसगढ़ से आंध्र तक को छूने वाले रेड कॉरीडोर में भूमिगत माओवादी खुद को क्या कहेंगे शी चिनफिंग ने तो बड़ी विकट स्थिति पैदा कर दी।

यह तो चीन जाने पर बात समझ में आती है कि वहां पर माओवाद को मिटा देने की कवायद कितने वर्षों से चल रही है। माओ की मृत्यु के बाद तंग श्याओ फिं ग ने जैसे ही पद संभाला, उनकी लकीर छोटी करने की कोशिशें शुरू कर दीं। 1966 से 1976 के बीच कल्चरल रेवोल्यूशन के नाम पर जितनी भी गंभीर गलतियां हुईं, उसके विरूद्ध आधिकारिक आवाज उठाने वाले तंग श्याओ फिं ग ही थे। तंग के शब्द थे- सीपीसी ने लेफ्ट की राजनीति में सबको 20 वर्षों तक फंसाये रखा। कामगारों और किसानों की आय नहीं के बराबर रह गई थी। औद्योगिक उत्पादन भी बेहतर नहीं हुआ, बावजूद इसके चीनी जनता का भरोसा सीपीसी पर बना हुआ था। तंग श्याओ फिं ग माओ पर ऊंगली उठाते हैं, 1989 में थ्येनआनमन स्कवायर पर हजारों लोगों के नरसंहार पर खामोश हो जाते हैं।

माओ ने 1958 से 1962 के बीच द्वितीय पंचवर्षीय योजना, जिसे द ग्रेट लीप फॉरवर्ड कहा जाता है, लागू की थी। उस कार्यक्रम में निजी खेती को निषिद्ध कर सामूहिक खेती और कम्युन कल्चर पर जोर दिया गया। उस कालखंड में हेनान, बानछिआओ में बने दर्जनों बांध ढह गये। खेती छिन्न-भिन्न हो चुकी थी। यांगत्से और येलो रीवर में लगातार बाढ़ से अकाल की स्थिति पैदा हो गई। चीनी इतिहासकार वू चियुआंग बताते हैं कि द ग्रेट लीप के दुष्परिणामों की वजह से 5 करोड़ 60 लाख लोग मारे गये। हालांकि चीनी लीडरशिप इस सवाल पर चुप्पी साधे है कि 1962 में जब देश अकाल और भयानक आर्थिक संकट से गुजर रहा था, तब भारत-चीन युद्ध छेड़ने की जरूरत क्या थी क्या माओ अपनी विफलताओं से देश का ध्यान हटाना चाहते थे लंबे समय तक माओ के सचिव रहे हू छिआओमू बताते हैं कि उत्तर-पूर्व चाइना के दाछिंग इलाके में 1959 में पेट्रोलियम के विशाल भंडार का पता चला था। 1965 तक चीन पेट्रोलियम के मामले में आत्मनिर्भर उसी की वजह से हुआ। कल्चरल रेवोल्यूशन के समय विज्ञान, तकनॉलोजी, और कूटनीति के क्षेत्र में चीन को काफी उपलब्धियां हासिल हुई थीं। हू छिआओमू बताते हैं, अकाल के समय स्वयं चेयरमैन माओ ने अपना फेवरेट ब्रेज्ड पोर्क बेली खाना त्याग दिया था। 26 दिसंबर 1962 को माओ का 69 वां जन्मदिवस था, तब वो केवल सूप पीकर रह गये थे। माओ ने अपनी सेलरी 600 युवान से घटाकर 404.8 युवान कर ली थी, जो उन दिनों पार्टी के लेबल थ्री कैडर को मिलता था। माओ के सचिव रहे छिआओमू जो कहें, शी पूजक आज का जेनरेशन माओ को माफ करने को तैयार नहीं दिखता है। जून 1981 में कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ चाइना ने माओ के कल्चरल रेवोलयूशन की भर्त्सना की थी। उसे गंभीर गलती निरूपित किया था। सेंट्रल कमेटी के कुछ नेताओं ने खुलकर कहा था कि इन गलतियों के लिए माओ को जिम्मेदार ठहराया जाना चाहिए। शी का समाजवाद ग्लोबल मार्केट इकोनॉमी को समझता है, माओवाद से अधिक सर्वस्वीकृत, व्यावहारिक और अत्याधुनिक है। ऐसे नैरेटिव की कवायद 2017 से जारी है। उस साल सीपीसी ने शी चिनफिंग के विचार चाइनीज कैरेक्टरिस्टिक समेत अप्रूव किया था। उनके कोटेशंस की पाकेटबुक और ऐप जारी कर दी गई। सीपीसी को बस माओ की लाल किताब को रिप्लेस करना था। दुनिया समझ चुकी थी कि अंदरखाने खेल क्या हो रहा है। कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ चाइना की स्थापना के सौ साल और भारत में आजादी के 75 साल। मौका और दस्तूर दोनों तरफ है। इस समारोह के शोर में हांगकांग के लोकतंत्रकामी नहीं दिखेंगे। कोविड काल में लाखों चीनियों की मौत कभी जेरे बहस नहीं हुई। शी का इंवेट मैनेजमेंट इतना व्यापक है, जिसकी चकाचौंध में भयानक महंगाई, बेरोजगारी, चीनी रियल इस्टेट, अधोसंरचना व मैनुफैक्चरिंग के क्षेत्र में टोटल फेल्योर की चर्चा तक नहीं होती। शी ने नई पीढ़ी को जो सपने दिखाये, शायद उसकी कलई उनके जाने के बाद खुले। सुन यात-सेन से जब राष्ट्रपिता का पद छीना जा सकता है, माओ की नीतियों की मजम्मत हो सकती है, तो शी कबतक वक्रतुंड महाकाय बने रहेंगे

विलियमसन ने खेली विस्फटोक पारी, टी-20 वर्ल्ड कप फाइनल में सर्वोच्च स्कोर बनाने वाले पहले बल्लेबाज बने

नई दिल्ल, एजेंसी)। आईसीसी टी-20 वर्ल्ड कप 2021 के फाइनल में आज दुबई इंटरनेशनल क्रिकेट स्टेडियम में ऑस्ट्रेलिया का सामना न्यूजीलैंड से हो रहा है। ऑस्ट्रेलिया के कप्तान आरोन फिंच ने इस मुकाबले में टॉस जीतकर पहले गेंदबाजी करने का फैसला किया है। न्यूजीलैंड ने पहले बल्लेबाजी करते हुए बोर्ड पर चार विकेट पर 172 रनों का स्कोर टांग दिया है। टी-20 वर्ल्ड कप फाइनल में किसी भी टीम का यह सर्वाच्च स्कोर है। कप्तान केन विलियमसन इस बड़े मुकाबले में 85 रनों की शानदार पारी खेली। इसके साथ ही विलियमसन टी-20 वर्ल्ड कप फाइनल व्यक्तिगत सर्वोच्च स्कोर बनाने वाले संयुक्त रूप से पहले बल्लेबाज बन गए हैं। विलियमसन ने केवल 48 गेदों पर 10 चौकों और तीन छक्कों की मदद से 85 रनों की शानदार पारी खेली। उन्हें जोश हेजलवुड ने सीमा रेखा पर

स्टीव स्मिथ के हाथों कैच कराया। अपने इस स्कोर के साथ ही विलियमसन आईसीसी टी-20 वर्ल्ड कप के फाइनल में व्यक्तिगत सर्वोच्च स्कोर बनाने वाले संयुक्त रूप से पहले बल्लेबाज बन गए हैं। कीवी कप्तान से पहले, वेस्टइंडीज के मालोंन सैमुअल्स ने 2016 आईसीसी टी-20 वर्ल्ड कप फाइनल में नॉट आउट 85 रनों की पारी खेली थी।

हालांकि सैमुअल्स ने 2012 टी-20 वर्ल्ड कप फाइनल में भी श्रीलंका के खिलाफ 78 रनों की विस्फटोक पारी खेली थी। उनके बाद भारत के टी20 कप्तान रहे विराट कोहली का नंबर आता है, जिन्होंने 2014 टी-20 वर्ल्ड कप फाइनल में श्रीलंका के खिलाफ 77 रनों की विस्फटोक पारी खेली थी। वहीं, पूर्व भारतीय सलामी बल्लेबाज गौतम गंभीर ने 2007 टी-20 वर्ल्ड कप फाइनल में पाकिस्तान के खिलाफ 75 रनों की पारी खेली थी। भारत ने गंभीर की पारी के दम पहली बार खिताब जीता था। केन विलियमसन ने लगाया तूफानी अर्धशतक, ऐसा करने वाले केवल दूसरे कप्तान बने विलियमसन साथ ही आईसीसी टी-20 वर्ल्ड कप के फाइनल में अर्धशतक लगाने वाले केवल दूसरे कप्तान बन गए हैं। विलियमसन से पहले आईसीसी टी-20 वर्ल्ड कप के फाइनल में 50 या उससे ज्यादा रन बनाने का रिकॉर्ड श्रीलंका के कप्तान कुमार संगकारा के नाम था, जिन्होंने 2009 में लाड्र्स में पाकिस्तान के खिलाफ 64 रनों की नॉट आउट पारी खेली थी। उस मैच में पाकिस्तान ने आठ विकेट से जीतकर खिताब अपने नाम किया था।

ऑस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड के बीच फाइनल मैच से पहले वसीम जाफर ने शेयर किया मजेदार मीम्स

नई दिल्ल, एजेंसी)। आईसीसी मेंस टी-20 वर्ल्ड कप के फाइनल से पहले भारत के पूर्व सलामी बल्लेबाज वसीफ जाफर ने ट्विटर पर एक मीम्स शेयर किया है। उन्होंने मीम्स के जरिए इंडियन फैंस से मजे लिए हैं। ऑस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड के बीच आज शाम को दुबई के दुबई इंटरनेशनल क्रिकेट स्टेडियम में फाइनल मैच खेला जाएगा। दोनों ही टीमें आज तक टी-20 वर्ल्ड कप का फाइनल नहीं जीत पाई हैं। दोनों के पास मैच जीतने का शानदार मौका है और उम्मीद की जा रही है दोनों टीमों के बीच एक कांटे का मुकाबला देखने को मिलेगा। वसीम जाफर ने ट्विटर पर जो मीम्स शेयर किया है उसमें कॉमेडी सीरियल तारक मेहता का उल्टा चश्मा के एक किरदार जेठालाल की फोटो का इस्तेमाल किया है। इसमें वो सोच रहे हैं कि आज किसको सपोर्ट करूं। ऑस्ट्रेलिया ने बहुतत जख्म दिया है। पर न्यूजीलैंड ने हाल ही में जख्म दिया है। कोई भी जीते,

क्रिकेट असली विजेता है, ये स्टैंड ले लेंगे। गौरतलब है न्यूजीलैंड ने मौजूदा वर्ल्ड कप में ग्रुप स्टेज में भारत को मात दी। वहीं ऑस्ट्रेलिया ने कई मौकों पर भारत को हराया है।

हाल के दिनों में न्यूजीलैंड टीम इंडिया के लिए अधिक परेशानी पैदा कर रहा है। वर्ल्ड कप 2019 के सेमीफाइनल में उसने भारत को हाराया। इसके बाद वर्ल्ड टेस्ट चैंपियनशिप के फाइनल में उसने भारत को हराया। ऑस्ट्रेलिया ने सेमीफाइनल में पाकिस्तान को 5 विकेट से हराकर और न्यूजीलैंड ने सेमीफाइनल में इंग्लैंड को हराकर फाइनल में अपनी जगह बनाई।

केन विलियमसन ने लगाया तूफानी अर्धशतक

दुबई , एजेंसी)। आईसीसी टी-20 वर्ल्ड कप 2021 के फाइनल में आज दुबई इंटरनेशनल क्रिकेट स्टेडियम में ऑस्ट्रेलिया का सामना न्यूजीलैंड से हो रहा है। ऑस्ट्रेलिया के कप्तान आरोन फिंच ने इस मुकाबले में टॉस जीतकर पहले गेंदबाजी करने का फैसला किया है। न्यूजीलैंड ने जल्दी ही अपने दो विकेट गंवा दिए हैं, हालांकि कप्तान केन विलियमसन ने एक छोर संभाल कर रखते हुए अपना अर्धशतक पूरा कर लिया है। विलियमसन ने इस टी-20 वर्ल्ड कप के फाइनल में केवल 32 गेंदों पर अपना अर्धशतक पूरा किया। इसके साथ ही न्यूजीलैंड के कप्तान ने एक नई उपलब्धि हासिल कर ली है। विलियमसन आईसीसी टी-20 वर्ल्ड कप के फाइनल में अर्धशतक लगाने वाले केवल दूसरे कप्तान बन गए हैं। विलियमसन ने केवल 48 गेदों पर 10 चौकों और तीन छक्कों की मदद से 85 रनों की शानदार पारी खेली। उन्हें जोश हेजलवुड ने सीमा रेखा पर स्टीव स्मिथ के हाथों कैच कराया। विलियमसन से पहले आईसीसी टी-20 वर्ल्ड कप के फाइनल में 50 या उससे ज्यादा रन बनाने का रिकॉर्ड श्रीलंका के कप्तान कुमार संगकारा के नाम था, जिन्होंने 2009 में लाड्र्स में पाकिस्तान के खिलाफ 64 रनों की नॉट आउट पारी खेली थी। उस मैच में पाकिस्तान ने आठ विकेट से जीतकर खिताब अपने नाम किया था। विलियमसन का आईसीसी टी-20 वर्ल्ड कप के फाइनल सबसे तेज अर्धशतक है। इससे पहले श्रीलंका के कुमार संगकारा ने 2014 में 33 गेंदों पर और इंग्लैंड के जो रूट ने 2016 में 33 गेंदों पर अर्धशतक जमाया था।

ऑस्ट्रेलिया के इस स्पिनर के फैन हुए सचिन तेंदुलकर, बोले- न्यूजीलैंड को बचकर रहना होगा

नई दिल्ल, एजेंसी)। आईसीसी टी-20 वर्ल्ड कप 2021 का फाइनल मुकाबला आज शाम को दुबई इंटरनेशनल स्टेडियम में ऑस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड के बीच होना है। दोनों टीमें पहली बार इस ट्रॉफी को अपने नाम करने का सपना पूरा करना चाहेगी। न्यूजीलैंड की टीम के पास आईसीसी वर्ल्ड टेस्ट चैंपियनशिप खिताब जीतने के बाद इस साल दूसरा खिताब जीतने का मौका है। हालांकि कीवी टीम के इस सपने को ऑस्ट्रेलियाई लेग स्पिनर एडम जम्पा पूरा होने से रोक सकते हैं। जम्पा इस टूनार्मेंट में अबतक 12 विकेट चटका चुके हैं। ऑस्ट्रेलियाई टीम का एक महत्वपूर्ण हिस्सा रहे जम्पा बीच के ओवरों के दौरान अविश्वसनीय इकॉनमी रेट के साथ गेंदबाजी करते हैं। उनके प्रभावशाली गेंदबाजी आंकड़ों को देखकर अब भारत के महान बल्लेबाज सचिन तेंदुलकर भी हैरान हैं। सचिन ने कहा कि जम्पा बल्लेबाज के मूवमेंट को देखकर गेंद रिलीज करते हैं, जोकि एक लेग स्पिनर को आमतौर पर ऐसा करते हुए नहीं दिखा जाता। तेंदुलकर ने फेसबुक पर पोस्ट किए गए वीडियो में ऑस्ट्रेलियाई लेग स्पिनर जम्पा की जमकर तारीफ की है। उन्होंने कहा कि जम्पा बल्लेबाज के मूवमेंट को देखकर गेंदबाजी करते हैं। उन्होंने कहा,

मैंने जम्पा की गेंदबाजी में एक चीज देखी है। जब बल्लेबाज बाहर निकलता है, तो उनका गेंद रिलीज पॉइंट बाद में होता है। यदि आप गेंद को अपने सिर के ठीक ऊपर छोड़ते हैं, तो यह कमोबेश अच्छी लेंथ की गेंद होती है। जब सिर के आगे थोड़ा सा हाथ चला जाता है और तब आप गेंद को छोड़ते हैं यानी अगर रिलीज प्वाइंट बाद में है, तो गेंद ज्यादातर शॉर्ट-पिच होती है। इसलिए वह गेंद को बाद में रिलीज कर रहा था जब बल्लेबाज बाहर निकल रहा था।

इयान चैपल ने बताया, न्यूजीलैंड के खिलाफ कौन सा ऑस्ट्रेलियाई खिलाड़ी बन सकता है मैच विनर

नई दिल्ल, एजेंसी)। आईसीसी मेंस टी-20 वर्ल्ड कप अपने अंतिम पड़ाव पर पहुंच चुका है। आज फाइनल में ऑस्ट्रेलिया का सामना न्यूजीलैंड से होगा।

ऑस्ट्रेलिया के दिग्जग क्रिकेटर इयान चैपल ऑस्ट्रेलिया की बल्लेबाजी यूनिट से काफी प्रभावित हैं क्योंकि कंगारू बल्लेबाजों का इस टूनार्मेंट में शानदार प्रदर्शन रहा है। इयान चैपल ने ऑस्ट्रेलिया के सलामी बल्लेबाज डेविड वॉर्नर की जमकर तारीफ की। उन्हें लगता है कि वो फाइनल में ऑस्ट्रेलिया के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। उन्होंने कहा कि वो जल्दी खेल को आपकी पहुंच से दूर ले जा सकते हैं। वॉर्नर ने वाइड वर्ल्ड ऑफ स्पोर्ट्स से कहा, डेविड वॉर्नर और ऑस्ट्रेलिया की बल्लेबाजी मेरे लिए बड़ी चीज है। अगर वॉर्नर चल गए तो फिर वो बहुत जल्द ही गेम आपकी पहुंच से दूर कर देंगे। ऑस्ट्रेलिया के पास मजबूत बैटिंग लाइन अप है।

भारत/पाकिस्तान के बीच प्रतिद्वंद्विता पर गौतम गंभीर ने कहा-

हर कोई इस दुश्मनी का फायदा उठाकर पैसे कमाना चाहता है

नई दिल्ल, एजेंसी)। पूर्व सलामी बल्लेबाज गौतम गंभीर का मानना है कि भारत और पाकिस्तान के बीच क्रिकेट प्रतिद्वंद्विता अपने आप में एक व्यापार बन गई है और हर कोई इससे पैसे कमाना चाहता है। गंभीर ने ऑस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड के बीच की प्रतिद्वंद्विता का उदाहरण देते हुए कहा कि दोनों पड़ोसी देशों में भारत और पाकिस्तान की तरह भयंकर प्रतिद्वंद्विता नहीं है। गंभीर का यह बयान आईसीसी टी-20 वर्ल्ड कप 2021 में आज शाम को दुबई इंटरनेशनल स्टेडियम में ऑस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड के बीच होने वाले फाइनल मुकाबले से पहले आया है। पूर्व बल्लेबाज ने पूछा कि जब भारत और पाकिस्तान के बीच मैच होता है तो लोगों में इतनी प्रतिद्वंद्विता क्यों आ जाती है

गंभीर ने टाइम्स ऑफ इंडिया के लिए अपने कॉलम में लिखा, ऑस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड भी

भारत और पाकिस्तान की तरह पड़ोसी देश हैं। भारतीयों और पाकिस्तानियों की तरह, ऑस्ट्रेलियाई और कीवी भी हारने के बाद एक-दूसरे से नफरत करते हैं। लेकिन भारत और पाकिस्तान के मैच में इतना बवाल क्यों किया जाता है। ऑस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड के बीच मैच से ज्यादा ट्रेंड भारत बनाम पाकिस्तान क्रिकेट प्रतिद्वंद्विता कर रहा है।

उन्होंने आगे लिखा, भारत और पाकिस्तान के बीच होने वाले मैच को दोनों देशों के बीच की दुश्मनी जैसा माना जाता है। 1947 के बाद इन दोनों देशों में कई बार लड़ाई हुई हैं। ये दुश्मनी अब खेल में भी घुस गई है और अब इसने क्रिकेट में भी अपना स्थान बना लिया है।

मुझे तो कभी-कभी लगता है कि भारत-पाकिस्तान के बीच की प्रतिद्वंद्विता अपने आप में एक व्यापार बन गई है। जिसके चलते और दूसरे क्षेत्रों को भी फायदा मिलता रहता है। हर कोई इस दुश्मनी का फायदा उठाकर पैसे कमाना चाहता है। आईसीसी टी-20 वर्ल्ड कप 2021 में भारत को अपने पहले मैच में पाकिस्तान से 10 विकेट से हार का सामना करना पड़ा था। पाकिस्तान की टीम इससे पहले कभी भी वर्ल्ड कप में भारत को नहीं हरा पाई थी।

गंभीर ने जनसंख्या की ओर इशारा करते हुए कहा कि यह भी एक कारण जो भारत-पाकिस्तान के बीच की क्रिकेट प्रतिद्वंद्विता को और बढ़ाता है। ऑस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड दोनों देशों की संयुक्त आबादी करीब तीन करोड़ है, पाकिस्तान की आबादी करीब 22 करोड़ है। उन्होंने कहा, यह न केवल विराट कोहली, बल्कि कई भारतीय, जो इस खेल को दिल से लगाते हैं, वे इस बात को स्वीकार करें कि हम मैच हार गए हैं। जब हम हार जाते है तो मार्केटिंग वाले अपने प्रचार प्रसार के लिए आम जनता का खून चूसते है।

पूर्ववर्ती सरकारों ने धर्म जाति के नाम पर बांट कर किया शोषण : संगमलाल गुप्ता

वैश्व समाज के सम्मान समारोह में पहुंचे प्रतापगढ़ सांसद का हुआ जारदार स्वागत

अखंड भारत संदेश

ज्ञानपुर। स्थानीय विधानसभा क्षेत्र के सुभाष नगर कलीपुर स्थित खेल मैदान में वैश्य समाज का सम्मान समारोह कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसमें मुख्य अतिथि प्रतापगढ़ के सांसद संगम लाल गुप्ता एवं विशिष्ट अतिथि भदोही के विधायक रविंद्र नाथ त्रिपाठी, जिला पंचायत अध्यक्ष अनिरुद्ध त्रिपाठी मौजूद रहे। कार्यक्रम का शुभारंभ ओम गुरुदेव के चित्र पर माल्यार्पण कर किया गया। सांसद प्रतिनिधि भुनेश्वर प्रसाद गुप्ता ने मुख्य अतिथि को मुकुट, गदा व स्मृति चिन्ह भेंट कर स्वागत किया।

वहीं विशिष्ट अतिथियों का अंग वस्त्र एवं स्मृति चिन्ह देकर स्वागत किया गया। इस दौरान पंडाल में मौजूद कार्यकताओं पदाधिकारियों ने समाज के लोगों ने आए हुए अतिथियों का माल्यार्पण कर स्वागत किया। कार्यक्रम में भोजपुरी गायक राजेश परदेसी व उनके टीम द्वारा मनमोहक रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया जिसे देख अतिथि भी मंत्रमुग्ध हो गए। इस अवसर पर मुख्य अतिथि एवं सांसद श्री गुप्ता ने कहा कि भाजपा के सरकार में पूरे प्रदेश ही नहीं बल्कि देश की जनता बड़े ही अमन चैन के साथ रह रही है और उन्हें आसानी के साथ विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं से लाभान्वित किया जा

गंगा नदीपर दो पुल बनने से जनपद के विकास को मिलेगी गति

जनप्रतिनिधियों को स्वागत करते लोग

रहा है। उन्होंने कहा कि 70 वर्षों में जो कार्य नहीं हुआ वह उत्तर प्रदेश व केंद्र की सरकार ने मात्र साढे 4 सालों में कर दिखाया ।

उन्होंने कहा कि पिछली सरकारों ने समाज को धर्म और जाति के नाम पर बैठकर शोषण किया किंतु जैसे ही केंद्र व प्रदेश में भाजपा की सरकार बनी एक समान सभी वर्गों का विकास करने के साथ ही देश व प्रदेश को भय मुक्त किया गया। इस दौरान विशिष्ट अतिथि विधायक रविन्द्रनाथ त्रिपाठी ने कहा कि प्रदेश की सरकार ने जिले से एवं प्रदेश से गुंडा माफियाओं का सफाया करते हुए विकास की एक नई किरण जगाई है। जिसका जीता जागता प्रमाण है कि जनपद के विकास के लिए रामपुर हुआ डेंगूपुर गंगा घाट पर पक्का पुल निर्माण करने का कुछ ही दिनों में कार्य शुरू हो जाएगा। जिसका प्रदेश के उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य ने एक कार्यक्रम में घोषणा किया। उन्होंने कहा कि जनपद के विकास में सरकार द्वारा कोई भी कोर कसर नहीं छोड़ा जा रहा है। कार्यक्रम में मौजूद जिले के प्रथम नागरिक एवं जिला पंचायत अध्यक्ष अनिरुद्ध त्रिपाठी ने जनता की मांग पर खेल मैदान में सामुदायिक शौचालय एवं खेल मैदान के चारों तरफ स्ट्रीट लाइट लगवाने की घोषणा किया। घोषणा होते ही पंडाल में बैठे लोगों ने तालियों के साथ जिले के प्रथम नागरिक का स्वागत किया। उन्होंने कहा कि मैं जिला पंचायत अध्यक्ष नहीं आपका बेटा आपका भाई हूं जो भी समस्या होगा उसका में तत्परता के साथ निस्तारण करते हुए आपके लड़ाई आप के मान सम्मान के साथ हमेशा लड़ता रहूंगा। अंत में आए हुए सभी अतिथियों का आयोजक एवं जिला पंचायत सदस्य ने आभार व्यक्त करते हुए धन्यवाद ज्ञापित किया। इस अवसर पर राजेंद्र पाल जिला पंचायत सदस्य, राजेश परदेसी, दिनेश सिंह प्रधान सहित क्षेत्र के तमाम ग्राम पंचायत सदस्य, ग्राम प्रधान, बीडीसी एवं माताएं बहने मौजूद रही।

आजादी के आंदोलन को कमजोर करने के लिए अंग्रेजों ने किया कांग्रेस का गठन

अखंड भारत संदेश

भदोही। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के राष्ट्रीय महामंत्री सुनील देवधर ने वाराणसी स्थित आईएमए में चिकित्सकों के बीच अपनी बात रखते हुए कहा कि आजादी के आंदोलन को कमजोर करने के लिए अंग्रेजों ने कांग्रेस का गठन किया। दुनिया में इस तरह की घटनाएं बहुत कम ही मिलती है जब वीर सावरकर की पुस्तक को छपने के पहले ही अंग्रेजों ने प्रतिबंध लगा दिया। नागरिक जिम्मेदारियां ही लोगों को बड़ा बनाती हैं। इस बात को लोगों को नहीं भूलना चाहिए। सुनील देवधर आईएमए में माय होम इंडिया की तरफ से आयोजित ह्यआजादी का अमृत महोत्सव और नागरिक दायित्वह्न विषय पर अपने-अपने विचार रख रहे थे। उन्होंने कहा कि आजादी और स्वतंत्रता में बहुत बड़ा फर्क है। देश में आजादी के आंदोलन को कुचलने के लिए कमजोर करने के लिए अंग्रेजों ने कांग्रेस का गठन कर एक साजिश रची थी। देश में उग्र होते स्वाधीनता आंदोलन को कमजोर करने के लिए कांग्रेस का गठन बातचीत का रास्ता निकालने

कार्यक्रम में मंचासीन सुनील देवधरव चिकित्सक

संत निरंकारी मिशनः 89 सेवादारों ने किया रक्तदान

अखंड भारत संदेश

भदोही। सतगुरु माता सुदीक्षा की प्रेरणा से कंसापुर में एक रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें मिशन के 89 सेवादारों ने रक्तदान किया। रक्तदान शिविर में महाराजा तेज सिंह ब्लड बैंक और स्वरूरानीनेहरू चिकित्सालय के ब्लड बैंक की 20 सदस्यीय टीम ने रक्त एकत्र करते हुए लोगोंको रक्तदान के लिए जागरुक भी किया। रक्तदान शिविर का उद्घाटन प्रयागराज जोनल इंचार्ज अशोक सचदेव (संत निरंकारी मंडल) ने किया। रक्तदान करने वाले सभी श्रद्धालु सेवादारों को प्रोत्साहित किया और मानव कल्याण के लिए की गई उनकी सेवाओं की सराहना की गई। मिशन द्वारा मानवता की सेवा में की गई अन्य गतिविधियों के बारे में अवगत कराया गया। इस अवसर पर सेवा दल के क्षेत्रीय

रक्तदान करते सेवादार

संचालक किशन एवं स्थानीय संयोजक राजेश कुमार ने रक्तदान के लिए सभी का उत्साह बढ़ाया। राजेश कुमार ने कहा कि मिशन के भक्तों के लिए रक्त का दान पहले से ही भक्ति का एक अभिन्न अंग बन चुका है और निरंकारी मिशन के सेवादार सदैव ही निस्वार्थ भाव से जनकल्याण की सेवा करने के लिए निरंतर तत्पर रहते हैं।

निरंकारी मिशन द्वारा प्रथम रक्तदान शिविर का आयोजन दिल्ली में वर्ष 1986 के नवंबर माह में वार्षिक निरंकारी संत समागम के अवसर पर किया गया। सतगुरु बाबा हरदेव सिंह ने स्वयं रक्तदान कर शिविर का उद्घाटन किया और यह संदेश दिया कि रक्त नालियों में नहीं नाडियों में बहना चाहिए। राजेश कुमार चिकित्सकीय टीम और सभी सेवादारों का आभार प्रकट किया।

पक्का पुल निर्माण की घोषणा ससजपा ने जताई खुशी

अखंड भारत संदेश

गोपीगंज। क्षेत्र के रामपुर गंगा घाट पर पक्का पुल निर्माण की मांग करते हुए कई बार अनशन प्रदर्शन कर चुके सर्व समाज जनहित पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष व कार्यकर्ताओ ने प्रदेश के उप मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य को बधाई देते हुए हुए आभार व्यक्त किया है। शनिवार को गोपीगंज नगर में आयोजित कार्यक्रम में प्रदेश के उप मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य के आगमन पर ससजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष ने एक बार फिर मांग पत्र दिया। लम्बे समय से चल रही मांग को पूरा करते हुए श्री मौर्य के रामपुर व डेगुर पुर मे पक्का पुल निर्माण कराने की घोषणा

प्रदेश के उप मुख्यमंत्री को दी बधाई, कहा कि रंग लाया पार्टी का आंदोलन

करने का स्वागत करते हुए विभूति नारायण सिंह ने कहा कि पुल का निर्माण हो जाने से कई जनपद व प्रदेश की दूरी कम हो जाएगी जिसका लाभ मिलेगा। उप मुख्यमंत्री की घोषणा से गदगद दिखे श्री सिंह पार्टी जनों के साथ रामपुर घाट पहुच कर मां गंगा का पूजन किया। इस मौके पर सिंटू शुक्ल, अरविंद श्रीवास्तव, धनेश पंड्या, घनश्याम कौशल, रामबाबू, प्रमोद विश्वकर्मा, राना सिंह, मोहम्मद उमर आदि मौजूद रहे।

पुलिस ने किया जिला बदर अभियुक्त को गिरफ्तार

भदोही। पुलिस अधीक्षक भदोही डॉ. अनिल कुमार द्वारा जनपद मे अपराध की रोकथाम व जिला बदर अपराधियों की गिरफ्तारी के लिए जनपद के समस्त थाना प्रभारी को निर्देशित किया गया है। उक्त आदेश के अनुपालन में अपर पुलिस अधीक्षक राजेश भारती व क्षेत्राधिकारी भदोही अजय कुमार के कुशल निर्देशन में दिनांक शनिवार को कोतवाली की पुलिस टीम ने जिला बदर अभियुक्त को गिरफतार कर जेल भेज दी।

सेना से जुड़ी खुफिया जानकारी लीक करने वाला जवान पटना में गिरफ्तार

पटना। सेना के जवान को खुफिया सूचना लीक करने के आरोप में गिरफ्तार किया गया है। पुणे में तैनात जवान गणेश प्रसाद को केन्द्रीय खुफिया एजेंसी से मिले इनपुट के आधार पर बिहार एटीएस ने खगौल पुलिस और मिलिट्री इंटेलिजेंस के सहयोग से गिरफ्तार कर लिया। सेना के मेडिकल कोर से जुड़ी कुछ अहम जानकारी मुहैया कराने की बात उसने स्वीकार भी कर ली है। फिलहाल उससे खगौल थाना में पूछताछ हो रही है। सूत्रों के मुताबिक सेना का जवान गणेश प्रसाद (अस्थावां, नालंदा) पाकिस्तानी खुफिया एजेंसी आईएसआई की महिला एजेंट के संपर्क में था। जोधपुर में तैनाती के दौरान महिला ने उसे हनी ट्रैप में फंसाया। बताया जाता है कि उक्त महिला ने खुद को नौसेना का मेडिकल स्टॉफ बताकर गणेश से दोस्ती की।

रक्षा मंत्रालय की नई सूची से अगस्ता वेस्टलैंड गायब, 6 कंपनियां ब्लैक लिस्ट और 13 सस्पेंड

नई दिल्ली। कांग्रेस के अगस्ता वेस्टलैंड में भ्रष्टाचार के आरोपों के बाद भारतीय रक्षा मंत्रालय ने अनुबंध फर्मों की एक नई सूची जारी की है। जिनके साथ 12 नवंबर तक सौदे पर रोक लगा दी गई है या उन्हें रोक दिया गया है या निलंबित कर दिया गया है। इस नई सूची में 6 फर्मों को ब्लैकलिस्ट किया गया है जबकि 13 कंपनियों के साथ कारोबार रोक दिया है। रोचक बात ये है कि इस सूची में अगस्ता वेस्टलैंड का नाम नहीं है। रविवार को रक्षा मंत्रालय ने अनुबंध कंपनियों नई सूची जारी की। जिसमें छह कंपनियों को ब्लैकलिस्ट किया जबकि 13 अन्य कंपनियों को कारोबार के लिए सस्पेंड कर दिया है। ब्लैक लिस्ट कंपनियों में सिंगापुर टेक्नोलॉजीज काइनेटिक्स लिमिटेड (एसटीके), इजराइल मिलिट्री इंडस्ट्रीज लिमिटेड (आईएमआई), टीएस किसान एंड कंपनी प्राइवेट लिमिटेड, आरके मशीन टूल्स लिमिटेड (लुधियाना), राइनमेटल एयर डिफेंस (आरएडी), ज्यूरिख और कॉर्पोरेशन रक्षा (रूस) शामिल हैं। हालांकि, सूची में अगस्ता वेस्टलैंड और इसकी मूल फर्म लियोनार्डो का नाम नहीं है, जिसे पहले फिनमेकेनिका कहा जाता था। सरकार ने 2014 में भविष्य के सभी सैन्य अनुबंधों से लियोनार्डो (तब इसका नाम फिनमेकेनिका रखा गया) पर प्रतिबंध लगा दिया था।

इस बीच 13 फर्मों के साथ कारोबार सस्पेंड कर दिया गया है। इनमें आईडीएस, ट्यूनीशिया, इंफोटेक डिजाइन सिस्टम (आईडीएस) मॉरीशस, आईडीएस इंफोटेक लिमिटेड मोहाली, एरोमैट्रिक्स इंफो सॉल्यूशन प्राइवेट लिमिटेड चंडीगढ़, शांक्स ओशनियरिंग इंटर सिरो इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, इंटर सिरो इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, एक्सपर्ट सिस्टम्स, यूनिटेक एंटरप्राइजेज, केल्विन शामिल हैं। इंजीनियरिंग, एटलस ग्रुप ऑफ कंपनीज जिनमें एटलस टेलीकॉम और एटलस डिफेंस सर्विसेज, ऑफसेट इंडिया सॉल्यूशंस (पी) लिमिटेड और इसकी ग्रुप कंपनियां, पिलाटस एयरक्राफ्ट लिमिटेड स्विट्जरलैंड और वेक्ट्रा एडवांस्ड इंजीनियरिंग प्राइवेट लिमिटेड (वीएईपीएल) शामिल हैं।मंत्रालय के नई सूची से साफ है कि रॉल्स रॉयस और उसकी सहयोगी और सहायक कंपनियों और चेक गणराज्य की टाट्रा ट्रक नामक दो कंपनियों से खरीद को प्रतिबंधित कर दिया गया है। समाचार एजेंसी की एक रिपोर्ट के अनुसार मंत्रालय की नई अधिसूचना कांग्रेस पार्टी द्वारा फिनमेकेनिका से खरीद पर प्रतिबंध हटाने के बारे में सवाल उठाए जाने के बाद आई है। कांग्रेस पार्टी की ओर से सांसद राहुल गांधी ने सरकार पर निशाना साधते हुए ट्वीट किया था, इपहले अगस्ता भ्रष्ट थे, अब बीजेपी के कपड़े धोने के बाद साफ हो गए हैं।

असम पुलिस ने दो महिला पत्रकारों को हिरासत में लिया, त्रिपुरा में फेक न्यूज फैलाने का केस

गुवाहाटी। त्रिपुरा पुलिस के कहने पर असम पुलिस ने दो महिला पत्रकारों समृद्धि सकुनिया (21) और स्वर्णा झा (24) को हिरासत में लिया है। इनके खिलाफ त्रिपुरा के एक थाने में धार्मिक उन्माद पैदा करने के लिए फेक न्यूज फैलाने और आपराधिक साजिश का आरोप लगाते हुए केस दर्ज कराया गया है। इस बीच, एडिटर्स गिल्ड ने दोनों पत्रकारों को रिहा करने की मांग की है। कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने इसे पत्रकारिता की हत्या बताया है। पुलिस ने बताया कि दोनों युवतियों का दावा है कि वे पत्रकार हैं, हालांकि दोनों किसी भी मीडिया हाउस से जुड़ा उचित पहचान पत्र नहीं दिखा पाईं। इनमें से एक युवती ने खुद को ओडिशा के झारसुगुडा की और दूसरी ने दिल्ली की रोहिणी निवासी बताया है। इन्हें उस समय पकड़ा गया जब वे किराये के वाहन से गुवाहाटी जाने का प्रयास कर रही थीं।

पूर्वोत्तर में अशांति फैलाने की साजिश रच रहा है चीन? मणिपुर हमले के बाद फिर उठे सवाल

नई दिल्ली। मणिपुर में म्यांमार बॉर्डर के पास आतंकी हमले में शनिवार को 5 सैनिक शहीद हो गए। इनमें सेना के कर्नल के अलावा उनकी पत्नी और 8 साल का बेटा भी शामिल है। इस घातक हमले के बाद पूर्वोत्तर में विद्रोही गुटों को चीन की ओर से संभावित समर्थन ने फिर ध्यान खींचा है। चीन पर नजर रखने वालों और सुरक्षा अधिकारियों ने रविवार को कहा कि सीमा पर तनाव के बीच पड़ोसी क्षेत्र में अशांति फैलाने की साजिश रच सकता है। यह पहली बार नहीं है जब विद्रोही समूहों के साथ चीनी संबंध जांच के दायरे में आए हैं। बीजिंग की मिलीभगत को लेकर सवाल पहले भी उठे हैं। अक्टूबर 2020 में चीन की प्रोपेगेंडा मशीनरी ने ताइवान से व्यापार समझौते को लेकर भारत को धमकी दी थी कि बीजिंग पूर्वोत्तर में अलगाववादियों को समर्थन और सिक्किम को भारत के अंग के रूप में समर्थन देना बंद करके जवाब दे सकता है।

एक वरिष्ठ अधिकारी ने कहा, पूर्वोत्तर में चीन की ओर से विद्रोह को हवा देने की संभावना बरकरार है। मणिपुर सहित पूर्वोत्तर में विद्रोही गुटों जैसे अराकन आर्मी और म्यांमार में यूनाइटेड वी स्टेट आर्मी का सस्त्र गुटों से लिंक है, जिनके पास चीनी हथियार मौजूद हैं। एक थे। रेवोल्यूशनरी पीपल्स फ्रंट (पद्धफ) जिसके तहत लिब्रेशन आर्मी मणिपुर काम करता है, ने मणिपुर नागा पीपल्स

अन्य अधिकारी ने बताया कि चीन ने यूनाइटेड लिब्रेशन फ्रंट ऑफ असम (वछख्रक्ष) कमांर परेश बरूआ और नेशनल सोशलिस्ट ऑफ नागालैंड (क्ट) के फुंटिंग शिमरंग को सुरक्षित पनाहगाह दी है। शनिवार को मणिपुर के छुरछंदपुर जिले में आतंकी गुट ने असम राइफल्स के काफिले पर हमला किया, जब 46 असम राइफल्स के कमांडिंग ऑफिसर कर्नल विप्लव त्रिपाठी और उनकी क्विक रिएक्शन टीम (द्यख्र) बेहियांग सीमा चौकी से लौट रहे थे और खुगा में बटालियन मुख्यालय की ओर जा रहे फ्रंट के साथ हमले की जिम्मेदारी ली, लेकिन कहा कि उन्हें इस बात की जानकारी नहीं थी कि काफिले में परिवार के सदस्य भी शामिल हैं। 2017-18 में असम राइफल्स की अगुआई करने वाले लेफ्टिनेंट जनरल शौकिन चौहान (रिटायर्ड) ने कहा कि हो सकता है कि लाइन ऑफ एक्चुअल कंट्रोल (छअठ) पर मौजूदा हालात के तहत चीन ने पीएलए, मणिपुर के साथ संबंध दोबारा स्थापित किया हो। उन्होंने कहा कि यह पूर्वोत्तर में तबाही मचाने और सुरक्षा बलों को नुकसान पहुंचाने के लिए किया गया होगा।

बाबरी विध्वंस के बाद नरसिम्हा राव की बातों से चकित था हर कोई, सलमान खुर्शीद की किताब में दावा

नई दिल्ली। कांग्रेस के वरिष्ठ नेता सलमान खुर्शीद की किताब सनराइज ओवर अयोध्या: नेशनहुड इन आर टाइम्स में लिखा गया है कि 6 दिसंबर 1992 को बाबरी मस्जिद को गिराए जाने के बाद केंद्रीय मंत्रिपरिषद की बैठक हुई और जब मंत्रियों ने यह बताने की कोशिश की कि वे सभी तत्कालीन प्रधानमंत्री पीवी नरसिंह राव के लिए कैसा महसूस कर रहे हैं, तो राव बोले कि मुझे आपकी सहानुभूति नहीं चाहिये। कांग्रेस के वरिष्ठ नेता सलमान खुर्शीद की किताब इन दिनों चर्चा में है। इस किताब का नाम है- सनराइज ओवर अयोध्याः नेशनहुड इन आवर टाइम। इस किताब की चर्चा इसलिए भी है क्योंकि इसमें बाबरी विध्वंस कांड से लेकर अयोध्या में राम मंदिर की पूरी पटकथा है। इस किताब में आरएसएस की तुलना चरमपंथी संगठनों से करने पर खुर्शीद भगवाधारी लोगों के निशाने पर हैं। सलमान खुर्शीद ने अपनी किताब में लिखा है कि इस अकल्पनीय घटना ने धीरे-धीरे एक तरह सबको सन्न कर दिया। उन्होंने कहा कि

विध्वंस रविवार को हुआ और 7 दिसंबर की सुबह मंत्रिपरिषद के सदस्य संसद भवन के भूतल पर स्थित एक भीड़भाड़ वाले कमरे में एकत्र हुए। सभी उदास थे और सभा में सन्नाटा छाया हुआ था। खुर्शीद याद करते हैं, जाहिर है कि अधिकांश सदस्यों के पास शब्द नहीं थे, लेकिन माधवराव सिंधिया ने चुप्पी तोड़ते हुए बताया हम सभी प्रधानमंत्री नरसिंह राव के लिए कैसा महसूस कर रहे हैं। चिंतित प्रधानमंत्री की प्रतिक्रिया ने हमें आश्चर्यचकित कर दिया जब उन्होंने जवाब दिया मुझे आपकी सहानुभूति नहीं चाहिये। उनका यह भी कहना है कि राव की कठोर प्रतिक्रिया के बाद इस विषय पर फिर से चर्चा करने का कोई और अवसर नहीं बचा और बैठक समाप्त हो गई।

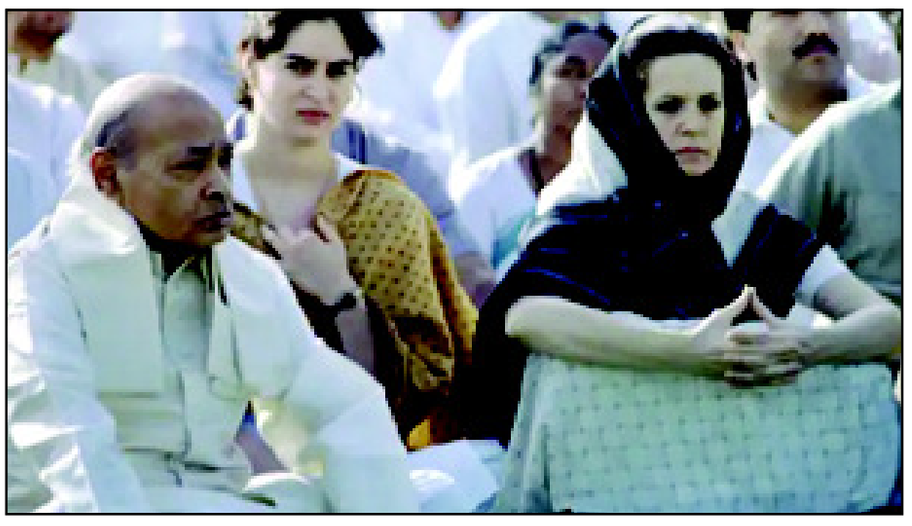

पूर्व विदेश मंत्री खुर्शीद कहते हैं कि कल्याण सिंह की उत्तर प्रदेश सरकार 6 दिसंबर को ही बर्खास्त हो चुकी थी और उसके एक हफ्ते बाद राष्ट्रपति द्वारा कैबिनेट की सलाह पर हिमाचल प्रदेश, राजस्थान और मध्य प्रदेश में भाजपा सरकारों को बर्खास्त किया गया था। खुर्शीद यह भी लिखते हैं कि 6 दिसंबर की रात को वह और कुछ अन्य युवा मंत्री राजेश पायलट के आवास पर एकत्र हुए और फिर एक साथ सी के जाफर शरीफ के पास गए। उन्होंने कहा कि प्रधान सचिव ए.एन. वर्मा को फोन किए गए, जिन्होंने सुझाव दिया कि हम प्रधानमंत्री से बात करें। हमने प्रधानमंत्री से संपर्क किया और उन्हें सुझाव दिया कि राजेश पायलट को उस समूह में शामिल किया जाए जो, फैजाबाद जाने वाला था।खुर्शीद ने लिखा कि राव ने बदले में हमें एएन वर्मा से फिर से बात करने के लिए कहा और इस तरह तब तक कुछ देर के लिये असमंजस जारी रहा, जब तक हमें बताया गया कि प्रधानमंत्री उपलब्ध नहीं होंगे। उस रात (बाबरी विध्वंस की रात) कुछ नहीं हो सका।

खुर्शीद ने लिखा, उस समय सरकार के एक वरिष्ठ पदाधिकारी के लिये इस बात की सबसे अधिक जरूरत थी कि मस्जिद के विध्वंस के दौरान स्थानांतरित की गई मूर्तियों को स्थल पर फिर से स्थापित करने से पहले इस मामले में हस्तक्षेप करें।

इतनी जल्दबाजी क्यों? सीबीआई और ईडी डायरेक्टर्स का कार्यकाल बढ़ाने पर विपक्ष ने मोदी सरकार से पूछा सवाल

नई दिल्ली। केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो (सीबीआई) और प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) के निदेशकों का कार्यकाल बढ़ाने पर विपक्षी दलों तृणमूल कांग्रेस और माकपा ने रविवार को केंद्र सरकार पर निशाना साधा और पूछा कि वह संसद सत्र तक इंतजार क्यों नहीं कर सकती। सरकार ने रविवार को दो अध्यादेश जारी किए, जिनके अनुसार सीबीआई और ईडी के निदेशकों का कार्यकाल मौजूदा दो वर्ष की जगह अब अधिकतम पांच साल तक हो सकता है। संसद सत्र 29 नवंबर से शुरू होगा। माकपा महासचिव सीताराम येचुरी ने एक ट्वीट में कहा, केंद्र ने छानबीन से बचने के लिए रविवार को सीबीआई और ईडी निदेशकों का कार्यकाल बढ़ाने के लिए अध्यादेश जारी कर दिये। इतनी हड़बड़ी से कुछ गड़बड़ लगता है।

दिल्ली : आजादपुर के मकान में रसोई गैस सिलेंडर फटने से 17 घायल, पांच घर गिरे

नई दिल्ली। दिल्ली के आजादपुर स्थित लाल बाग इलाके में एक घर में रविवार को रसोई गैस सिलेंडर फटने से 17 लोग घायल हो गए। विस्फोट के कारण पांच घर भी क्षतिग्रस्त हो गए।

हालांकि, अब तक किसी की मौत की सूचना नहीं है। दमकल विभाग ने बताया कि सुबह करीब 10 बजे आग लगने की सूचना मिली थी। आग की सूचना मिलते ही मौके पर पहुंचीं दमकल की चार गाड़ियों ने कड़ी मशक्कत के बाद आग पर काबू पाया। दिल्ली फायर सर्विस के डायरेक्टर अतुल गर्ग ने कहा कि हमें मिली कॉल के अनुसार,

हमने दमकल की तीन गाड़ियां मौके पर भेजीं और पाया कि 25 गज में बनी एक झुग्गी में एलपीजी सिलेंडर में विस्फोट हुआ था, जिसके कारण शुरू में हमें बताया गया कि पांच लोग झुलस गए थे। डीसीपी (उत्तर-पश्चिम) उषा रंगनानी ने कहा कि आदर्श नगर थाने में सुबह करीब 10.08 बजे एक पीसीआर कॉल आई थी, जिसमें आजादपुर की लालबाग मस्जिदके पास एक घर में सिलेंडर फटने से आग लगने की घटना हुई थी, जिसमें पांच लोग घायल हो गए थे। हालांकि, मौके पर पहुंचने पर पता चला कि 17 लोग आग में झुलस गए थे और उन्हें अस्पताल ले जाया गया। इनमें से 16 लोगों को मामूली चोटें आई और उन्हें बाबू जगजीवन राम अस्पताल ले जाया गया, जबकि एक व्यक्ति को आरएमएल अस्पताल में भर्ती कराया गया। पुलिस ने बताया कि इस घटना में किसी के मारे जाने की खबर नहीं है।

नेहरू की जयंती पर संसद नहीं आए स्पीकर, राज्यसभा चेयरमैन, कांग्रेस ने जताई नाखुशी

नई दिल्ली। कांग्रेस के नेताओं का कहना है कि हर साल संसद में पंडित जवाहर लाल नेहरू की जयंती पर पारंपरिक कार्यक्रम का आयोजन किया जाता है लेकिन इस बार न तो लोकसभा स्पीकर ओम बिरला ने इसमें शिरकत की और न ही राज्यसभा चेयरमैन वेंकैया नायडू ही पहुंचे। कांग्रेस पार्टी ने नेताओं के कार्यक्रम में शामिल न होने को लेकर नाखुशी जाहिर की है। 14 नवंबर को देश के पहले पीएम पंडित जवाहरलाल नेहरू की जयंती होती है और हर साल संसद के सेंट्रल हॉल में लगी उनकी तस्वीर के आगे पुष्पांजलि अर्पित की जाती है।

केंद्रीय मंत्रियों और दिग्गज बीजेपी नेताओं के कार्यक्रम में न आने पर कांग्रेस नेता जयराम रमेश ने ट्विटर पर नाखुशी जाहिर की और लिखा, आज संसद के सेंट्रल हॉल में जिनकी तस्वीर लगी है, उनके लिए आयोजित पारंपरिक समारोह में असाधारण दृश्य देखने को मिला। लोकसभा के स्पीकर अनुपस्थित थे। राज्यसभा के चेयरमैन अनुपस्थित थे। एक भी मंत्री मौजूद नहीं थे। क्या यह इससे भी बुरा हो सकता है? बता दें कि आज सुबह संसद में हुए इस कार्यक्रम में लघु, सूक्ष्म और मध्यम उद्योग राज्य मंत्री भानू प्रताप सिंह वर्मा पहुंचे थे। उनके अलावा राज्यसभा में नेता विपक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे, कांग्रेस चीफ सोनिया गांधी और अन्य कई सांसद भी संसद पहुंचे थे।

लंदन के लीवरपूल अस्पताल के बाहर कार में धमाका, एक की मौत

नईदिल्ली, एजेंसी। लंदन के लीवरपूल स्थित महिला अस्पताल के बाहर एक कार में धमाका हो गया। इस घटना में एक शख्स की मौत हो गई। पुलिस अधिकारियों ने इस विस्फोट के पीछे किसी आतंकवादी हमले की घटना से इन्कार किया है। हालांकि आतंकवाद विरोधी अधिकारी इस घटना की जांच कर रहे हैं। लंदन की मर्सीसाइड पुलिस के मुताबिक, रविवार को उत्तरी इंग्लैंड के लिवरपूल में महिला अस्पताल के बाहर एक वाहन विस्फोट में एक व्यक्ति की मौत हो गई और एक अन्य घायल हो गया। पुलिस ने कहा कि आतंकवाद विरोधी अधिकारी जांच का नेतृत्व कर रहे हैं। पुलिस ने एक बयान में कहा

कि जानकारी के मुताबिक, धमाके वाली कार एक टैक्सी थी जो विस्फोट होने से कुछ समय पहले अस्पताल में पहुंची थी।पुलिस अधिकारियों का कहना है कि वे विस्फोट के कारण को लेकर अभी पूरी तरह से कंफर्म नहीं है। फिलहाल मामले की जांच काउंटर टेररिज्म पुलिस मर्सीसाइड पुलिस द्वारा की जा रही है। पुलिस ने अपने बयान में ये भी कहा है कि अभी इस विस्फोट को आतंकवादी घटना घोषित नहीं किया जा सकता है।

नेपालः तालाब में गिरी कार, बिहार के 4 लोगों की चली गई जान

काठमांडू। दक्षिणी नेपाल में भारत से सटे इलाके रौतहट में एक वाहन के तालाब में गिर जाने से 4 भारतीयों की मौत हो गई। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, पुलिस सूत्रों का कहना है कि वाहन का चालक और इसमें सवार लोग संभवतः नशे में थे। रौतहट जिले के एसपी विनोद घिमिरे ने हिमालयन टाइम्स को बताया कि मारे गए सभी लोग बिहार के रहने वाले थे, जिनकी पहचान दिनानाथ साह (25), अरुण साह (30), दिलीप महतो (28) और अमित महतो (27) के रूप में हुई है। यमुनामई ग्रामीण नगर निगम के तहत गौर-चंद्रपुर रोड पर चाक ने वाहन से नियंत्रण खो दिया और कार तालाब में जा गिरी।

सुरक्षाकर्मियों ने कार विंडशील्ड को तोड़कर लोगों को निकालने की कोशिश की लेकिन तब तक सभी की मौत हो चुकी थी। इनके पास मिले आधार कार्ड से इनकी पहचान हुई। पुलिस ने बिहार में संबंधित पुलिस से संपर्क किया है।

भारत के हस्तक्षेप के बाद कोयले के इस्तेमाल घटाने के साथ जलवायु समझौते को मंजूरी

ग्लासगो। कोयले के इस्तेमाल को कम करने के लक्ष्यों के साथ ग्लासगो जलवायु समझौते को मंजूरी प्रदान कर दी गई है। शनिवार देर रात तक चली बैठक के बाद जलवायु वार्ता के अंतिम मसौदे को मंजूरी प्रदान की गई। इसमें सबसे बड़ी बात यह रही है कि भारत ने विकासशील देशों का नेतृत्व करते हुए कोयले के इस्तेमाल को खत्म करने और जीवाश्म ईंधन सब्सिडी हटाने के प्रस्ताव का विरोध किया। काप ने अंतिम समय में भारत द्वारा उठाए गए मुद्दों को समझौते में शामिल किया गया। भारत के पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्री भूपेन्द्र यादव ने तीसरे मसौदे पर हुई चर्चा में भाग लेते हुए कहा कि विकासशील देश कैसे कोयले के इस्तेमाल को बंद कर सकते हैं, क्योंकि अभी उन्हें अभी बहुत विकास करना है। दूसरे, भारत जैसे देश के लिए जीवाश्म ईंधन पर लक्षित सब्सिडी को खत्म करना मुश्किल होगा जो गरीब लोगों को प्रदान की जा रही है ताकि वह प्रदूषण फैलाने वाले चूल्हे की बजाय स्वच्छ रसोई गैस का इस्तेमाल कर सकें। भारत ने इससे पूर्व इस मुद्दे पर चीन, यूरोप, अमेरिका और कई अन्य देशों के प्रतिनिधियों के साथ बातचीत की और इस मुद्दे को काप अध्यक्ष के समक्ष उठाया।

स्विटजरलैंड समेत कई देशों ने कोयले के इस्तेमाल को खत्म करने के प्रस्ताव को जारी रखने की बात भी कही लेकिन अंतत भारत के रुख को आखिर में स्वीकार किया गया। इसलिए ग्लासगो जलवायु समझौते में कोयले का इस्तेमाल बंद करने की बजाय कम करने की बात कही गई है। यह भारत और विकासशील देशों के लिए बड़ी उपलब्धि रही कि वे एक बाध्यकारी प्रावधान को लचीला बनाने में सफल रहे। समझौते में जीवाश्म ईंधन पर सब्सिडी खत्म करने का जिक्र नहीं है। यानी उस मुद्दे को भी हटा दिया गया है।

जलवायु समझौते में दो और मुद्दों पर फोकस किया गया है। सभी देशों को अब पहले की तुलना में अपने उत्सर्जन में ज्यादा कटौती करनी होगी। जिन देशों ने नये लक्ष्य घोषित नहीं किए हैं, उन्हें एक साल के भीतर यह करना होगा। नेट जीरो को लेकर भी 2022 तक अपनी प्रतिबद्धताएं प्रकट करनी होंगी। इसके अलावा इस बात पर भी जोर दिया गया है कि विकसित देश 2021-25 तक प्रतिवर्ष 100 अरब डालर की राशि विकसित देश सुनिश्चित करें ताकि इसे गरीब एवं विकासशील देशों को प्रदान किया जा सके। 2025 के बाद इस राशि को बढ़ाने पर जोर दिया गया है। हालांकि इसका जिक्र प्रस्ताव में नहीं है लेकिन काप अध्यक्ष आलोक शर्मा इसके लिए 500 अरब डालर की राशि के पक्ष में हैं।

अखंड भारत संदेश के लिए स्वामी श्री योगी सत्यम क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान संस्थान झूंसी, प्रयागराज 211019 से प्रकाशित एवं रामा प्रिंटिंग प्रेस 53/25/1ए बेली रोड नया कटरा प्रयागराज से मुद्रित।

मुद्रक/प्रकाशक

स्वामी श्री योगी सत्यम

पी.आर.बी. एक्ट के अन्तर्गत समाचारों के चयन के लिए उत्तरदायी। इस समाचार पत्र में प्रकाशित समस्त समाचारों से संबंधित विवादों का न्याय क्षेत्र प्रयागराज होगा। आरएनआई नं.

UPHIN 2001/9025